

अय्यूब

अय्यूब एक ईमानदार मनई

1 ऊज नाउँ क प्रदेस में एक तु मनई रहा करत रहा। ओकर नाउँ अय्यूब रहा। अय्यूब एक बहोत ईमानदार अउ बिस्सासी मनई रहा। अय्यूब परमेस्सर क उपासना करत रहत रहा अउ बुराई स दूर रहा करत रहा। 2ओकरे सात तु बेटहना अउ तीन तु बिटिहनी रहिन।

3अय्यूब सात हजार भेड़िन, तीन हजार ऊँटन, एक हजार बर्धन अउ पाँच सौ गदहियन क सुआमी रहा। ओकरे लगे बहोत स नौकर रहेन। अय्यूब पूरब क सब स जियादा धन्नासेठ में स एक रहा।

4अय्यूब क बेटहनन बारी-बारी स आपन घरन में एक दूसर क खइया क खाइ बरे बोलावा करत रहेन। उ पचे आपन बहिनियन क भी हुआँ ओकरे खाइ अउ पिइ बरे बोलात रहेन। 5अय्यूब क गदेलन जब भोज खाइ चुकतेन, तउ अय्यूब तड़के भिन्सारे उठत अउ आपन हर गदेलन क बदले होमबलि अर्पित करत रहा। काहेकि उ सोचत, “होइ सकत ह, मोर गदेलन आपन हिरदइ में परमेस्सर क निन्दा कइ के पाप किहे रहेन।” एह बरे अय्यूब हमेसा अइसा करत रहत रहा।

6फिन सरगदूतन बरे यहोवा क रिपोर्ट देइ क दिन आवा। सइतान भी ओनकर संग आवा।

7यहोवा सइतान स कहेस, “तू कहाँ रहया?”

सइतान जवाब देत भए यहोवा स कहेस, “मई धरती पइ एहर ओहर घूमत रहेउँ।”

8एह पइ यहोवा सइतान स कहेस, “का तू मोर सेवक अय्यूब क लख्या? इ धरती पइ ओकरे तरह कउनो दूसर मनई नाहीं अहइ। अय्यूब एक तु ईमानदार अउ बिस्सासी मनई अहइ। उ हमेसा परमेस्सर क आराधना करत ह अउर बुराई स सदा दूर रहत ह।”

9सइतान जवाब दिहस, “निहचय ही! मुला अय्यूब परमेस्सर क एक खास कारण स आराधना करत ह! 10तू सदा ओकर, ओकरे घराने क अउर जउन कछू ओकरे लगे अहइ ओकर रच्छा करत ह। जउन कछू उ करत ह तू ओका सफल बनावत ह। हौं, तू ओका बहोत सारा जनावरन झुण्ड अउर रेवड़ पूरे देस में फइलावइ बरे दिहस ह। 11मुला जउन कछू ओकरे लगे अहइ उ सब कछू क अगर तू बर्बाद कइ द्या तउ मई तोहका बिस्सास दियावत हउँ कि उ तोहरे मुँहे पइ तोहरे बिरुद्ध बोलइ लागी।”

12यहोवा सइतान स कहेस, “अगर अइसा अहइ, अय्यूब क लगे जउन कछू अहइ ओकरे संग जइसा तू चाहत ह, करा। मुला ओकरे देह का चोट न पहुँचावा।”

ओकरे पाछे सइतान यहोवा क लगे स चला गवा।

अय्यूब क सब कछू जात रहा

13एक दिन, अय्यूब क पूत अउ बिटियन आपन सब स बड़का भइया क घर खइया क खात रहेन अउ दाखरस पिअत रहेन। 14ठीक तबहिं अय्यूब क लगे एक तु संदेसवाहक आवा अउ ओका बोला, “जब बर्धा हर जोतत रहेन अउर गदहन मइदान चरत रहेन, 15कि सबा* क लोग हम पचन पइ धावा बोल दिहन अउ तोहरे गोरुअन क लइ गएन। मोका तजिके तोहार सबहिं दासन क सबा क लोग मार डालेन। आप क इ खबर देइ बरे मई बचिके पराइ निकरि आवा हउँ।”

16अबहिं उ संदेसवाहक कछू कहत ही रहा कि अय्यूब क लगे दूसर संदेसवाहक आवा। दूसर संदेसवाहक कहेस, “अकासे स बिजुरी गिरी अउ आप क भेड़िन अउ दास जरिके राखी होइ गएन है। आप क खबर देइ बरे मई ही बचिके निकरि पावा हउँ।”

17अबहिं उ संदेसवाहक आपन बात कहत ही रहा कि एक तु अउर संदेसवाहक आइ गवा। इ तीसर संदेसवाहक कहेस, “कसदी क लोग तीन टोलियन क पठाए रहेन, जउन हम पइ हमला बोल दिहन अउर उ पचे सेवकन क मारि डई क पाछे ऊँटन क छीन लइ गएन। आपक खबर देइ बरे सिरिफ मई ही बचिके निकरि पाएउँ ह।”

18इ तीसर दूत अबहिं बोलत ही रहा कि एक अउर संदेसवाहक आइ गवा। इ चउथा संदेसवाहक कहेस, “आप क बेटवन अउ बिटियन सब स बड़का भाई क घर खइया क खात रहेन अउ दाखरस पिअत रहेन। 19ठीक तबहिं रेगिस्तान स एका-एक एक तु तेज आँधी उठी अउर उ मकान क उड़इके ढहाइ दिहस। मकान आप क पूतन, अउ बिटियन क ऊपर आइ पड़ा अउर उ पचे मरि गएन। आप क खबर देइ बरे सिरिफ मई ही बचिके निकरि पावा हउँ।”

20अय्यूब जब इ सुनेस तउ उ आपन ओढ़ना फारि डालेस अउर इ देखावइ बरे उ दुःखी अउर वियाकुल अहइ, उ आपन मूँह मुड़ाइ लिहस। अय्यूब तब धरती पइ गिरिके दण्डवत किहस। 21उ कहेस:

“मोर जब इ संसारे क बीच जनम भवा रहा, मई तब नंगा रहेउँ, मोरे लगे तब कछू भी नाहीं रहा। जब मई मरब अउ इ संसारे क तजब, मई नंगा होब अउर मोरे लगे कछू न होइ। यहोवा ही देत ह अउर यहोवा ही लेत, यहोवा क नाउँ क बड़कई करा।”

22जब इ सबहिं कछू घटना घटत रहा, अय्यूब न ही कउनो पाप किहस अउर न ही परमेस्सर क दोख दिहस।

सबा रेगिस्तान क लोगन क एक समूह। उ पचे लोगन पइ हमला कइके ओनकर धन दौलत छूट लेत रहेन।

सइतान फुन अय्यूब क दुःख देत ह

2 फुन एक दिन, यहोवा स मिलइ बरे सरग दूत आपन। सइतान भी ओनके संग रहा। सइतान यहोवा स मिलइ आवा रहा। 2यहोवा सइतान स पूछेस, “तू कहीं रह्या”

सइतान यहोवा क जवाब दिहेस, “मई धरती पइ एहर-ओहर घूमत रहेई।”

3एह पइ यहोवा सइतान स पूछेस, “का तू मोर सेवक अय्यूब पइ धियान देत रहत अहा? ओकर जइसा धरती पइ कउनो नाहीं अहइ। अय्यूब ईमानदार अउ बिस्सासी मनई अहइ। उ हमेसा परमेस्सर क उपासना करत ह, बुराई स दूर रहत ह। उ अबहुँ भी ईमानदारी राखत ह हालाँकि तू मोका प्रेरित किहे रह्या कि मई बिना कारण ही ओका नस्ट कइ देई।”

4सइतान जवाब दिहेस, “खाल क बदले खाल! कउनो मनई जिअत रहइ बरे, जउन कछू ओकरे लगे अहइ, सब कछू दइ डावत ह। 5यह बरे अगर तू आपन सक्ती क प्रयोग ओकरे देह क नोस्कान पहोंचावइ बरे करा, तउ उ सीधा ही तोहका कोसइ लागी।”

6तउ यहोवा सइतान स कहेस, “अगर अइसा अहइ, तउ मई अय्यूब क तोहार हवाले करत हउँ, मुला तोहका ओका मार डावइ क छूट नाहीं अहइ।”

7ओकरे पाछे सइतान यहोवा क लगे स चला गवा। उ अय्यूब क दुःख देइवाला फोइन क दइ दिहेस। इ सबइ पीरा देइवाला फोइन ओकरे गोड़े क तलवा स लइके ओकरे मूँडे क ऊपर तलक देह मँ फइल गएन। 8तउ अय्यूब कूड़ा क ढेरी क लगे बइठ गवा। ओकरे लगे एक ठु ठीकरा रहा, जेहसे उ आपन पीरा दायक फोइन क खजुआवा करत रहा। 9अय्यूब क पत्नी ओसे कहेस, “का तू अबहुँ तलक ईमानदार रहइ चाहत ही? तू परमेस्सर क कोसिके मर काहे नाहीं जात्या।”

10अय्यूब जवाब देत भए आपन पत्नी स कहेस, “तू तउ एक मूसख मेहरारू क तरह बातन करति अहा। देखा, जब परमेस्सर उत्तिम वस्तुअन क देत ह, हम ओनका अंगीकार कइ लेइत ह। तउ हमका दुःख क भी अपनावइ चाही अउ सिकाइत नाहीं करइ चाही।” इ समूचइ दुःखे मँ भी अय्यूब कउनो पाप नाहीं किहेस। परमेस्सर क खिलाफ उ कछू नाहीं बोला।

अय्यूब क तीन मीतन क ओसे भेटइ आउब

11अय्यूब क तीन मित्र रहेन: तेमानी क एलीपज, सूही क बिलदद अउर नामाती क सोपर। एँन तीनहुँ मीतन अय्यूब क संग जउन बुरी घटना भइ रहिन, ओन सबन क बारे मँ सुनेन। एँन तीनहुँ मीत आपन-आपन घर तजिके आपुस मँ एक दूसर स भेटेन। उ पचे इ निहचय किहेन कि उ पचे अय्यूब क लगे जाइके ओकरे बरे सहानुभूति परगट करइ अउ ओकर हिम्मत बँधावई। 12जब इ तीनहुँ मीत दूर स अय्यूब क लखेन, तउ उ पचे ओका बहोत मुस्किल स पहिचान पाएन। उ पचे भोंकारा मारिके रोवइ लागेन। उ पचे आपन ओढ़ना फाड़ि डापेन। आपन दुःख अउ आपन बेचैनी देखावइ बरे उ पचे आपन आपन मूँडन पइ माटी डापेन।

13फुन उ सबइ तीनहुँ मीत अय्यूब क संग सात दिन अउ सात रात तलक भुईया पइ बइठा रहेन। अय्यूब स कउनो एक सब्द तलक नाहीं कहेस काहेकि उ पचे लखत रहेन कि अय्यूब भयानक पीरा मँ रहा।

अय्यूब क उ दिना क कोसब जब उ जन्मा रहा

3 तब अय्यूब आपन मुँह खोलेस अउर उ दिन क कोसइ लाग जब उ पइद भवा रहा। 2-3उ कहेस:

“जउने दिन मई पइद भवा रहेई, बर्बाद होइ चाही रहा। उ राति कबहुँ न आई होइ चाही जब उ पचे कहे रहेन कि ‘एक ठु लरिका पइद भवा अहइ।’

4उ दिन अँधियारा स भरा जाइ चाही रहा। परमेस्सर उ दिन क बिसारि जात चाही रहा। उ दिन प्रकास न चमका चाही रहा।

5उ दिन अँधियारा स पूर्ण बना होत चाही रहा जेतना कि मउत अहइ। बादर उ दिन क घेरे रहतेन चाही रहा। जउनो दिन मई पइद भवा करिया बादर प्रकास क डेरवाइ क खदेर देतेन चाही रहा।

6उ राति क गहिर अँधियारा जकरि लेइ, उ राति क गनती न होइ। उ राति क कउनो महीना मँ सामिल जिन करा।

7उ राति कछू भी पइद न करइ। कउनो भी आनन्द क ध्वनि उ राति क सुनाई न देइ।

8सराप देइ मँ माहिर मनइयन क उ मनइयन क साथ जउन लिब्यातान* क जगवाइ मँ सामर्थ अहइ, क उ दिना क सराप देइ द्या जउन दिना मई पइद भाएई।

9उ दिन क सौँझ तारा करिया पइ जाइ द्या। उ रात भिन्सारे क रोसनी बरे तरसइ अउर उ प्रकास कबहुँ न आवइ द्या। उ सूरज क पहिली किस्न न लखि सकइ।

10काहेकि उ रात मोका पइद होइ स नाहीं रोकेस। उ रात मोका इ सबइ कस्ट झेलेइ स नाहीं रोकेस।

11मई काहे नाहीं मरि गएई जब मई पइद भवा रहेई? जन्म क समइ ही मई काहे नाहीं मरि के बाहर आए रहेई?

12काहे मोर महतारी गोदी मँ मोका राखेस? काहे मोर महतारी क छातियन मोका दूध पियाएन।

13अगर मई तबहिँ मरि गवा होतेई जब मई पइद भवा रहेई तउ अब मई सान्ति स होतेई। अगर अइसा होतेन मई सोवत रहतेई अउर आराम पउतेई।

14राजा लोगन अउ बुद्धिमान मनइयन क संग जउन पृथ्वी पइ पहिले रहेन। ओन लोग आपन बरे ठउर जगह बनाएन, जउन अब नस्ट होइके मिट चुका अहई।

15मोका ओन सासक लोगन क संग दफनावा जात रहतेई जउन सोना-चाँदी स आपन घर भरे होतेन।

16मई गर्भपात मँ ही मरि जात रहतेई। मई दिन क प्रकास नाही देखि रहतेई।

लिब्यातान होइ सकत ह इ एक ठु भारि भरकम समुद्री दोत्य रहा। पुराने जमाने क साहित्य क अनुसार, परमेस्सर लिब्यातान क खिलाफ लइत रहेन अउर एका सर्जन क सुरू मँ ही हराए दिहेन। लोग सोचत रहेन कि जादू एकर मदद स सुर्य ग्रहन पइद करत रहेन।

17दुःख जन दुःख देब तब तजि देत हीं जब उ पचे कब्र में होत हीं अउर थके लोग कब्र में आराम पावत हीं।

18हिआँ तलक कि बंदी भी सुख स कब्र में रहत हीं। हुआँ उ पचे आपन अत्याचारियन क आवाज नाहीं सुनत हीं।

19हर तरह क लोग कब्र में रहत हीं चाहे उ पचे महत्व नामा होई या साधारण। हुआँ दस आपन सुआमी स छुटकारा पावत ह।

20अइसे मनई क प्रकास काहे देत रहा जउन दुःख झेल रहा ह? अइसे मनइ क काहे जिन्नगी देत रहा ह जेकर जिन्नगी कडुवापन स भर रहत ह?

21अइसा मनई मनइ चाहत ह मुला ओकर मउत नाहीं आवत। अइसा दुःखी मनई मउत पावइ क उहइ तरह तरस्त ह जइसे कउनो छुपे खजाना बरे।

22अइसे मनइयन कब्र पाइके खुस होत हीं अउर आनंद मनावत हीं।

23परमेस्सर ओनसे ओनकर भविस्स छिपाए राखत ह अउर ओनकर चारिहुँ कइँती सुरच्छा बरे देवार खड़ी करत ह।

24मोर गहरी उदासी मोर बरे रोटी बन गवा ह। मोर विलाप जल धारा क तरह बाहेर फूट पड़त ह।

25मई जउने डेराउनी बात स डेरात रहेउँ कि कहुँ उहइ मोरे संग न घटि जाइ अहइ मोरे संग घटि गइ। अउर जउने बाते स मई सबन त जियादा डरेउँ, उहइ मोरे संग होइ गइ।

26न ही मई सान्त होइ सकत हउँ, न ही मई आराम कइ सकत हउँ। मई बहोत ही विपत्ति में हउँ।”

एलीपज क कथन

4 1-2तब तेमान क एलीपज जवाब दिहस: “अगर मई तोहका कउनो राय देउँ तउ का तू नाराज़ होब्या? अगर अइसा अहइ तउ भी मोका बोलइ चाही।

3“हे अय्यूब, तू बहोत स लोगन क सिच्छा दिहा अउर दुर्बल हाथन क तू सक्ती दिहा।

4जउन लोग लड़खड़ात रहत रहेन तोहार सब्दन ओनका हिम्मत बँधाए रहेन तू निर्बल गोइन क आपन उत्साह स सबल किहा।

5मुला अब तोह पइ विपत्ति क पहाड़ टूट पड़ बाटइ अउर तोहार हिम्मत टूट गइ अहइ। विपदा क मार तोह पइ पड़ी अउर तू ब्याकुल होइ उट्या।

6तोहका उ परमेस्सर पइ बिस्सास करइ चाही जेका तू उपासना करत ह। आपन ईमानदारी क आपन आसा बनने द्या।

7अय्यूब, इ बात क याद राखा कि कउनो भी निर्दोष कबहुँ नाहीं नस्ट कीन्ह गएन। नीक मनई कबहुँ नाहीं तबाह कीन्ह गवा अहइ।

8मई अइसे लोगन क लखेउँ ह जउन कस्टन क बढ़ावत हीं अउर जउन जिन्नगी क कठिन करत हीं। मुला उ पचे सदा ही दण्ड भोगत हीं।

9परमेस्सर क दण्ड ओन लोगन क मारि डवत ह, अउर ओकर किरोध ओनका नस्ट करत ह।

10दुर्जन सेर क तरह गुरीत अउ दहाड़त हीं। मुला परमेस्सर ओन दुर्जनन क चुप करावत ह।

11बुरे लोग ओन सेरन क तरह होत हीं जेनके लगे सिकार बरे कछू नाहीं होत। उ पचे मरि जात हीं अउर ओनकर गदेलन एहर-ओहर बिखराइ जात हीं।

12मोरे लगे एक सँदिसा चुपचाप पहुँचावा गवा, अउर मोरे काने में ओकर भनक पड़ी।

13जउने तरह राति क बुरा सपना नींद क उड़ाइ देत ह,

14मई डेराइ गएउँ अउ काँपइ लागेउँ। मोर सबइ हड्डियन हिल गइन।

15मोरे समन्वा स एक आतिमा जइसी गुजरी जेहसे मोरे बदन में रोंगटा खड़ा होइ गएन।

16उ आतिमा मोर समन्वा उठेस, मुला मई एका नाहीं पहिचान सकउँ। मोरी आँखिन क समन्वा एक सरूप खड़ा रहा। हुवाँ सन्नाटा स छावा रहा। फुन मई एक बहोत स सान्त आवाज सुनेउँ। उ पचे कहेस,

17“का एक मनई परमेस्सर क समन्वा दोखरहित होइ सकत ह? का एक मनई आपन सृजनहार स जियादा सुद्ध होइ सकत ह?

18परमेस्सर आपन सरग क सेवकन तक पइ भरोसा नाहीं कइ सकत। परमेस्सर क आपन दूतन तलक में देख मिलि जात हीं।

19तउ मनई तउ अउर भी जियादा गवा गुजरा बा। मनई तउ कच्ची माटा क घरौदा में रहत हीं। एँन माटी क घरौदन क नींव धूरि में रखी गइ अहइ। इ सबइ लोगन क ओहसे भी जियादा आसानी स मसलिके मार दीन्ह जात ह, जउने तरह भुनगन मसलिके मार दीन्ह जात ह।

20लोग भोर स सौँझ क बीच में मर जात हीं मुला ओन पइ कउनो धियान तलक नाहीं देत ह। उ पचे मरि जात हीं अउर सदा बरे चला जात हीं।

21ओनके तम्बूअन क खूँटी उखाड़ दीन्ह जात हीं अउर इ सबइ लोग बिना बुद्धि क मरि जात हीं।”

5 “अय्यूब, अगर तू चाहा तउ पुकारिके लखि ल्या मुला तोहका कउनो भी जवाब नाहीं देइ। तू कउनो भी सरगादूत कइँती मुड़ नाहीं सकत ह।

2मूरख क किरोध उहइ क नास कइ देइ। मूरख मनई क ईर्सिया ओका ही मरि डइहीं।

3मई एक मूरख क लखे रहेउँ जउन सोचत रहा कि उ सुरच्छित बाटइ। जेकर घर एका-एक सरापित कइ दीन्ह ग रहा।*

4अइसे मूरख मनई क सन्तानन क कउनो भी मदद नाहीं कइ सका। कचहरी में ओनका बचइया कउनो नाहीं रहा।

5ओकरी फसल क भूखे लोग खाइ गएन। हिआँ तलक कि भूखे लोग काँटन क झाड़ियन क बीच जमा भवा अन्न क उठाइ लइ गएन। जउन कछू भी ओन लोगन क लगे रहा उ सबइ चिजियन क लालची मनइयन उठाइके लइ गएन।

6मुसीबत माटी स नाहीं निकरत ह, न ही विपत्ति मैदान में जामत ह।

जेकर ... रहा या मुला मई ओकरे घरे क एका-एक सरापेतउँ।

7मनई क जन्म दुःख भोगइ बरे भवा ह। इ ओतना ही फुरइ अहइ जेतना फुरइ अहइ कि आगी स चिनगारी ऊपर उठत ह।

8मुला अथर्व, अगर तोहरी जगह मईं होतेउँ तउ मईं परमेस्सर क लगे जाइके आपन दुःखड़ा कहितेउँ अउर ओकरे लगे राय माँगतेउँ।

9परमेस्सर क कारनामा समुझइ मँ बहोत अद्भुत अहईं। परमेस्सर क अजूबा गना नाही जाईं।

10परमेस्सर धरती पइ बर्खा क पठवत ह, अउर उहइ खेतन मँ पानी पठवा करत ह।

11परमेस्सर विनम्र लोगन क ऊपर उठावत ह। उ ओका ऊपर उठाइके दुःखी क धन क बचावत ह।

12परमेस्सर चालाक अउ दुदुठ लोगन क कुचाल क रोक देत ह। एह बरे ओनका सफलता नाही मिला करत।

13परमेस्सर चतुर क उहइ क चतुराइ भरी योजना मँ पकरि लेत ह। एह बरे ओनकर चतुराइ भरी सबइ योजना असफल होतिन।

14उ सबइ चालाक लोग दिन क प्रकास अँन्धियारा क नाई होइ गवा। हिआँ तलक कि दुपहर मँ भी उ पचे आधी-रात क जइसा ठेकर खात ही।

15परमेस्सर दीन मनई क मउत स बचावत ह अउर ओनका सक्तीसाली चतुर लोगन क सक्ती स बचावत ह।

16एह बरे दीन मनई क भरोसा अहइ कि परमेस्सर इ होइ क निआव नाही करब।

17उ मनई भाग्यवान अहइ, जेकर परमेस्सर सुधार करत ह एह बरे जब सर्व सक्तीसाली परमेस्सर तू पचन्क सजा देत होइ तउ तू आपन दुःखड़ा जिन रोआ।

18परमेस्सर ओन घावन पइ पट्टी बाँधत ह जेनका उ दिहस ह। उ चोट पहोंचावत ह मुला ओकर ही हाथ चंगा भी करत हीं।

19उ तोहका छः विपत्तियन स बचावा। हा! सात विपत्तियन मँ तोहका कउनो नोस्कान न होइ।

20अकाल क समइ परमेस्सर तोहका मउत स बचाइ अउर परमेस्सर जुद्ध मँ तोहार मउत स रच्छा करी।

21जब लोग आपन कठोर सब्दन स तोहरे बरे बुरी बात बोलिहीं, तब परमेस्सर तोहार रच्छा करी। विपत्तियन क समइ तोहका डेराइ क जरूरत नाही होइ।

22तू विनास अउ भुखमरी क समइ मँ भी खुस रहब्या। अउर तोहका जंगली जनावरन स भी कबहुँ नाही डेराइ चाही।

23मैदानन क चट्टानन तोहार साथी क होइ। जंगली जनावरन भी तोहरे संग सान्ति रखत हीं।

24तू सान्ति स रहब्या काहेकि तोहार तम्बू सुरच्छित अहइ। तू पचे आपन भेड़न क बाड़ा भी लखब्या, अउर ओहमँ एक भी भेड़ हेराइ नाही।

25तोहार बहोत सन्तानन होइहीं। उ सबइ एँतना होइहीं जेतना घासे क पाती भुइँ पइ अहईं।

26तू उ पका भवा गोहँ जइसा होब्या जउन कटनी क समइ तलक पकत रहत ह। हीं, तू पूरी उमर तलक जितअ रहब्या।

27अथर्व, हम पचे इ सबइ बातन जाँचित ह अउर हम पचे जानित ह कि इ सबइ फुर अहईं। एह बरे अथर्व मोर सुना अउर तू इ सबन्क खुद आपन आप समुझ ल्या।"

अथर्व एलिपाज क जवाब देत ह

6 फुन अथर्व जवाब दिहेस, 2"मोर पीरा अउ दुःख क तराजु मँ तउलइ द्या।

3मोर व्यथा समुद्धर क समूची रेत स भी जियादा भारी होइ। एह बरे मईं गँवार जइसा बात किहेउँ ह।

4सर्वसक्तीमान परमेस्सर क बाण मोह मँ घुसा अहईं अउर मोर प्राण ओन बाणन क विख क पिअत रहत ह। परमेस्सर क उ सबइ भयानक सस्त्र मोरे खिलाफ एक संग रखा भवा अहईं।

5तोहार सब्दन कहइ बरे आसान अहइ जब कछू भी बुरा नाही भएन ह। हिआँ तलक कि जंगली गदहा भी नाही रेकंत अगर ओकरे लगे खाइ क रहइ। इहइ तरह कउनो भी गइया तब तलक नाही रँभात जब तलक ओकरे लगे चरइ क चारा अहइ।

6बे नमक क भोजन बिना स्वाद क होत ह। अउर अण्डा क सफेदी मँ भी स्वाद नाही होत ह।

7मोरे बरे तोहार सब्द ठीक उहइ तरह अहइ। इ भोजन क छुअइ स मईं इन्कार करत हउँ। इ तरह क भोजन मोका सड़ा भवा लागत ह।

8परमेस्सर क मोर माँग क अनुमोदन करइ द्या अउर मोका उ देइ द्या जे मँ चाहत हउँ।

9परमेस्सर क मोका सराप अउर मार डवइ द्या।

10अगर उ मोका मारत ह तउ एक तु बात क चैन मोका रही, आपन अनन्त पीरा मँ भी मोका एक तु बाते क खुसी रही कि मईं कबहुँ भी आपन पवित्र क हुकुमन पइ चलइ स इन्कार नाही किहेउँ।

11मोर सक्ती छीण होइ चुकी बाटइ एह बरे मोका जितअ रहइ क आसा नाही अहइ। मोका पता नाही कि आखीर मँ मोरे संग का होइ? एह बरे धीरज धरइ क मोरे लगे कउनो कारण नाही अहइ।

12मईं चट्टान क नाई मजबूत नाही अहउँ। न ही मोर देह काँसे स रची गइ अहइ।

13अब तउ मोहमँ एँतनी भी सक्ती नाही कि मईं खुद क बचाइ लेउँ। काहेकि मोहसे कामयाबी छीन लीन्ह गइ अहइ।

14काहेकि उ जउन आपन दोस्तन खातिर निस्था देखावइ स इन्कार करत ह। उ सर्वसक्तीमान परमेस्सर क भी अपमान करत ह।

15मुला मोरे बन्धु लोगो, तू बिस्सास क जोगग नाही रह्या। तू पचे नदी-तल क नाई अबिस्सासी ह जेहमँ बरिस क कछू भाग मँ ही जल रहत ह।

16उ सबहिँ अँन्धियारा नदी-तल, बरफ स उमड़ि जात ह जब बरफ टेघरत ही।

17मुला जब मौसम गरम अउ सूखा होत ह, तब पानी बहब बंद होइ जात ह, अउर जल क धारा झुराइ जात हीं।

18बड़पारी लोगन क दल आपन रास्ता क तजि देत ही अउर रेगिस्ताने में प्रवेश कइ जात ही अउर उ पचे लुप्त होइ जात हीं।

19तेमा क वड़पारी दल जल क हेरत रहेन अउर सबा क राही आसा क संग लखत रहेन।

20उ पचन्क विस्सास रहा कि पानी मिली मुला ओनका निरासा मिली।

21अब तू पचे ओन जल धारन क समान अहा। तू पचे मोर सबइ यातना क लखत अहा अउ डेरन अहा।

22का मई कहेउँ कि 'मोका उपहार द्या?' का मई कहेउँ कि 'मोर बरे रिस्वत क रूप में एक भेंट द्या?'

23का मई तू पचन्स कहेउँ, 'मोर दुस्मनन स मोका बचाइ ल्या? का मई तोहका कहेउँ कि ओका मुक्ती-धन द्या जउन मोका पकरेस ह?'

24एह बरे अब मोका सिच्छा द्या अउर मई सान्त होइ जाब। मोका देखौँ द्या कि मई का बुरा किहेउँ ह।

25सच्चा सब्द ताकतवर होत हीं, मुला तू पचे का आलोचना करत ह?

26का तू आलोचना क अविस्कार करत ह? का तू एहसे भी जिआदा निरासाजनक सब्द बोलब्या?

27हिआँ तलक कि जुआ में अनाथ क भी वस्तुअन क लेइ चाहत ह। हिआँ तलक कि तू आपन निज मीत क भी बेचइ चाहत ह।

28मुला अब, मोरे मुख क परखा। मई तोहसे झूठ नाही बोलब।

29एह बरे, आपन मने क बदल डावा। एक भी अनियाय जिन होइ द्या, फुन स जरा सोचा काहेकि मई कउनो बुरा काम नाही किहेउँ ह।

30मई झूठ नाही कहत हउँ। मोका भला अउ बुरे लोगन क पहिचान अहइ।"

7 अय्यूब कहेस, "मनई क धरती पइ कइ सघर्ष करइ क पड़त ह। ओकर जिन्नगी भाड़े क मजदूर क जिन्नगी जइसी होत ह।

2मनई उ भाड़ा क मजदूर जइसा अहइ, जउन दिन क अन्त में ठंडी छौँह चाहत ह, अउ मजदूरी क इन्तज़ार करत ह।

3महीना दर महीना बेचइनी क बीत गवा अहइँ अउर पीरा भइ रति दर रत मोका दइ दीन्ह गइ अहइ।

4जब मई ओलरत हउँ, मई सोचत रहत हउँ, 'मोरे उठइ क अबहुँ अउर कितनी देर अहइ?' मुला इ रात तउ घसेटत चला जात ह। मई तउ पीरा झेल रहत हउँ अउ करवट बदलत हउँ जब तलक सूरज नाही निकरि आवत।

5मोर तन कीरन अउ धूरि स ढाक लीन्ह अहइ। मोर चमड़ी चटक गइ अहइ अउर एहमाँ रिसत भए फोड़ा भरि गवा अहइँ।

6मोर दिन जुलाहा क फिरकी स भी जियादा तेज चाल स बीतत अहइँ। मोर जिन्नगी क आखीर बिना कउनो आसा क होत अहइ।

7हे परमेस्सर, याद राखा, मोर जिन्नगी सिरिफ एक ठु साँस अहइ। अब मोर आँखी कछू भी नाही लखिहीं।

8अबहिँ तू मोका लखत अहा मुला फुन तू मोका नाही लख पउब्या। तू मोका हेरब्या मुला तब तलक मई जाइ चुका होब।

9एक बादर छोटा होइ जात ह अउर आखर में लुप्त होइ जात ह। इ तरह एक मनई जउन मर जात ह अउर कब्र में गाइ दीन्ह जात ह, उ फुन वापिस नाही आवत ह।

10उ आपन पुराना घरे क वापिस कबहुँ नाही लउटी। ओकर घर ओका फुन कबहुँ भी नाही जानी।

11एह बरे मई चुप नाही रहब। मई सब कहि डाउब। मोर आतिमा दुखी अहइ अउर मोर मन कडुआहट स भरा अहइ, एह बरे मई उ सब बातन क बारे में सिकायत करब जउन मोर संग घटेस ह।

12हे परमेस्सर, तू मोर पइ पहरेदार काहे राखेस ह? का मई समुदूर हउँ, या समुदूर क कउनो दैत्य?

13-14हे परमेस्सर, जब मोका लगत ह कि खाट मोका सान्ति देइ अउर मोर पलंग मोका चइन अउ बिस्त्राम देइ, तब मोका सपना में डरावत ह।

15मई आपन गला घोटि जाइ पसन्द करब्या। मउत इ देह में रहइ स बेहतर अहइ।

16मई आपन जिन्नगी स घिना करत हउँ। मई हमेसा अइसा जिअत रहब नाही चाहत हउँ। मोका अकेल्ला रहइ द्या। मोर जिन्नगी बेकार अहइ।

17हे परमेस्सर, मनई तोहरे बरे काहे एँतना महत्वपूर्ण अहइ? काहे मनई पइ तोहका एँतना धियान देइ चाही?

18हर भिन्सारे काहे तू मनई क लगे आवत ह अउर हर छिन तू काहे ओका परखा करत अहा?

19हे परमेस्सर, तू कबहुँ भी मोका नज़र अन्दाज़ नाही करत ह अउर मोका एक छन अकेल्ला नाही छोड़त ह।

20हे परमेस्सर, तू हरेक चिजियन पइ जउन हम पचे करत हीं निगाह रखत ह! जदि मई पाप किहा तउ मई का किहा? तू मोका काहे निसाना बनाया ह? मई तोहार बरे काहे बोझ बन गवा हउँ।

21का तू मोर सबइ गलती क छिमा नाही करत्या अउर मोरे पापन क तू काहे छिमा नाही करत्या? मई हाली ही मरि जाब अउर कब्र में चला जाब। जब तू मोका हेरब्या मुला तब तलक मई जाइ चुका होब।"

बिलदद अय्यूब स बोलत ह

8 एकरे पाछे सूह प्रदेस क बिलदद जवाब देत भए कहेस।

2"तू कब तलक अइसी बातन करत रहब्या? तोहार सब्द तेज आँधी क तरह बहत अहइँ।

3परमेस्सर सदा स्वच्छ रहत ह। निआउवाली बातन क सर्वसक्तीवाला परमेस्सर कबहुँ नाही बदलत ह।

4एह बरे अगर तोहार सन्तानन परमेस्सर क खिलाफ पाप किहन ह तउ उ ओनका राजा दिहस ह। आपन पापन खातिर ओनका भोगइ क पड़ा ह।

5मुला अब अय्यूब, परमेस्सर कइँती निगाह करा, अउर सर्वसक्तीमान परमेस्सर स ओकर दया पावइ खातिर बिनती करा।

6अगर तू पवित्र अउर ईमानदार अहा, तउ उ हाली तोहार मदद बरे आइ। उ तोहार नीक घरे क रच्छा करब।

7जउन कछू भी खोया उ तोहका नान्ह स बात लगगी। काहेकि तोहार भविस्स बड़ा ही सुफल होइ।

8ओन बुढ़वा लोगन स पूछा अउर पता करा कि ओनकर पुरखन क सीखे रहेन।

9काहेकि अइसा लागत ह जइसा कि हम तउ बस काल्ह ही पइदा भएन ह, हम कछू नहीं जानित। परछाई क तरह हमार उमर भुईया पइ बहोत छोट क अहइ।

10होइ सकत ह कि बुढ़वा लोग तोहका कूछ सिखाइ सकई। होइ सकत ह जउन उ पचे सीखेन ह उ पचे मोका सिखाइ सकई।”

11बिलदद कहेस, “का भोजपत्र क बूच्छ दलदल भुईया क इलावा कहुँ बढ़ सकत ह? का नरकट बे पानी क बाढ़ि सकत ह?

12नाहीं, अगर पानी झुराइ जात ह तउ उ पचे भी मुरझाइ जइहीं। ओनका काटा जाइ जोगग काटिके काम में लिआवइ क उ पचे बहोत छोट रहि जइहीं।

13उ मनई जउन परमेस्सर क बिसारि जात ह, नरकट क तरह होत ह। उ मनई जउन परमेस्सर क बिसारि जात ह ओकरे बरे कउनो आसा नाही अहइ।

14उ मनई क बिस्सास बहोत दुर्बल होत ह। उ मनई मकड़ी क जाला क सहारे रहत ह।

15अगर कउनो मनई मकड़ी क जाले क सहारा लेत ह, इ टूटि जाइ। अगर उ मकड़ी क जाल क पकरत ह, इ नस्त होइ जाइ।

16उ मनई उ पौधे क नाई अहइ जेकरे लगे पानी अउ सूरज क रोसनी बहोतइ अहइ। ओकर डारियन बगिया में हर कइँती सँचरत हीं।

17उ पाथर क टीला क चारिहुँ कइँती आपन जड़न क फइलावत ह अउ चट्टान में जमइ बरे कउनो ठउर हेरत ह।

18जब पौधा आपन जगह स उखाड़ दीन्ह जात ह, तउ कउनो भि नाही जान पात ह कि हुआँ कबहुँ कउनो पौधा रहा।

19मुला उ पौधा हुआँ खुस रहा, अब दूसर पउधन हुआँ जमिहीं, जहाँ कबहुँ उ पउधा रहा।

20मुला परमेस्सर कबहुँ भी निर्दोख मनई क नाही तजी अउर उ बुरे मनई क सहारा नाही देइ।

21अबहुँ भी परमेस्सर तोहरे मुँह क हँसी स भरि देइ। तोहरे ओंठन क खुसी स चहकाइ देइ।

22परमेस्सर तोहरे दुट्ट दुस्मनन क लज्जा स झुकाइ देइ। अउर ओनकर घसन क नास कइ देइ।”

अय्यूब बिलदद क जवाब देत ह

9 फुन अय्यूब जवाब दिहस।

2“हाँ, मई जानत हउँ कि तू फुरइ कहत ह मुला मनई परमेस्सर क समन्वा निर्दोख कइसे होइ सकत ह?

3मनई परमेस्सर स बहस नाही कइ सकत। परमेस्सर मनई स हजारन सवाल कइ सकत ह अउर कउनो ओनमें स एक तु क भी जवाब नाही दइ सकत ह।

4परमेस्सर बुद्धिमान अउर सक्तीसाली बाटइ। अइसा कउनो मनई नाही जउन परमेस्सर क कामयाबी क खिलाफ करी।

5जब परमेस्सर कोहाइ जात ह, उ पहाड़न क हटाइ देत ह, अउर उ सबइ समुझ तलक नाही पउतेन।

6परमेस्सर भुईया क कँपावइ बरे भुईडोल पठवत ह। परमेस्सर भुईया क खम्भन क हिलाइ देत ह।

7परमेस्सर सूरज क आग्या दइ सकत ह अउर ओका उगइ स रोक सकत ह। उ तारन क बंद कइ सकत ह ताकि उ सबइ न चमकई।

8सिरिफ परमेस्सर अकासन क रचेस ह। उ सागरे क लहरन पर बिचरि सकत ह।

9परमेस्सर सप्तसिं, मृगासिरा अउर कचपचिया तारन क बनाएस ह। उ ओन ग्रहन क बनाएस जउन दक्खिन क अकास पार करत हीं।

10परमेस्सर अइसेन अद्भुत करम करत ह जेनका मनई नाही समुझ सकत। परमेस्सर क महान अचरज भरे करमन क कउनो अन्त नाही अहइ।

11परमेस्सर जब मोरे लगे स निकरत ह तउ मई ओका लख नाही पावत हउँ। परमेस्सर जब मोरी बगल स निकरि जात ह तउ भी मई जान नाही पावत हउँ।

12अगर परमेस्सर छोड़ि लागत ह तउ कउनो भी ओका रोक नाही सकत। कउनो भी ओहसे कह नाही सकत कि ‘तू का करत अहा?’

13परमेस्सर आपन किरोध क रोकी नाही। हिआँ तलक कि राहाब* क सहायक भी परमेस्सर क सक्ती क आगे झुकत हीं।

14एह बरे परमेस्सर स मई बहस नाही कइ सकत। मई नाही जानत कि ओहसे का कहा जाइ।

15यद्यपि मई तउ निर्दोख अहउँ, मोरे लगे कउनो विकल्प नाही अहइ किन्तु ओहसे जउनो कि मोका निआव करत ह दाया क आग्रह कइ सकत हउँ। मई सिरिफ ओसे जउन मोर निआउ करत ह, दाया क भीख माँग सकत हउँ।

16अगर मई ओका गोहरावउँ अउर उ जवाब देइ, तबहुँ मोका बिस्सास नाही होइ कि उ सच ही ओह पइ धियान देत ह जउन मई कहत हउँ।

17परमेस्सर मोका कुचरइ बरे तूफान पठइ अउर उ मोका अकारण ही अउर जियादा घाव देइ।

18परमेस्सर मोका फुन साँस नाही लेइ देइ। उ मोका अउर जियादा दुख देइ।

19कउनो मनई परमेस्सर क सक्ती क मुकाबला में हराइ नाही सकत ह। कउनो मनई परमेस्सर क अदालत में लइ बरे मजबूर नाही कइ सकत ह।

20चाहे मई निर्दोख अहउँ, जउन कछू भी मई कहत हउँ उ मोका दोखी ठहराउब। चाहे मई कउनो बुरा काम नाही किहा, उ मोका भ्रस्ट क जइसा बनाउब्बा।

राहाब अजगर या सागरे क दैत्य अहइ। लोग सोचत अहा कि राहाब सागरे पइ नियंतन रखत ह। अकसर राहाब परमेस्सर क दुस्मन क या कउनो बुरा काम कइ क प्रतीक रहा।

21मई पाप रहित हउँ। मुला मोका आपन ही परवाह नाही अहइ मई खुद आपन ही जिन्नगी स घिना करत हउँ।

22मई खुद स कहत हउँ, 'हर कउनो क संग एक समान ही घटित होइ। निरपराध लोग वइसेन ही मरत हीं जइसे अपराधी मरत हीं। परमेस्सर ओन सबक जिन्नगी क अन्त करत ह।'

23का परमेस्सर मज़ाक करत ह जब अचानक विपति आवत अउर कउनो निर्दोख मनई मारा जात ह?

24अगर निआधीस क आँखिन क ढाँपि दीन्ह जाइ तउ धरती पइ दुटठन क राज होइ जाब्या। अगर इ परमेस्सर नाही किहस, तउ फुन कउन किहस ह?

25कउनो तेज धावक स तेज मोर दिन परत अहई। मोर दिन उड़िके बीतत अहई अउर ओनमौ कउनो खुसी नाही अहइ।

26तेजी स मोर दिन बीतत अहई जइसे भोजपत्र क नाव बहत चली जात ह। मोर दिन अइसे हीं बीतत अहई जइसे उकाब आपन सिकारे पइ टूट पड़त होइ।

27जदि मई कह सकब, 'मइ सिकाइत नाही करब। मई आपन दर्द भूल जाब। अउर खुस होइ जाब्या।'

28किन्तु मई अबहुँ तलक पीरा स डेरात हउँ काहेकि मई जानत हउँ कि अबहुँ भी तू (परमेस्सर) मोका निर्दोख नाही बनाउब्या।

29मई परमेस्सर क संग आपन दलील क खोइ देब। तउ कोसिस करइ में मोका आपन समइ काहे बरबाद करइ चाही।

30चाहे मई आपन हाथ धोइ बरे सबन त सुद्ध पानी अउर बड़िया साबुन क प्रयोग करा।

31फुन भी परमेस्सर मोका घिनौना गड़हा में ढकेल देइ जहाँ मोर ओढ़ना तलक मोहसे घिना करिहीं।

32परमेस्सर, मोर जइसा मनई नाही अहइ। एह बरे ओका मई जवाब नाही दइ सकत। हम दुइनउँ अवालत में एक दूसरे स मिल सकित नाही।

33हुवाँ कउनो एक बिचौलिया नाही जउन हमार बीच क बातन सुन सकत। हुवाँ कउनो एक नाही जउन हम दुइनउँ क ऊपर अधिकार रखइ सकत।

34अगर परमेस्सर मोका सज़ा देइ बन्द कइ देइ, अउर उ मोका बहोत जियादा नाही डेरावइ।

35तब मई बगैर डरे परमेस्सर स उ सब कहि सकत हउँ, काहेकि मई जानत हउँ कि मई अइसा दोखी नाही हउँ जइसा मोह क दोखी ठहराइ गवा ह।

10 मुला हाथ, अब मई वइसा नाही कइ सकत। मोका खुद आपन जिन्नगी स घिना अहइ एह बरे मई अजाद भाव स आपन दुखड़ा रोउब। मोरे मने में कडुआहट भरी अहइ एह बरे अब मई बोलब।

2मई परमेस्सर स कहब 'मोह पइ दोख जिन लगावा। मोरे खिलाफ तोहरे लगे लगावइ बरे का अहइ?

3हे परमेस्सर, का तू मोका चोट पहाँचाइके खुस होत ह? अइसा लगत ह जइसे तोहका आपन सृस्टि बरे कउनो चिंता नाही अहइ। अउर सायद, तू दुस्टन क कुचालन क पच्छ लेत अहा।

4हे परमेस्सर, का तोहार आँखिन मनई क समान अहई? का तू चिजियन क अइसे ही लखत ह, जइसे मनइयन लखा करत हीं।

5का तोहार आयु हम जइसे मनइयन क तरह अल्प अहइ? का तोहार जिन्नगी हम मनइयन क जइसे अल्प अहइ?

6तू मोर गलतियन खोजत ह अउर मोरे पापन क हेरत ह।

7तू जानत ह कि मई निरपराध हउँ मुला मोका कउनो भी तोहार सक्ती स बचाइ नाही सकत।

8परमेस्सर, तू मोका रच्या अउर तोहार हाथन मोरे तन क सँवारेन, मुला अब तू ही मोरे खिलाफ होइ गया अउर मोका नस्ट करत अहा।

9हे परमेस्सर, याद करा कि तू मोका चिकनी माटी स मद्ध्या, मुला अब तू ही मोका फुन स धूलि में बदलब्या।

10तू मोका दुधे क नाई उडेरत ह, तब तू मोका दही बनावत ह अउर निचोड़त ह अउर फुन तू मोका दूधे स पनीर बनावत ह।

11तू मोका हाइन अउ मॉस पेसियन स बनाएस ह। तू मोका चमड़ी अउ मॉस स ढँकिस ह।

12तू मोका जिन्नगी क दान दिहा अउर मोरे बरे दयालु रह्या। तू मोरे धियान राख्या अउर तू मोरे प्राणन क रखवारी किहा।

13मुला इ उ अहइ जेका तू आपन मने में छुपाए राख्या। मई जानत हउँ कि इ उ अहइ जेकर तू आपन मने में गुप्त रूप स योजना बनाया ह।

14अगर मई पाप किहेउँ तउ तू मोका लखत रह्या। यह बरे तू मोका निर्दोख घोसित नाही कर सकत्या ह काहेकि मई बुरा काम किहेउँ ह।

15अगर मई दुस्ट जइसा बेउहार किहेउँ ह तउ तू मोका इ सब झेलइ चाही। अगर मई निरपराध भी हउँ तउ भी आपन मूँड़ नाही उठाइ पउतेउ काहेकि मई लज्जा अउ पीरा स भरा भवा हउँ।

16इ अइसा ही लागत ह कि तोहका सिंह क तरह मोर सिकार करइ पसन्द ह। तू आपन सक्ती मोर खिलाफ बार-बार देखावत ह।

17तू मोरे खिलाफ सदा ही कउनो न कउनो क नवा गवाह बनावत ह। तोहार किरोध मोरे खिलाफ अउर जियादा भड़क उठी अउर मोरे खिलाफ तू नई नई दुस्मन क सेना लिअउब्या।

18हे परमेस्सर, तू मोका काहे जन्म दिहा? एहसे पहिले कि मोका कउनो लख सकत कास! मई मरि जातेउँ!

19कास! मई जिअत न रहतेउँ। कास! मोका माता क गर्भ स सोझइ ही कब्र में उतार दीन्ह जातेउँ!

20मोर जिन्नगी करीब करीब खतम होइ चुकी अहइ। कृपा कइके मोका अकेल्ले रही द्या। ताकि मई इ अल्प समइ क अनन्द लेइ सकब।

21एहसे पहिले कि मई हुआँ चला जाउँ स कबहुँ मई वापस नाही आइ सकउँ, जउन जगह पइ अधियारा अउर घोर अन्धकार बाटइ,

22जउन तनिक समइ बचा अहइ मोका जिअइ लेइ द्या। एहसे पहिले कि मई हुआँ चला जाउँ जउने जगह क कउने लखि नाही पावत, अँधियारा क जगह, छाया अउर गड़वड़ क जगह, उ जगह पइ जहाँ रोसनी भी अँधियारा स भरी होत ह।”

सोपर क अय्यूब स कहब

11 एह पइ नामात नाउँ क पहुँटा क सोपर अय्यूब क जवाब देत भए कहेस,

2“इ सब्दन क प्रवाह क जवाब मिलइ चाही! का कउने मनई आपन आपन क सिरिफ जियाद बोलइ के निर्दोख बनावइ सकत ह।

3का तू सोचत ह कि तोहार सेखी हम लोगन क सांत कइ सकत? का तू सोचत ह कि बिना हमार स डांट खाए मज़ाक उड़ा सकत ह।

4अय्यूब, तू परमेस्सर स कहत रहया, ‘मोर सिद्धान्त सुद्ध अहइ। तू लख सकत ह कि मई निर्दोख अहउँ।’

5सचमुच मैं मोर इ इच्छा अहइ कि परमेस्सर बोलइ अउर तोहसे बात करिहीं।

6तउ उ तोहका बुद्धि क रहस्य बताइ। बुद्धि अनेक सच्चाइ राखत ह। अय्यूब, मोर सुना। परमेस्सर सचमुच ही तोहार कछू पापन क नज़र अन्दाज़ करत ह।

7अय्यूब का तू परमेस्सर क रहस्य समुझ सकत ह? का तू सर्वसत्कीमान परमेस्सर क बुद्धि क सीमा समुझ सकत ह?

8ओकर बुद्धि अकासे स ऊँच अहई, तू का कइ सकत्या? ओकर बुद्धि मृत्युलोक स गहिर अहई, का तू एका समुझ सकत्या?

9उ सबइ सीमा धरती स बड़ा अउर सागर स बिसाल अहई।

10अगर परमेस्सर तोहका बन्दी बनावइ अउर तोहका अदालत मैं लइ जाइ, तउ कउन ओका रोक सकत्या?

11परमेस्सर सचमुच जानत ह कि कउन धोखेबाज़ अहइ। परमेस्सर जब बुरी काम क लखत ह, तउ उ ओकर नज़र अन्दाज़ नाही करब्या।

12मुला कउने मूरख मनई कबहुँ बुद्धिमान नाही होइ सकत ह। जइसे एक जंगली गदहा एक मनई क जन्म नाही देइ सकत ह।

13तउ अय्यूब, तोहका आपन सोच-बिचार पइ जरूर रोक लगावइ चाही, अउर आपन हाथन पराथना मैं फइलावइ चाही।

14कउने दुट्ठता जउन तोहरे हाथन मैं बसा अहइ, ओका तू दूर करा। अउर आपन घरे मैं कउने बुराइ क जिन रहइ द्या।

15तबहिँ सिरिफ तोहार दोख क छिमा कीन्ह जाब्या। तू मजबूती स खड़ा रहब्या अउर नाही डेराब्या।

16अय्यूब, तब तू आपन विपत्ति क बिसरि जाब्या। तू आपन दुखड़ा क बस उ पानी जइसा सुमिरन करब्या जउन तोहरे लगे स बहिके चला गवा।

17तोहार जिन्गी दुपहर क सूरज स भी जियाद उज्जर होइ। जिन्गी क अँधियर घड़ियन अइसेन चमकिहीं जइसे भिन्सारे क सूरज।

18अय्यूब, तू सुरच्छित अनुभव करब्या काहेकि हुआँ आसा होइ। परमेस्सर तोहार रखवारी करी अउर तोहका आराम देइ।

19चइन स तू सोउब्या, कउने तोहका नाही डेराई अउर बहोत स लोग तोहसे मदद मंगिहीं।

20मुला जब बुरे लोग आसरा हेरिहीं, तब ओनका नाही मिली। ओनके लगे कउने आस नाही होइ। मउत ही ओनकर सिरिफ आसा होइ।”

सोपर क अय्यूब क जवाब

12 फुन अय्यूब सोपर क जवाब दिहस।

2“बिना संदेह क तू सोचत अहा कि सिरिफ तू ही लोग बुद्धिमान अहा, तू सोचत अहा कि जब तू मरब्या तउ विवेक मर जाइ तोहरे संग।

3मुला तोहार जेतनी बुद्धि भी उत्तम बाटइ, मई तोहसे कछू घटिके नाही अहउँ। अइसी बातन क जइसी तू कहत ह, हर कउने जानत ह।

4अब मोरे मीत मोर मसखरी उड़ावत हीं। ‘मई प्रतिदिन पराथना किहा करत रहा अउर उ मोर पराथना क जवाब देत रहा। किन्तु अब भी मई बेगुनाह अउर निर्दोख अहउँ, मोर परोसी मोर खिल्ली उड़ावत हीं।’

5अइसे लोग जेह पइ कबहुँ विपत्ति नाही पड़ी, विपदा स घिरा लोगन क हँसी किया करत हीं। मगर विपदा हमेसा उ लोगन पइ आइ बरे तइयार रहत ही जेकर गोड़ दूढ़ नाही अहई।

6डाकुअन आपन डेरन मैं बगैर चिन्ता क रहत हीं। अइसे लोग जउन परमेस्सर क क्रोधित करत हीं, सान्ति स रहत हीं। परमेस्सर ओनका धियान रखत हीं।

7चाहे तू पसु स पूछिके लखा, उ पचे तोहका सिखाइ देइहीं, या हवा क पँछियन स पूछा उ पचे तोहका बताइ देइहीं।

8या तू धरती स पूछि ल्या उ तोहका सिखाइ देइ या सागरे क मछरियन क आपन गियान तोहका बतावइ द्या।

9हर कउने जानत ह कि यहेवा एँन सबइ चिजियन क रचेस ह।

10हर जिअत पसु अउर हर एक प्राणी जउन साँस लेत ह, परमेस्सर क आधीन अहइ।

11जइसे जीभ भोजन क सुआद चखत ह वइसे ही कानन क सब्दन क परखत ह।

12लोग कहित ह, ‘अइसा ही बूढन क लगे विवेक रहत ह। अउर लम्बी उमर समुझ बूझ देत ही?’

13किन्तु उ परमेस्सर अहइ जेकर लगे बुद्धि अउर सक्ती अहइ। उ अच्छा सलाह अउर सूझबूझ रखत ही।

14अगर परमेस्सर कउने चिज क ढहाइ क गिराइ देइ तउ, फुन लोग ओका नाही बनाइ सकतेन। अगर परमेस्सर कउने मनई क बन्दी बनावइ, तउ लोग ओका अजाद नाही कइ सकतेन।

15अगर परमेस्सर बर्खा क रोकइ तउ धरती झुराइ जाइ। अगर परमेस्सर बर्खा क छूट दइ देइ, तउ उ धरती पइ बाढ़ लइ आई।

16परमेस्सर सक्तीसाली अहइ। उ सदा विजयी होत ह। उ मनई जउन छलत ह अउर उ मनई जउन छला जात ह दुउनउँ परमेस्सर क अहई।

17परमेस्सर सलाहकारन स ओनकर बुद्धि लेइ लेत ह। उ प्रमुखन क अइसा बनाइ देत ह कि उ पचे मूर्ख मनइयन जइसा बेउहार करइ लागत हीं।

18परमेस्सर राजा लोगन क अधिकार हटाइ लेत ह अउर ओनका दास बना देत ह।*

19परमेस्सर याजक लोगन ओनकर सक्ती स वंचित कर देत ह अउर ओनकर दर्जा क सुरच्छा क छीन लेत ह।

20परमेस्सर बिस्सासनीय सलाहकार क चुप कराइ देत ह। उ बूढ़े लोगन क बुद्धि लइ लेत ह।

21परमेस्सर महत्वपूर्ण अधिकारियन क साथ अइसा बेउहार करत ह जइसा उ कछू नाही अहइ। उ सासकन क सक्ती लेइ लेत हीं।

22परमेस्सर अँधियारा स रहस्य स भरी सच्चाई क परगट करत ह। उ घना अँधियारा स घिरा जगहियन पइ, रोसनी पठवत ह।

23परमेस्सर रास्ट्रन क विसाल अउ सक्तीसाली होइ देत ह, अउर फुन ओनका उ नस्ट कइ डवत ह। उ रास्ट्रन क विकसित कइके विसाल बनइ देत ह, फुन ओनकर लोगन क उ तितर बितर कइ देत ह।

24परमेस्सर धरती क रास्ट्रन क प्रमुखन क मूर्ख अउर नासमुझ बनाइ देत ह। उ ओनका मरुभूमि में जहाँ कउनो राह नाही भटक बरे पठवत ह।

25उ पचे प्रमुख लोग अँधियारा में आपन राह टटोरत रहत हीं। कउनो भी प्रकास ओनके लगे नाही होत ह। परमेस्सर ओनका अइसे चलावत ह, जइसे पीके धुत भए लोग चलत हीं।”

13 “मोर अँखिन पहिले स ही उ सब चिजियन क गवाही अहा जउन तू कह्या ह। मोर कानन पहिले ही सुन अउर समुझ चुका ह जउन कछू तू कहा करत अहा। 2मई भी ओतना ही जानत हउँ जेतना तू जानत अहा, मई तोहसे कम नाही हउँ। 3किन्तु मई सर्वसक्तीमान परमेस्सर स बोलइ चाहत हउँ, अउर मई ओकर समन्वा आपन मुकद्दमा क सफाई देउँ। 4मुला तू तीनउँ लोग आपन छूठ बातन स सच्चाई क ढाँपइ चाहत अहा। तू उ बेकार क चिकित्सक नाई अहा जउन कउनो क नीक नाही कइ सकत। 5मोर इ कामना अहइ कि तू पूरी तरह चुप होइ जा। इ तोहरे बरे बुद्धिमानी क बात होइ जउन तू कइ सकत ह।

6“अब, मोर तर्क सुना। सुना जब मई आपन सफाई देउँ।

7का तू परमेस्सर बरे झूठ बोलब्या? का तू सचमुच परमेस्सर क बारे में झूठ बोलब्या?

8का तू मोरे खिलाफ परमेस्सर क पच्छ लेब्या? का तू अदालत में परमेस्सर क बचावइ जात अहा?

परमेस्सर ... देत ह परमेस्सर राजा लोगन क सही करमबंध हटाइ लेत ह अउर ओनका बेकार कपड़ा पहनावत ह।

9अगर परमेस्सर तोहका बहोत करीब स जाँच लिहस तउ का उ कछू भी नीक बात पाई? का तू सोचत अहा कि तू परमेस्सर क छल पउब्या, ठीक उहइ तरह जइसे तू लोगन क छलत अहा?

10अगर तू अदालत में छुपा छुपा कउनो क तरफ़दारी करब्या, तउ परमेस्सर निहचय ही तोहका लताड़ी।

11ओकर तेज तोहका डरावत ह अउर तू डर जात ह।

12तोहार कहब धूलि जइसे बेकार अहई। तोहार तर्कन माटी जइसी दुर्बल अहई।

13चुप रहा अउ मोका कहि लेइ द्या। मोरे संग कछू बात होइ जाइ द्या।

14मई खुद क संकट में डवत हउँ अउर मई खुद आपन जिन्गी आपन हाथन में लइ लेत हउँ।

15होइ सकत ह परमेस्सर मोका मारि देइ। यद्यपि मोका जीत क कछू आसा नाही अहइ, तउ भी मई आपन मुकद्दमा क तर्क ओकरे समन्वा देब।

16परमेस्सर मोर मुक्ति अहइ, काहेकि कउनो दुट्ट मनई ओकर आपने-सामने नाही आइ सकत।

17ओका धियान स सुना जेका मई कहत हउँ, ओह पइ कान द्या जेकर व्याख्या मई करइ चाहत हउँ।

18अब मई आपन बचाव करइ क तैयार हउँ। इ मोका पता अहइ कि मोका निर्दोष सिद्ध कीन्ह जाइ।

19कउनो भी मनई इ प्रमाणित नाही कइ सकत कि मई गलत हउँ। अगर कउनो मनई इ सिद्ध कइ देइ तउ मई चुप होइ जाब अउर मरि जाब।

20हे परमेस्सर, तू मोका दुइ बातन दइ द्या, फिन मई तोहसे नाही छुपब।

21मोका दण्ड देइ रोकि द्या, अउर मोसा जियादा लइइ छोड़ द्या।

22फिन तू मोका पुकारा अउर मइ तोहका जवाब देब, या मोका बोलइ द्या अउर तू मोका जवाब द्या।

23केतँना पाप मई किए हउँ? कउन सा अपराध मोहसे होइ गवा? मोका मोर पाप अउर अपराध देखँवा।

24हे परमेस्सर, तू मोहसे काहे बचत अहा? तू मोर संग दुस्मन जइसा बेउहार काहे करत अहा?

25का तू मोका डेरउब्या? मई एक पता जइसा हउँ जेका पवन उड़ावत ह। एक झुरान तिनका क तू खदेड़त अहा।

26हे परमेस्सर, तू मोरे विरोध में गंभीर दोसपूर्ण बात लिखत अहा। का तू मोका अइसे पापन बरे दुःख देत ह जउन मई आपन जवानी में किहे रहेउँ?

27मोरे गोड़न में तू काठ डाइ दिह्या ह। तू मोर हर कदम पइ अँखी गड़ाए रखत ह। मोरे कदमन क तू सीमा बाँध दिहा ह।

28मई सड़ी चीज जइसा छीन होत जात हउँ कीसन स खाए भए ओढ़नन क टूका जइसा।”

14 “उहइ दिना स जब हमार मताहरी हम पचन क जन्मेस ह, हमार जिन्गी छोट अउ दुःख स भरी अहइ। 2मनई क जिन्गी फूल क नाई अहइ जउन हाली जमत ह अउर फुन खतम होइ जात ह। मनई क जिन्गी

अहइ जइसे कउनो छाया जउन तनिक देर टोकत ह अउर बनी नाहीं रहत।

3हे परमेस्सर, का तू उ मनई पइ धियान देब्या जउन मरा भवा लागत ह? का तू मोर निआउ करइ मोका समन्वा लिअउब्या?

4“कउनो अइसी चीज स जउन खुद स्वच्छ नाहीं अहइ स्वच्छ चीज कउन पाइ सकत ह? कउनो नाहीं।

5मनई क जिन्नगी सीमित अहइ। तू ओकर जीवन काल क सीमित कइ दिहेस ह। तू मनई बरे जउन सीमा बाँध्या ह, ओका कउनो भी नाहीं बदल सकत।

6तउ परमेस्सर, तू हम पइ आँखी रखब तजि द्या। हम लोगन क अकेल्ला तजि द्या। हम पचन्क क आपन जिन्नगी क उहइ तरह समाप्त करइ द्या जे तरह मजदूरन आपन काम क समाप्त करत ह।

7मुला अगर बृच्छ क काटिके गिराइ दीन्ह जाइ तउ भी आसा ओका रहत ह कि उ फुन स पनप सकत ह, काहेकि ओहमा नई नई डारन फूटत रइहीं।

8चाहे ओकर जइन धरती में पुरान काहे न होइ जाई अउर ओकर तना चाहे माटी में गल जाइ।

9मुला पानी क सिरिफ गंध स उ नई बढ़त देत ह अउर एक पउध क तरह ओहसे डारन फूटत हीं।

10मुला एक मनई कमजोर होइ जात ह अउ मरि जात ह, अउर तब उ चला जात ह।

11समुदर स पानी गाएब होइ सकत ह अउर नदियन सूख कइ फट सकत ह,

12अउर तउ भी जउन कउनो आपन कब्र में मरा भवा अहइ कबहुँ भी नाहीं जी उठब! ओकर नींद स जगाइ स पहिले ही आकास लुप्त होइ जाइ।

13मोर इच्छा अहइ कि तू मोरी कब्र में तक तलक छुपाइ लेइ चाही जब तलक तोहार किरोध कम नाहीं होइ जाइ। अउर तोहका आदेस दीन्ह जाइतेन अउर मोका जगावा जातेन।

14अगर कउनो मनई मरि जाइ तउ का जिन्नगी कबहुँ पउब्या? मई तब तलक बाट जोहब, जब तलक मोर कर्तव्य पूरा नाहीं होइ जात अउर जब तलक मई अजाद न होइ जाऊँ।

15हे परमेस्सर, तू मोका बोलउब्या अउर मई तोहका जवाब देब। उ तू ही अहइ जउन मोका बनाया ह यह बरे तोहका मोह पइ धियान देइ चाही।

16तब मोरी इच्छा अहइ कि तू मोर हर कदम क जाँच करा, मुला तोहका मोहमों कउनो गलती खोजइ क कोसिस नाहीं करइ चाही।

17तउ इ अइसा होइतेन कि मोर पापन क एक थइला मैं बन्दा कीन्ह जातेन। अउर तू मोरे पापन क हटाइ देतेन।

18एक नस्ट भवा पहाइ क जइसा जेकर टूका ले लइ जात ह अउर एक चट्टान जउन आपन जगह स हटाइ लेइ जात ह।

19जइसे पानी पाथर क घँसि डवत ह अउ माटी क पानी बहाइके तल मैं लइ जात ह। हे परमेस्सर, उहइ तरह मनई क आसा क तू नस्ट करत अहा।

20तू एक दैई मनई क हरावत अहा अउर उ खतम होइ जात ह। तू ओकरे मुँह बिगाइत ह अउर ओका पठइ देत ह।

21अगर ओकर पूत कबहुँ सम्मान पावत हीं तउ ओका कबहुँ ओकर पता नाहीं चल पावत। अगर ओकर पूत कबहुँ अपमान भोगत हीं, तउ उ कबहुँ ओका लखि नाहीं पावत ह।

22तउ मनई क देह क कारण ही ओका पीड़ा होत ह अउर ओकर आत्मा ओकरे बरे सोक मनावत ह।”

एलीपज अथर्व क जवाब देत ह

15 एह पइ तेमान नगर क बसइया एलीपज अथर्व क जवाब दिहेस।

2“का तू सोचत अहा कि कउनो बुद्धिमान मनई बे अरथ सब्द स जवाब देत ह अउ आपन आप क गर्म हवा स भरि देत ह?

3का तू सोचत ह कि कउनो बुद्धिमान मनई व्यर्थ क सब्दन स अउर ओन भासणन स बहस करी जेनकर कउनो लाभ नाहीं अहइ?

4अथर्व, तोहार जवाब लोगन क परमेस्सर क आदर अउर ओकर उपासना करइ स रोकइ क कारण होइ।

5तू जउने बातन क कहत ह उ तोहार पाप साफ साफ देखावत ह। अथर्व, तू चतुराई स भरे भए सब्दन क प्रयोग कइके आपन पापन क छुपावइ क प्रयत्न करत अहा।

6मोका जरूरी नाहीं कि तोहका गलत सिद्ध करँउ। काहे? तू खुद आपन मुँह स जउन बातन कहत ह, उ देखँवत हीं कि तू बुरा अहा अउर तोहार ओठं खुद तोहरे खिलाफ बोलत हीं।

7अथर्व, का तू सोचत ह कि जन्म लेइवाला पहिला मनई तू ही अहा अउर पहाइन क रचना स ही पहिले तोहार जन्म भवा रहा।

8का तू परमेस्सर क रहस्य स भरी सबइ योजना क सुने रह्या? का तू सोचत ह कि तू बुद्धिमान अहा?

9अथर्व, तू हम पचन स जियादा कछू नाहीं जानत अहा। उ सबइ बातन हम पचन समझत अही, जेनकर तोहका समुझ अहइ।

10उ सबइ लोग जेनकर बार सफेद अहई अउर बुढ़वा मनई अहई उ पचे हम स सहमत रहत हीं। हाँ, तोहरे बाप स भी बुढ़वा लोग हमरे समर्थन मैं अहई।

11परमेस्सर तोहका सुख देइ क जतन करत ह। अउर तोहसा नमी स बात करत ह। का इ तोहरे बरे काफी नाहीं अहइ? मुला तू सोचत अहा कि इ तोहार बरे काफी नाहीं अहइ।

12अथर्व, तू काहे नाहीं समुझब्या? तू सच्चाइ क काहे नाहीं लखइ सकब्या?

13जब कभी तू इ तरह बोलत ह तू परमेस्सर क खिलाफ होत ह।

14फुरइ कउनो मनई सुद्ध नाहीं होइ सकत। मरनसील मनई नीक नाहीं होइ सकत ह।

15हिआँ तलक कि परमेस्सर आपन दूतन तलक पइ भी निभर नाही रहत ही। हिआँ तलक कि सरग भी परमेस्सर क अपेच्छा सुद्ध नाही अहइ।

16मानव जाति बहोत जियादा पापी अउर भ्रस्ट अहइँ। उ बुराई क पानी क तरह गटक जात ह।

17अय्यूब, मोरी बात तू सुना अउर मई ओकर व्याख्या तोहसे करब। मई तोहका बताउब, जउन मई जानत हउँ।

18मई तोहका उ सहइ बतउब्या जउन बुद्धिमान मनई बतउब्या। उ पचे एन बातन क आपन पुरखन स सुनेस ह अउर ओनका छिपाइ बिना बताएस।

19सिरिफ ओनकर पुरखन क ही भुईया दीन्ह गवा रहा। ओनकर देस में कउनो परदेसी नाही रहा।

20दुट्ट मनई जिन्गी भइ पीरा झेली। एक क्रूर मनई ओन सबहि बरिसन में जउन ओकरे बरे निहचित कीन्ह ग अहइँ, दुःख भोगत रही।

21ओकरे कानन में भयंकर ध्वनियन होत रहहीं। जब उ सोची उ सुरच्छित अहइ तबहिँ ओकर दुस्मन ओह पइ हमला करहीं।

22दुट्ट मनई कउनो आसा नाही अहइ कि उ अँधियारा बचिके निकरि पावइ। कहुँ एक अइसी तरवार अहइ जउन ओका मार डवइ क इन्तज़ार करत अहइ।

23उ एँह कइँती ओह कइँती भटकत भवा फिरत ह मुला ओकर देह गीधन क चारा बनि जाइ। ओका इ पता अहइ कि ओकर मउत बहोत निचके अहइ।

24चिन्ता अउ यातना ओका डरपोक बनावत हीं। इ सबइ बातन ओह पइ अइसे वार करत हीं जइसे कउनो राजा जुद्ध करइ बरे तइयार होत ही।

25काहेकि दुट्ट मनई परमेस्सर क हुकुम मानइ स इन्कार करत ह अउर सर्वसक्तीमान क नज़र-अन्दाज़ करत ह।

26उ दुट्ट मनई बहोत हठी अहइ। उ परमेस्सर क खिलाफ लड़इ चाहत ह, सोचत अहा कि उ मजबूत ढाल स ओका हराइ सकत ह।

27दुट्ट मनई क मुँहे पइ चर्बी चढ़ी रहत ह। ओकर कमर माँस भर जाइ स मोटवार होइ जात ह।

28मुला उ उजाड़ सहरन में रही। उ अइसे घरन में रही जहाँ कउनो नाही रहत ह। ओकर घरन हाली ही रौदा जइहीं।

29दुट्ट मनई जियादा समइ तलक धनी नाही रही। ओनकर भाग्य क धरती पइ स्थिर रूप में ठहरावा नाही जाब्या।

30दुट्ट मनई अँधियारा स न बच पाई। उ उ बृच्छ क नाई होइ जेकर सबइ डारन आगी स झउँस गइ अहइँ। परमेस्सर क साँस दुट्टन क उड़ा देइ।

31दुट्ट लोग बेकार क चिजियन क भरोसे रहिके आपन क मूरख न बनावइँ काहेकि ओका कछू प्राप्त न होइ पाई।

32दुट्ट मनई समइ स पहिले ही मरि जाब। उ पचे उ बृच्छ क नाई होइ जाइ जेकर चोटी क डारन मरि गवा ह।

33दुट्ट मनई उ अंगूरे क बेल क नाई होत ह जेकर फल पाकइ स पहिले ही झरि जात हीं। अइसा मनई जइतून क बृच्छ क नाई होत ह, जेकर फूल सारि जात हीं।

34काहेकि परमेस्सर क बगइर लोग खाली हाथ रइहिं। अइसे लोग जेनका पइसन स पियार अहइ, घूस लेत हीं। ओनकर घर आगी स नस्ट होइ जइहीं।

35उ पचे मूसीबत क कुचक्र रचत हीं अउर बुरे करम करत हीं। उ पचे लोगन क छलइ क तरकीब क योजना बनावत हीं।”

अय्यूब एलीपज क जवाब देत ह

16 एह पइ अय्यूब जवाब देत भए कहेसः
2“मई पहिले ही इ सबइ बातन क बहोत बार सुनेउँ ह। तू “आरामदेइवाला लोग” सचमुच सिरिफ मोका तंग करत ह!

3तोहार बेकार क लम्बी बातन कबहुँ खतम नाही होतिन। तू काहे तर्क करत ही रहत ह?

4जइसे तू कहत अहा वइसे बातन तउ मई भी कहइ सकत्या। अगर तू पचन्क मोर दुःख झेलइ क पड़त, मई भी तोहार खिलाफ तर्क देइ सकत हउँ अउर तोहार अपमान कइ सकत्या।

5मुला मई आपन बचनन स तोहार हिम्मत बढ़ाइ सकत्या अउर तोहरे बरे आसा बँधाइ सकत्या।

6मुला जउन कछू मई कहत हउँ ओहसे मोर दुःख दूर नाही होइ सकत। मुला अगर मई कछू भी न कहउँ तउ भी मोका चइन नाही पड़त।

7पुरइ हे परमेस्सर तू मोर सक्ती क हर लिहा ह। तू मोर सारा घराने क बर्बाद कइ दिहा ह।

8तू मोर सरिर क झूरीदार बनाइ दिहेस ह, अउर इ मोर खिलाफ गवाही दिहेस ह। मई खउफनाक देखौत हउँ अउर लोग अइसा सोचत हीं कि मई बुराइ करइ क कारण अपराधी हउँ।

9परमेस्सर मोह पइ प्रहार करत ह। उ मोह पइ कोहान अहइ। उ मोरी देह क फारिके अलगाइ दिहेस ह। परमेस्सर मोरे ऊपर दौत पीसत ह। मोर दुस्मन घिना स भरी निगाह स घूरत हीं।

10लोग मोर हँसी करत हीं। उ पचे सबहिँ मोर खिलाफ इकट्ठा होत ह अउर मोरे मुँह क थपड़ावत ह।

11परमेस्सर मोका दुट्ट लोगन क हाथे में अर्पण कइ दिहे अहइ। उ दुट्ट मनई मोहे पइ सक्ती दिहेस ह।

12मोरे संग सब कछू भला चंगा रहा। तबहिँ परमेस्सर मोका कुचर दिहेस। हाँ, उ मोका गटई स धइ लिहेस अउर मोर चिथरा चिथरा कइ डाएस। परमेस्सर मोका निसाना बनाइ लिहेस।

13परमेस्सर क तीरंदाज मोरे चारिहुँ कइँती अहइँ। उ मोरे गुर्दन क बाणन स बेधत ह। उ मोहे पइ दया नाही देखावत ह। उ मोरे पित्त क धरती पइ बहाइ देत ह।

14परमेस्सर मोह पइ बार बार वार करत ह। उ मोह पइ अइसे झपटत ह जइसे कउनो फउजी जुद्ध में नाही झपटत ह।

15मई बहोत ही दुःखी हउँ। एह बरे मई विलाप क ओढ़ना पहिरत हउँ। मई हिआँ धूलि में बइठा भवा हउँ अउर हरा भवा अनुभव करत हउँ।

16मोर मुँह रोवत बिलखत भए लाल भवा। मोरी आँखिन क खाले करिया घेरा अहई।

17मई कउनो क संग कबहुँ भी क्रूर नाहीं भएउँ। मुला इ सबइ बुरी बातन मोरे संग घटित भइन। मोर पराथनन सही अहई।

18हे भुइयाँ, तू कबहुँ ओन अत्याचारन क जिन छिपाया जउन मोरे संग कीन्ह गवा अहई। मोर निआउ क बिनती क तू कबहुँ रुकइ जिन द्या।

19अब तलक भी होइ सकत ह कि हुआँ आकास मँ कउनो तउ मोरे पच्छ मँ होइ। कउनो ऊपर अहइ जउन मोका देख स रहित सिद्ध करी।

20मोर मीत मोर बारे मँ बोलत अहई, जब मई आसा स रोवत रही कि परमेस्सर मोर मदद करब।

21मोर इच्छा अहइ कि कउनो एक मोर अउर परमेस्सर क बिचउली करी जइसे कउनो एक मनई अउर परोसी क बीच बिचउली करत ही।

22कछू ही बरिस बाद मई हुआँ चला जाब जहाँ स फुन मई कबहुँ वापस न आउब।

17 मोर जिउने कि इच्छा नस्त कीन्ह ग अहइ। मोर प्राण लगभग जाइ चुका अहइ। कब्र मोर बाट जोहत अहइ।

2लोग मोका घेर लेत हीँ अउर मोह पइ हँसत हीँ। मई ओनका लखत हउँ जब लोग मोर अपमान करत हीँ।

3परमेस्सर, मोर बेकसूर होइ क पुस्टि करा। मोर निर्दोष होइ क गवाही देइ बरे कउनो तइयार नाहीं होइ।

4मोरे मीतन क मन तू मूँद ल्या ह। एह बरे उ पचे जीत नाहीं सकब।

5लोग जउन कहत ह उ तू जानत ह, 'मनई आपन मीत क मदद करइ बरे आपन गदेलन क नज़र अन्दाज़ करत ह।'

6परमेस्सर मोर नाउँ हर कउनो बरे अपसब्द बनाएस ह अउर लोग मोरे मुँह पइ थूका करत हीँ।

7मोर आँखी लगभग आँधर होइ चुकी अहइ काहेकि मई बहोत दुःखी हउँ। मोर देह एक छाया क तरह दुर्बाल होइ चुकी अहइ।

8नीक लोगन ब्याकुल अहई कि इ घटि सकत ह। निरअपराध लोग ओन क खिलाफ उत्तेजित अहइ। जउन परमेस्सर क मज़ाक उड़ावत ह।

9मुला सज्जन नेकी क जिन्नगी जिअत रइहीं। निरापराधी लोग सक्तिसाली होइ जइहीं।

10जदि तू लउटि आउब्या, तउ आवा। किन्तु मई दिखाउब कि तू पचन मँ स कउनो बुद्धिमान नाहीं अहई।

11मोर जिन्नगी यो ही बीतन अहइ। मोर सबइ जोजना टूट गइ अहई अउर आसा चली गइ अहइ।

12हरेक चीज क उलझा दीन्ह ग ह, उ पचे रात क दिन कहत ह अउर प्रकास अँधियारा लिआवत ह।

13मई आसा करउँ कि कब्र मोर घर अउ अँधियारा मोर बिछउना होइ।

14अगर मई कब्र स कहउँ 'तू मोर बाप अहा,' अउर कीरा स 'तू मोर महतारी अहा,' या 'तू मोर बहिन' अहा।

15अगर उ मोर सिरिफ एक ठु आसा अहइ तबइ तु कउनो आसा मोका नाहीं अहइ अउर कउनो भी मनई मोरे बरे कउनो आसा नाहीं लखि सकत ह।

16का मोर आसा भी मोरे संग मरि जाइ? का मई अउर मोर आसा एक संग कब्र मँ मिलिहीं?"

अय्यूब क बिल्दद क जवाब

18 फिन सूहू प्रदेस क बिल्दद जवाब देत भए कहेस।
2"अय्यूब, इ तरह क बातन करब तू कब तज देब्या? तोहका चुप रहइ चाही अउर सुनइ चाही, सिरिफ तब ही हम कहि सकित ह।

3तू काहे इ सोचत ह कि हम ओतँना मूरख अही जेतना मूरख एक ठु बर्धा होत ह?

4अय्यूब, तू आपन किरोध स आपन ही नोस्कान करत अहा। का लोग भुइँया बस तोहरे बरे तजि देई? का तू इ सोचत अहा कि बस तोहका तृप्त करइ क परमेस्सर धरती क हलाइ देई।

5हाँ, बुरा मनई क प्रकास बुझी अउर ओकर आगी क लौ न चमकी।

6ओकरे घरे क प्रकास करिया पड़ि जाइ अउर जउन दिया ओकरे लगे अहइ उ बुझ जाइ।

7सत्तीसाली मनई क कदम धीमे स बढ़त ह। आपन ही बुरा जोजनन स उ पतन क झेलब्या।

8ओकर आपन ही कदम ओका एक जाल क फंदा मँ गिराइ देईहीं। उ चलि के जालि मँ जाई अउर फँस जाई।

9कउनो जाल ओकर एड़ी क पकड़िके धइ लेइ। एक ठु जाल ओका कसिके जकर लेइ।

10एक रस्सा ओकरे बरे धरती मँ छुपा रही। कछू फंदा ओकरे राहे मँ झूठ बोलब्या।

11ओकरे चारिहुँ कइँती सबहिँ आतंक होइ। ओकर हर कदम क डर पाछा करत रही।

12खउफनाक मुसीबतन ओकरे बरे भुखान होई। जब उ गिरी, विध्वंस ओकरे बरे तइयार रइहीं।

13महा बियाधि ओकरे चमड़ी क हीसन क लील जाई। उ ओकरी बाँहिन अउ ओकर हँगिन क सड़ाइ देइ।

14आपन घरे क सुरच्छा स दुट्ठ व्यक्ति क दूर कीन्ह जाइ। आतंक क राजा क लगे ओका लइ जावा जाइ।

15ओकरे घरे मँ तब तलक कछू भी न बची जब तलक ओकरे समूचइ घरे मँ धधकत भइ गन्धक बिखेरी जाइ।

16ओकर खाले गइ भइ जड़न झुराइ जइहीं अउर ओकरे ऊपर क डारन मुरझाइ जइहीं।

17धरती क लोग ओका याद नाहीं करिहीं। बस अब कउनो भी ओका याद नाहीं करी।

18प्रकास स ओका हटाइ दीन्ह जाइ अउर उ अँधियारा मँ ढकेला जाइ। उ पचे ओका दुनिया स दूर भगाइ देईहीं।

19ओकर कउनो गदेलन अउ सन्तानन नाहीं होइहीं। ओकरे घरे मँ कउनो जिअत नाहीं बची।

20पच्छिम क लोग सहमा रहि जइहीं जब उ पचे जानिहीं कि उ दुट्ठ मनइयन क संग का घटेस ह। पूरब मँ लोग आतंकित होइके सन्न रहि जइहीं।

21फुरइ दुर्जन व्यक्ति क घरे क संग अइसा ही घटी। अइसा ही घटी उ मनई क संग जउन परमेस्सर क नाहीं जानतेन।”

अय्यूब क जवाब

19 तब अय्यूब जवाब देत भए कहेस।
2“कब तलक तू पचे मोका सतावत रहब्या अउर सबदन स मोका ताइत रहब्या?

3अब लखा, तू पचे दसउ दाई मोका बेज्जत किहा ह। मोह पइ वार करत तू पचन्क सर्प नाहीं आवति ह।

4अउर जदि मइ कउनो बुराई किहेउँ तउ इ मोर गल्टी अहइ।

5तू पचे इहइ चाहत अहा कि तू पचे मोहसे उल्लिम देखौंउन। तू पचे कहत अहा कि मोर कस्ट मोका दोखी साबित करत हीं।

6मुला उ तउ परमेस्सर अहइ जउन मोरे संग बुरा किहस ह अउर जउन मोरे चारिहुँ कइँती आपन फंदा फइलाएस ह।

7मई गोहरावत हउँ ‘मोरे संग बुरा किहा ह।’ मुला मोका कउनो जवाब नाहीं मिलत ह। चाहे मई निआउ क गुहार गोहरावउँ मोर कउनो नाहीं सुनत ह।

8मोर रस्ता परमेस्सर रोकेस ह, एह बरे ओका मई पर नाहीं कइ सकत। उ अँधियारा मँ मोर रस्ता छुपाइ दिहस ह।

9मोर सम्मान परमेस्सर छोर लिहस ह। उ मोरे मूँड स मुकुट छोर लिहस ह।

10परमेस्सर मोर पूरा सरीर मँ मोर प्राण निकरि तलक मारब। उ मोर आसन क अइसे उखाड़ देत ह जइसे कउनो जइ स बृच्छ क उखाड़ि देइ।

11मोरे खिलाफ परमेस्सर क किरोध भइकत अहइ। उ मोका आपन दुस्मन कहत ह।

12परमेस्सर आपन फउज मोह पइ प्रहार करइ क पठवत ह। उ पचे मोरे चारिहुँ कइँती बुर्जियन खरा करत हीं। उ पचे मोरे तम्बू क चारिहुँ कइँती छावनी बनावत हीं।

13परमेस्सर मोरे बन्धुअन क मोर दुस्मन बनाइ दिहेस। आपन मीतन बरे मई पराया होइ गएँ।

14मोर रिस्तेदारन मोका तजि दिहन। मोर मीतन मोका बिसराइ दिहन।

15मोरे घरे क अतिथियन स लइके मेहरारू नउकरन तलक मोरे संग अइसा बेउहार करत ह जइसा मई कउनो अजनबी अहउँ।

16मई आपन नउकर क बोलावत हउँ पर उ मोर नाहीं सुनत ह। उ पचे मोका मदद बरे भीख माँगाएस ह।

17मोर पत्नी मोरे साँस क गंध स घिना करत ह। मोर आपन ही गदेलन मोहसे घिना करत हीं।

18नन्ह गदेल तलक मोर हँसी उड़ावत हीं। जब कबहुँ मई जागत हउँ, तउ उ पचे मोरे खिलाफ बोलत हीं।

19मोर आपन मीत मोहसे घिना करत हीं। हिआँ तलक कि अइसे लोग जउन प्रिय अहइँ, मोर बिरोधी होइ गवा अहइँ।

20मई ऐतना दुर्बल अहउँ जइसे मई सिरिफ खाल अउर हाइन होइ गवा अहउँ। अब मई सिरिफ जिअत हउँ।

21हे मोर मीतो मोह पइ दया करा, दया करा मोह पइ काहेकि परमेस्सर क हाथ मोहका छू गवा अहइ।

22काहे मोका तू भी सतावत अहा जइसे मोका परमेस्सर सताएस ह? काहे तू मोका दुख देत भए कबहुँ अघात्या नाहीं?

23जउन मई कहत हउँ ओका कउनो क याद राखइ चाही अउ किताबे मँ लिख देइ चाही! मोर सब्द कउनो क गोल पत्रक पइ लिख देइ चाही!

24मई जउने बातन क कहत ओनका कउनो लोहा क कलम स सीसा पइ लिखा जाइ चाही या ओनका चट्टाने पइ खोद दीन्ह जाइ चाही ताकि उ हमेसा बरे रहइ जाइ।

25मोका इ जानत हउँ कि कउनो एक अइसा अहइ जउन मोर बरे बोलब्या अउर मोर रच्छा करब्या। मोका बिस्सास अहइ कि आखीर मँ उ धरती पइ खड़ा होब्या अउर मोरे बचाव करब्या।

26मोरे आपन देह छोड़इ अउर मोर चमड़ी तबाह होइक पाछे भी मई जानत हउँ कि मई परमेस्सर क लखब।

27मई परमेस्सर क खुद आपन आँखिन स लखब। मई खुद स कउनो दूसर नाहीं, परमेस्सर क लखब। मई बता नाहीं केतँना खुसी अनुभव करत हउँ।

28होइ सकत ह तू कहा, ‘हम अय्यूब क तंग करब। मई मामला क जइ तलक जाब।’

29मुला तोहका तरवारे स डरइ चाही, काहेकि परमेस्सर किरोधित होब्या अउर तोहका तरवार स सजा देब्या। अउर तब तू पचन्क समझब्या कि हुआँ निआउ क एक निहचित समइ अहइ।”

सोपर क जवाब

20 एह पइ नामात प्रदेस क सोपर जवाब दिहस।
2“अय्यूब, धियान द्या। मई परेसानी मँ हउँ। यह बरे मई हाली तोहका बताएँ क कि मई का सोचत हउँ।

अतोहार आलोचना हमार अपमान करत हीं। मुला मई बुद्धिमान हउँ अउर जानत हउँ कि तोहका कइसे जवाब दीन्ह जाइ चाही।

4-5एका तू तब स जानत ह जब बहोत पहिले लोगन क धरती पइ पठवा ग रहा, दुट्ट मनई क आनन्द बहोत दिन नाहीं टिकत ह। अइसा मनई जेका परमेस्सर क चिन्ता नाहीं अहइ उ तनिक समइ बरे आनन्द मँ भरि जात ह।

6चाहे दुट्ट मनई क अपमान अकासे तलक छू जाइ।
7उ आपन तने क मल क नाई नस्ट होइ जाइ। उ सबइ लोग जउन ओका जानत हीं कइहीं, ‘उ कहाँ अहइ?’

8उ अइसे बिलाइ जाइ जइसे सपन हाली ही कहुँ उड़ जात ह। फिन कबहुँ कउनो ओका लिखि नाहीं सकी, उ नस्ट होइ जाइ, ओका राति क सपना क तरह हँक दीन्ह जाइ।

9उ सबइ मनई जउन ओका लखे रहेन फुन कबहुँ नाहीं लखेन। ओकर परिवार फुन कबहुँ ओका नाहीं लिखि पाइ।

10जउन कछू भी उ (दुट्ट) गरीबन स लिहे रहा ओकार संतानन चुकइहीं। ओनका आपन ही हाथन स धन लौटाए होइ।

11जब उ जवान रहा, ओकर सरीर मजबूत रही, मुला उ हाली ही धूलि होइ जाइ।

12दुस्ट क मुँह क दुस्तता बड़ी मीठी लागत ह, उ ओका आपन जिभिया क खाले छुपाइ लेइ।

13बुरा मनई उ बुराई क धामे रही, ओकर दूर होइ जाब ओका कबहुँ नाहीं भाई, तउ उ ओका आपन मुँहे में थामे रही।

14मुला ओकरे पेटे में ओकर भोजन जहर बन जाइ, उ ओकरे भीतर अइसे बन जाइ जइसे कउनो नाग क विख सा कडुवा जहर।

15दुस्ट धन दौलत क लील जात ह मुला उ ओन सबका बाहेर उगिली। परमेस्सर दुस्ट क पेटे स ओन सबका उगालिवाइ।

16दुस्ट मनई क विख चूसब सॉपि क नाई होइ। मुला सॉपि क विसैला जीभ ओका मारि डइहीं।

17मुला दुस्ट मनई लखइ क आनन्द नाहीं लेइहीं अइसी ओन नदियन क जउन सहद अउर मलाई बरे बहा करत ह।

18दुट्ट क ओकर लाभ वापिस करइ क दबावा जाइ। ओका ओन चिजियन क आनन्द नाहीं लेइ दीन्ह जाइ जेनके बरे उ मेहनत किहे अहइ।

19काहेकि उ दुस्ट मनई दीन मनई क चिन्ता नाहीं किहस। बलकि, उ दूसर लोगन क घसन क भी लइ लिहसे जेका उ पचे आपन बरे बनाएस रहा।

20दुस्ट मनई कबहुँ संतुट्ट नाहीं होत ह। उ आपन सबहि धन क लइ ले जात ह।

21जब उ खात ह तउ कछू नाहीं तजत ह, तउ ओकर कामयाबी बनी नाहीं रही।

22जब दुस्ट जन क लगे भरपूर होइ तबहि ओन पइ विपत्ती आइहीं अउर उ कस्ट क अनुभव करिहीं।

23दुस्ट जन उ सब कछू खाइ चुकी जेका उ खाइ चाहत ह। परमेस्सर आपन बरत भवा किरोध ओह पइ डाइ। उ दुस्ट मनई पइ परमेस्सर सजा बरसाइ।

24होइ सकत है कि उ दुस्ट लोहा क तरवार स बच निकरइ, मुला कहुँ स काँसा क बाण ओका मार गिरावइ।

25तीर खींचत लिहसे ह, अउर बिजुरि क नाई ओकरे पीठ में घुसत ह अउर ओकर करेजा बाहर आ जात ह, अउर उ आंतकित होइके काँप उठत ह।

26ओकर सबहि खजाना नस्ट होइ जइहीं, एक तु अइसी आगी जेका कउनो नाहीं बोरेस ओका नस्ट करी, उ आगी ओनका जउन ओकरे घरे में बचा अहइँ नस्ट कइ डाइ।

27सरग सिद्ध करी कि उ दुस्ट अपराधी अहइ, इ गबाही धरती ओकरे खिलाफ देइ।

28जउन कछू भी ओकरे घरे में अहइ, उ परमेस्सर क किरोध क बाढ़ में बहि जाइ।

29इ उहइ अहइ जेका परमेस्सर दुस्टन क संग करइ क योजना रचत ह। इ उहइ अहइ जइसा परमेस्सर ओनका देइ क योजना बनावत ह।”

अय्यूब क जवाब

21 एह पइ अय्यूब जवाब देत भए कहेस।
2“तू पचे चित्त दइके सुना जउन मई कहत हउँ, तोहार सुनइ क आपन तरिके स मोर दिलासा होइ जाइ।

3जब मई बोलत हउँ तू धीरा धरा, “फुन जब मई बोल चुकउँ तब तू मोर हँसी उड़ाइ सकत ह।

4मोर सिकाइत मनइयन क खिलाफ नाहीं अहइ, मई काहे सहनसील नाहीं अहउँ ओकर खास वजह अहइ।

5तू मोका लखा अउर चकित होइ जा, आपन सोक दिखाइ बरे आपन हाथ आपन मुँहे पइ धरा।

6जब मई सोचत हउँ ओन सब क जउन मोर संग घटा तउ मोका डर लागत ह अउर मोर देह थर थर काँपत ह।

7काहे बुरे लोगन क उमर लम्बी होत ह? काहे उ पचे बुढ़ाइ जात हीं अउर कामयाब होत हीं?

8बुरे लोग आपन संतानन क आपन संग बढ़त भए लखत हीं। बुरे लोग आपन आपन नाती पोतन क लखइ क जिअत रहत हीं।

9ओनकर घर सुरच्छित रहत हीं अउर उ पचे डेरातेन नाहीं। परमेस्सर दुस्टन क सजा देइ बरे आपन सजा काम में नाहीं लाआवत ह।

10ओकर सौँड कबहुँ भी मिला कइ में नाहीं चुकत ह। ओनकर गइयन बछवन क जनम देइ बरे गाभिन होत। ओनकर भ कबहुँ नाहीं गिरत हीं।

11बुरे लोग गदेलन क बाहेर खेलइ पठवत हीं मेमनन क जइसे, ओनकर गदेलन नाचत हीं चारिहुँ ओर।

12मजीरा, वीणा अउर बाँसुरी क धुन पइ उ पचे गावत हीं अउर नाचत हीं।

13बुरे लोग आपन जिन्नगी भइ कामयाबी क आनन्द लेत हीं। फुन बिना दुख भोगे उ पचे मरि जात हीं अउर आपन कब्रन क बीच चला जात हीं।

14मुला बुरे लोग परमेस्सर स कहा करत हीं, ‘हमका अकेला तजि द्या। अउर एकर हमका परवाह नाहीं कि तू हमसे कइसा जिन्नगी जिअइ चाहत ह।’

15दुट्ट लोग कहा करत हीं, ‘सर्वसक्तीमान परमेस्सर कउन अहइ? हमका ओकरी सेवा क जरूरत नाहीं अहइ। ओकरी पराथना करइ क कउनो लाभ नाहीं।’

16दुस्ट मनई सोचत हीं कि ओनका आपन ही कारण कामयाबी मिलत ह, मुला मई ओनकर विचारन क नाहीं अपनाइ सकत हउँ।

17मुला का अइसा होत ह कि दुस्ट जन क प्रकास बुताइ जावा करत ह? केतनी दाई दुस्टन क दुःख घेरा करत हीं? का परमेस्सर ओनसे कोहाइ जात ह, अउर ओनका सजा देत ह?

18का परमेस्सर दुस्ट लोगन क अइसे उड़ावत ह जइसे हवा तिनके क उड़ावत ह अउर तेज हवा अनाजे क भूसा उड़ाइ देत हीं?

19मुला तू कहत ह: ‘परमेस्सर एक गदेलन क ओकरे बाप क पापन्क सजा देत ह।’ नाहीं, परमेस्सर क चाही कि बुरे जन क राजा देइ। तबहिं उ बुरा मनई जानी कि ओका ओकरे निज पापन बरे सजा मिलति अहइ।

20तू पापी क ओकरे आपन राजा क देखौंइ द्या, तब उ सर्वसक्तीसाली परमेस्सर क कोप क अनुभव करी।

21जब बुरा मनई क उमर क महीना खतम होइ जात हीं अउर उ मर जात ह; उ उ परिवार क परवाह नहीं करत जेका उ पाछे तजि जात ह।

22कउनो मनई परमेस्सर क गियाण नहीं दइ सकत, उ ऊँच ओहदन क लोगन क भी निआउ करत ह।

23एक पूरा अउ सफल जिन्गी क जिअइ क पाछे एक मनई मरत ह, उ एक सुरच्छित अउ सुखी जिन्गी जिअत ह।

24ओकर लगे पिवइ बरे भरपूर दूध रहा। अब समइ तलक ओकर हाइ तन्दुरुस्त रहिन।

25मुला कउनो एक अउर मनई कठिन जिन्गी क पाछे दुःख भरे मने स मरत ह, उ जिन्गी क कबहुँ कउनो रस नहीं चखेस।

26इ सबइ दुइनउँ मनई एक संग माटी मँ गइ सोवत हीं, किरउनन दुइनउँ क एक संग ढँपि लेइहीं।

27मुला मई जानत हउँ कि तू का सोचत अहा, अउर मोका पता अहइ कि तोहरे लगे मोरा बुरा करइ क कुचाल अहइ।

28मोरे बरे तू इ कहा करत ह, 'अब कहीं बाटइ उ महामानुस क घर? कहीं बा उ घर जेहमँ उ दुस्ट रहत रहा?'

29-30मुला तू कबहुँ बटोहियन क नहीं पूछ्या? का तू ओकर कहानियन पइ बिस्सास नहीं किहस कि उ दिन जब परमेस्सर कोहाइके सजा देत ह दुस्ट मनई सदा बच जात ह?

31अइसा कउन मनई नहीं जउन ओकरे समन्वा ही ओकरे करमन क बुराइ करइ। ओकरे पाप क सजा कउनो मनई ओका नहीं देत ह।

32जब कउनो मनई कब्र मँ लइ जावा जात ह, तउ ओकरे कब्र क लगे एक पहरवा खइ रहत ह।

33उ दुट्ट मनई बरे उ घाटी क माटी मुलायम होइ। अनगिनत लोग ओकर समन्वा कब्र मँ गएन ह, अउर भविस्स मँ अउर भी लोग ओहस मिली।

34तउ आपन कोरे सबदन स तू मोका चइन नहीं दइ सकत्या, तोहार जवाब सिरिफ झूठा अहइ।"

एलीपज क जवाब

22 फुन तेमान क एलीपज जवाब देत भए कहेस।
2"परमेस्सर क कउनो भी मनई सहारा नहीं दइ सकत, हिअँ तलक कि उ भी जउन बहोत बुद्धिमान मनई होइ परमेस्सर बरे हितकर नहीं होइ सकत।

3अगर तू उहइ किहा जउन उचित रहा एहसे सर्वसक्तीमान परमेस्सर क आनन्द नहीं मिली, अउर अगर तू खरा रहा हवा तउ एहसे ओका पछू नहीं मिली।

4अय्यूब तोहका परमेस्सर काहे सजा देत ह अउर काहे तोह पइ दोख लगावत ह? का इ एह बरे कि तू भक्त अहा।

5नाहीं, इ सबइ एह बरे कि तू बहोत स पाप किहा ह, अय्यूब, तोहार पाप नहीं रुकत अहइ।

6अय्यूब, होइ सकत ह कि तू आपन कउनो भाई क कछू चिज बिना कउनो कारण क गिरवी रख सकत ह। होइ सकत ह कि तू कउनो दीन मनइ क ओढ़ना रख लिहे हवा अउर ओनका नंगा बना किहे हवा।

7तू थके-मँदे लोगन क पानी नहीं दिहा, तू भुखान मनइयन क भोजन नहीं दिहा।

8अय्यूब, अगर तू सक्तीसाली अउ धनी रह्या, तू ओन लोगन क सहारा नहीं दिहा। तू बड़का जमींदार अउ समरथ वाला मनई रह्या।

9मुला तू रँइ अउरतन क बगइर कछू दिहे लउटाइ दिहा। अय्यूब, तू अनाथ गदेलन क लूट लिहा अउर ओनसे बुरा बेउहार किहा।

10एह बरे तोहरे चारिहुँ कइँती जाल बिछा भवा अहइ अउर तोहका एकाएक आवत विपत्तियन डेरावत हीं।

11एह बरे घना अँधियारा तोहका ढँक लिहस ह अउर एह बरे बाढ़ क पानी तोहका लीलत बाटइ।

12परमेस्सर अकास क सब स ऊँच हींसा मँ रहत ह। उ आपन जगह स सबन स ऊँच तारन क लखइ बरे खाले लखत ह।

13मुला अय्यूब, तू कहा करत ह, 'परमेस्सर कछू नहीं जानत, करिमा बादरन स कइसे परमेस्सर हमका जाँच सकत ह?'

14घना बादर ओका छुपाइ लेत हीं, एह बरे जब उ अकास क सबन त ऊँच हींसा मँ बिचरत ह तउ हमका ऊपर अकासे स लखि नहीं सकत।

15अय्यूब, तू उ ही पुरानी राह पइ जेन पइ दुस्ट लोग चला करत हीं, चलत अहा।

16आपन मउत क समइ स पहिले ही दुट्ट लोग मर गएन। बाढ़ ओनका बहाइके लइ गइ रही।

17इ सबइ उहइ लोग अहइ जउन परमेस्सर स कहत हीं, 'हमका अकेल्ले तजि द्या। उ पचे सोचेन कि सर्वसक्तीमान परमेस्सर हमार कछू नहीं कइ सकत ह।'

18मुला परमेस्सर ओन लोगन क कामयाब बनाएस ह अउर ओनका धनवान बनाइ दिहा। मुला मई उ ढंग स जेहसे दुस्ट सोचत हीं, अपनाइ नहीं सकत हउँ।

19सज्जन जब बुरे लोगन क नास देखत हीं, तउ उ पचे खुस होत हीं। पाप स रहित लोग दुस्टन पइ हँसत हीं, अउर कहा करत हीं।

20'हमार दुस्मन फुरइ नस्ट होइ गएन। आगी ओनके धने क बारि देत ह।'

21अय्यूब, अब खुद क तू परमेस्सर क अर्पित कइ द्या, तब तू सान्ति पउब्या। अगर तू अइसा करा तउ तू धन्य अउर कामयाब होइ जाब्या।

22ओकर सीख अपनाइ ल्या अउर ओकरे सब्द आपन मने मँ सुरच्छित रखा।

23अय्यूब, अगर तू फुन सर्वसक्तीमान परमेस्सर क लगे आवा तउ फिन स पहिले जइसा होइ जाइ। तोहका अपने घरे स पाप क बहोत दूर करइ चाही।

24तोहका सोना क धूरी क नाई अउर ओफीर क सोना क नदी क तराई क चट्टान क नाई समझइ चाही।

25तब सर्वसक्तीमान परमेस्सर तोहरे बरे सोना अउर चाँदी बन जाइ।

26तब तू बहोत खुस होब्या अउर तोहका सुख मिली। परमेस्सर क समन्वा तू बिना कउनो सर्प क मूँड़ि उठाइ सकब्या।

27जब तू ओकर बिनती करब्या तउ उ तोर सुना करी, जउन प्रतिग्या तू ओहसे किहे रह्या, तू ओका पूरा कइ सकब्या।

28जउन कछू तू करब्या ओहमाँ तोहका कामयाबी मिली, तोहरे रास्ते पइ प्रकास चमकी।

29परमेस्सर अहंकारी जन क लज्जित करी, मुला परमेस्सर नम्र मनई क रच्छा करी।

30परमेस्सर जउन मनई भोला नाहीं अहइ ओकर भी रच्छा करी, तोहरे हाथन क सफाई स ओका उद्धार मिली।”

अय्यूब जवाब देत ह

23 फिन अय्यूब जवाब देत भए कहेस।

2“मई आजु भी बुरी तरह सिकाइत करत हउँ कि परमेस्सर मोका करी सजा देत अहइ, एह बरे मई सिकाइत करत रहत हउँ।

3कास! मई इ जान पावत कि ओका कहीं हेरउँ। कास! मई इ जान पावत कि परमेस्सर क लगे कइसे जाउँ।

4मई आपन मुकद्मा क सफाई परमेस्सर क समन्वा पेस करब्यु। मई आपन क निर्दोख साबित करइ बरे बहस करब्या।

5मई इ जानइ चाहत हउँ कि परमेस्सर कइसे मोरे दलीलन क जवाब देत ह, तब मई परमेस्सर क जवाब समुझ पउतेउँ।

6का परमेस्सर आपन महासक्ती क संग मोरे खिलाफ होत? नाहीं! उ मोर सुनी।

7मई एक नेक मनई हउँ। परमेस्सर मोका आपन कहानी क कहइ देइ, तब मोर निआउ कत्ती परमेस्सर मोका अजाद कइ देइ।

8मुला अगर मई पूरब क जाउँ तउ परमेस्सर हुआ नाहीं अहइ अउर अगर मई पच्छिउँ क जाउँ तउ भी परमेस्सर मोका नाहीं देखत ह।

9परमेस्सर जब उत्तर मँ छिपत ह* तउ मई ओका देख नाहीं पावत हउँ। जब परमेस्सर दक्खिन क छिपत ह तउ भी उ मोका नाहीं देखत ह।

10मुला परमेस्सर मोरे हर चरण क लखत ह, जेका मई उठावत हउँ। जब उ मोर परीच्छा लइ उठी तउ उ लखी कि मोहमाँ कछू भी बुरा नाहीं अहइ, उ लखी कि मई खरा सोना जइसा अहउँ।

11परमेस्सर जउन चाहत ह मई हमेसा उहइ पइ चलत हउँ मई कबहुँ भी परमेस्सर क राहे पइ चलइ स नाहीं रुकेहउँ।

12मई हमेसा उहइ बात करत हउँ जेनकर आसा परमेस्सर देत ह। मई आपन मुँहे क भोजन स जियादा परमेस्सर क मुँहे क सब्दन स पिरम किहेउँ ह।

13मुला परमेस्सर एक मन वाले अहा, अउर कउनो भी ओका बदल नाहीं बदलत। परमेस्सर जउन चाहत ह उहइ करत ह।

14परमेस्सर जउन भी योजना मोरे विरोध मँ बनाइ लिहस ह उहइ करी, ओकरे लगे मोरे बरे अउर भी बहोत सारी योजना अहइ।

15एह बरे मई ओसे डेरात हउँ। एह बरे परमेस्सर मोका भयभीत करत ह।

16परमेस्सर मोर हिरदइ क दुर्बल करत ह अउर मोर हिम्मत टूट जात ह। सर्वसक्तीमान परमेस्सर मोका भयभीत करत ह।

17अगर तउ मोर मुँह सघन अँधियारा ढकत ह तउ भी अँधियारा मोका चुप नाहीं कइ सकत ह।

24 “सर्वसक्तीमान परमेस्सर काहे नाहीं निआउ करइ बरे समइ मुकरर करत ह? लोग जउन परमेस्सर क मानत हीं ओनका काहे निआउ क समइ क बेकार बाट जोहइ क पड़त ह?

2“लोग आपन धन दौलत क चीन्हन क, जउन ओकर चउहद्दी बतावत हीं, सरकावत रहत हीं ताकि आपन पड़ोसी क थोड़ी अउर धरती हड़प लेइँ। लोग पसु क चोराइ लेत हीं अउर ओनका दूसर चरागाहन मँ हाँक लइ जात हीं।

3अनाथ बच्चन क गदहन क उ पचे चोराइ लइ जात हीं। उ पचे रँड़ मेहरारुअन क बर्धन खोल लइ जात हीं जब तलक कि उ ओनकर कर्ज नाहीं चुकावत हीं।

4उ पचे दीन जन क मजबूर करत हीं कि उ तजिके दूर हटि जाइके मजबूर होइ जात ह, एन दुस्टन स खुद क छुपावइ क।

5उ सबइ दीन लोग ओन जंगली गदहन जइसे अहइँ जउन मरु भूमि मँ आपन चारा हेरा करत हीं। गरीबन अउ ओनकर बच्चन क मरुभूमि भोजन देत रहत ह।

6गरीब लोगन क कउनो दूसर क खेत मँ अनाज काटइ चाही। दुस्टन क अंगूरन क बगियन स बच भवा फलन उ पचे चुना करत हीं।

7दीन लोगन क बगइर ओढ़नन क सबइ रात बितावइ क होइ। सर्दी मँ ओनके लगे आपन क ढाँकइ बरे कछू नाहीं होइ।

8उ पचे बर्खा स पहाड़न मँ भीज गवा अहइँ, ओनका बड़की चट्टानन स लिपट क रहइ क होइ, काहेकि ओनके लगे कछू नाहीं जउन ओनका मौसम स बचाइ लेइ।

9बुरे लोग ओन गदेलन क जेकर बाप नाहीं अहइ ओनकइ महतारी स छिन लेत हीं। उ पचे गरीब लोगन क आपन दास बनावत हीं।

10गरीब लोगन क लगे ओढ़ना नाहीं होत हीं। यह बरे ओन लोगन क नंगा ही घूमइ क होइ। उ पचे दुस्टन क गठरी क भार ढोवत हीं, मुला फुन भी उ पचे भुखान रहत हीं।

11गरीब लोग जइतून क तेल पेरिके निकारत हीं। उ पचे कुंडन मँ अंगूर सूँदत हीं फुन भी उ पचे पिआसा रहत हीं।

12मरत भए लोग जउन आहें भरत हीं उ सबइ सहर में सुनाइ पड़त ह। सतावा भवा लोग सहारा क पुकारत हीं, मुला परमेस्सर नाहीं सुनत ह।

13कछू अइसे लोग अहई जउन प्रकास क खिलाफ होत हीं। उ पचे नाहीं जानइ चाहत हीं कि परमेस्सर ओनसे का करवावइ चाहत ह। परमेस्सर क राह पइ उ पचे नाहीं चलत हीं।

14हत्यारा भिंसारे जाग जात ह गरीबन अउ जरुरतवाले लोगन क हत्या करत ह। उ राति में चोर क नाई बन जात ह।

15उ मनई जउन बिभिचार करत ह, रात आवइ क बाट जोहा करत ह, उ सोचत ह 'ओका कउनो नाहीं लखी' अउर उ आपन मुँह ढँपि लेत ह।

16दुट्ट मनई जब रात में अँधेरा होत ह तउ सेंधे लगाइके घरे में घुसत हीं। मुला दिन में उ पचे आपन हि घरन में छुपा रहत हीं। उ पचे प्रकास स बचत हीं।

17ओन दुट्ट लोगन क अँधियारा सबुह क नाई होत ह, उ पचे आतंक अउ अँधियारा क मीत होत हीं।

18दुट्ट लोग अइसे बाहइ दीन्ह जात हीं जइसे झाग बाढ़ क पानी पाइ। उ धरती अभिसाप स ढकी बा जेकर उ पचे मालिक अहई। कउनो भी अंगूर क बगियन में अंगूर जमा करइ बरे नाहीं जात ह।

19जइसे गरम व सूखा मौसम पिघलत बरफ क पानी क सोख लेत ह, वइसे ही दुस्ट लोग कब्र क जरिये लील जइहीं।

20दुस्ट मनइयन मरइ क पाछे ओकर महतारी तलक ओका बिसरि जाइ। दुस्ट लोगन क देह क कीरा खाइ जइहीं। कउनो भी ओन लोगन क याद नाहीं रखइहीं। दुस्ट जन गिरे भए बृच्छ क नाई नष्ट कीन्ह जइहीं।

21दुस्ट मनइ बाँझ मेहरारुअन क सतावा करत हीं। उ पचे उ तरह क मेहरारु क दुःख देत हीं। उ पचे कउनो भी रँड अउरत बरे दया नाहीं देखँवत हीं।

22दुस्ट मनई आपन सक्ती क उपयोग बलसाली क नस्ट करइ बरे करत हीं। बुरे लोग सक्तीसाली होइ जइहीं मुला आपन ही जिन्नगी क भरोसा नाहीं होइ कि उ पचे जियादा दिन जी पइहीं।

23होइ सकत ह कि तनिक समइ बरे परमेस्सर सक्तीसाली क सुरच्छित रहइ देइ, मुला परमेस्सर सदा ओन पइ आँखी रखत ह।

24दुस्ट मनई तनिक समइ बरे कामयाबी पाइ जात हीं, मुला फुन उ पचे नस्ट होइ जात हीं। दूसर लोगन क तरह उ पचे भी मुझी जात ही अउर उदास होइ जात हीं। अनाजे क कटी भइ बाले क नाई उ पचे गिर जात हीं।

25अगर इ सबइ बातन फुरइ नाहीं अहई तउ कउन सिध्द कइ सकत ह कि मई झूठ कहेउँ ह। कउन देखँइ सकत ह कि मोर सब्द सतय नाहीं अहई?"

2"परमेस्सर सासक अहइ अउर हर मनई क चाही कि परमेस्सर स डेराइ अउर ओकर मान करइ। परमेस्सर आपन सरग क राज्ज में सान्ति रखत ह।

3कउनो आपन फउजन क गन नाहीं सकत ह, परमेस्सर क प्रकास सब पइ चमकत ह।

4मुला फुरइ परमेस्सर क अगवा कउनो मनई उचित नाहीं ठहर सकत ह। कउनो मनई जउन मेहरारु स पइवा भवा होइ फुरइ निर्देख नाहीं होइ सकत ह।

5परमेस्सर क आँखिन क समन्वा चाँद तलक चमकीला नाहीं अहइ। परमेस्सर क आँखिन क समन्वा तारन निर्मल नाहीं अहई।

6मनई तउ बहोत कम भला अहई। मनई तउ बस कीरा अहइ एक तु अइसा कीरा जउन बेकार क होत ह।"

अय्यूब क बिल्दद क जवाब

26 तब अय्यूब कहेस।

2"हे बिल्दद, सोपर अउर एलीपज जउन लोग दुर्बल अहई तू फुरइ ओनका सहारा दइ सकत ह। अरे हों, तू दुर्बल बाँहन क फुन स सक्तीसाली बनाया ह।

3हों, तू निर्बुध्दि क सम्मति दिहा ह। कइसा महागियान तू देखँया ह।

4इ बातन क कहइ में कउन तोहार मदद किहस? केकर आतिमा तोहका प्रेरणा दिहस?

5जउन लोग मरि गवा अहई ओनकर आतिमा धरती क खाले पानी में भय स बहोत काँपति अहई।

6मउत क जगह परमेस्सर क आँखी क समन्वा खुली अहइ, परमेस्सर क अगवा विनास क जगह ढका नाहीं अहइ।

7परमेस्सर उत्तरी अकासे क खाली जगह पइ फइलावत ह। परमेस्सर खाली जगह में धरती लटकाएस ह।

8परमेस्सर घने बादरन क पानी स भरत ह, मुला पानी क भारी भार स बादरन क फाटइ नाहीं देत ह।

9परमेस्सर पूरा चन्द्रमा क ढँपत ह, परमेस्सर चाँद पइ आपन बादर फइलावत ह अउर ओका ढँकि लेत ह।

10परमेस्सर छितिज क रचत ह प्रकास अउ अँधेरा क सीमा रेखा क रुप में समुदर पइ।

11जब परमेस्सर डौंटत ह तउ उ सबइ नेवंन जउने पइ आकास टिका अहइ डर स काँपइ लागत हीं।

12परमेस्सर क सक्ती सागर क सांत कइ देत ह। परमेस्सर क बुद्धि राहब* क नस्ट किहस।

13परमेस्सर क साँस अकास क साफ कइ देत ह। परमेस्सर क हाथ उ साँप क मारि दिहस जउन पराइ जाइ क जतन किहस।

14इ सबइ तउ परमेस्सर क अजूबा कारजन क तनिक सी बातन अहई। बस हम थोड़के परमेस्सर क अवाज क फुसफुसाहट क सुनित ह। मुला फुरइ कउनो मनई परमेस्सर क सक्ती क गर्जन क नाहीं समुझ सकत ह।"

बिल्दद क अय्यूब क जवाब

25 फिन सूह प्रदेस क निवासी बिल्दद जवाब देत भए कहेस।

27 फुन अय्यूब कहइ क जारी राखेस। उ कहेस,
 2¹“फुरइ परमेस्सर जिअत ह अउर इ जेतँना सच
 अहइ कि परमेस्सर जिअत ह फुरइ उ वइसेन ही मोरे बोर
 अनिआउ स भरा रहा अहइ। हौं! सर्वसक्तीसाली परमेस्सर
 मोरे जीवन में कइवाहट भरेस ह।

3¹मुला जब तलक मोहमाँ प्राण अहइ अउर परमेस्सर क
 साँस मोहे में अहइ।

4¹तब तलक मोरे होंठ झूठी बातन नाहीं बोलिहीं, अउर
 मोर जिभिया कबहुँ झूठ नाहीं बोली।

5¹मई कबहुँ न मानब कि तू लोग सही अहा। जब
 तलक मई मरब उ दिन तलक कहत रहब कि मई निर्दोष
 हउँ।

6¹मई आपन धार्मिक भाव क मजबूती क थामे रहब। मई
 कबहुँ उचित करम करब न तजब मोर चेतना मोका तंग
 नाहीं करी जब तलक मई जिअत हउँ।

7¹मोरे दुस्मनन क दुस्ट जइसा बनइ द्या, अउर ओनका
 सजा पावइ द्या जइसे दुस्ट लोग दण्डित होत हीं।

8¹अइसे उ मनई बरे मरत वक्त कउनो आसा नाहीं अहइ
 जउन परमेस्सर क परवाह नाहीं करत ह। जब परमेस्सर
 ओकर प्राण लेइ तब भी ओकरे बरे कउनो आसा नाहीं
 अहइ।

9¹जब उ बुरा मनई दुःखी पड़ी अउर ओका पुकारी,
 परमेस्सर नाहीं सुनी।

10¹ओका चाही कि उ उ आनन्द क चाहइ जेका सिरिफ
 सर्वसक्तीमान परमेस्सर देत ह। ओका चाही कि उ हर समइ
 परमेस्सर स पराधना करत रहा।

11¹मई तोहका परमेस्सर क सक्ती सिखाउब। मई
 सर्वसक्तीसाली परमेस्सर क योजनन क नाहीं छिपाउब।

12¹खुद तू आपन अँखिन स परमेस्सर क सक्ती लख्या ह,
 तउ काहे तू बेकार क बातन क बोलत ह?

13¹दुस्ट लोगन बरे अइसी जोजना बनाया ह। दुस्ट लोगन
 क सर्वसक्तीसाली परमेस्सर स अइसा ही मिली।

14¹दुस्ट क चाहे केतँनी ही सन्तानन होइँ, मुला ओकर
 संतानन जुद्ध में मारी जइहीं। दुस्टन क सन्तानन कबहुँ
 भरपेट खाना नाहीं पइहीं।

15¹अउर अगर दुस्टन क सन्तानन ओकरी मउत क पाछे
 भी जिअत रहइँ तउ महामारी ओनका मारि डई। ओकर रँड
 ओनके बरे दुःखी नाहीं होइहीं।

16¹दुस्ट जन चाहे चाँदी क ढेर बटोरइँ, एतना बड़का ढेर
 जेतँना माटी क ढूहा होत ह, माटी क ढूहन जइसे ओढ़ना
 होइँ ओकरे लगे।

17¹जउने ओढ़नन क दुस्ट मनई जुटावत रहा ओन ओढ़नन
 क सज्जन पहिरी, दुस्ट क चाँदी निर्दोखन में बँटी।

18¹दुस्ट क बनावा घर जियादा दिनन नाहीं टिकत ह, उ
 मकड़ी जाल जइसा या कउनो चौकीदार क झोपड़ी जइसा
 कमजोर होत ह।

19¹दुस्ट लोग आपन खुद क दौलत क संग आपन
 बिछउना पइ सोवइ जात ह, मुला एक अइसा दिन आइ जब
 उ फुन बिस्तरे में वइसे ही नाहीं जाइ पाई। जब उ आँखी
 खोली तउ ओकर सम्पत्ति जाइ चुकी होइ।

20¹दुःख ओका बाढ़ क जइसा ढाँक लेइहीं, रातउ रात
 तूफान ओका उड़ाइ लइ जाइ।

21¹पुर वइया हवा ओका दूर उड़ाइ देइ, तूफान ओका
 ओकरे घरे क बाहेर खींचली।

22¹तू फान ओह पइ बगैर दया किए भए पइ आइ अउर
 उ ओमें स दूर भागइ क जतन करी। मुला लपेटके मारी।

23¹जब दुस्ट मनई पराई, लोग ओह पइ तालियन बजाइहीं,
 दुस्ट जन जब निकरिगे पराई, अपने घरे स तउ लोग ओह
 पइ सीटियन बजइहीं।

28 “हुआँ चाँदी क खान बाटइ जहाँ लोग चाँदी पावत
 हीं, हुआँ अइसे ठउर अहइँ जहाँ लोग सोना
 देघराइके ओका सुद्ध करत हीं।

2¹लोग धरती स खनिके तोहा निकारत हीं, अउर चट्टानन
 स टेघराइके ताँबा निकारत हीं।

3¹लोग सबइ गुफा में प्रकास लिआवत हीं उ पचे सबइ
 गुफा क गहिराइ में हेरा करत हीं, घना अँधियारा में उ पचे
 खनिज क चट्टानन हेरत हीं।

4¹जहाँ लोग रहत हीं ओहसे बहोत दूर लोग गहिर गइहा
 खना करत हीं, कबहुँ कउनो अउर एँन गइहन क नाहीं
 छुएस। जब मनई गहिर गइहन में रस्सन स लटकत ह, तउ
 उ दूसरन स बहोत दूर होत ह।

5¹भोजन धरती क सतह स मिला करत ह, मुला धरती क
 भीतर उ बढ़त जावा करत ह जइसे आगी चिजियन क बदल
 देत ह।

6¹धरती क भितरे चट्टानन क खाले नीलम मिलि जात हीं,
 अउर धरती क खाले माटी आपन आप में सोना रखत ह।

7¹जंगली पंछी धरती क खाले क राहन नाहीं जानत हीं न
 ही कउनो बाज इ मारग लखत ह।

8¹उ राहन पइ कउनो बड़का डीलडोल वाला पसु नाहीं
 चलेन, कबहुँ सेर इ राहे पइ नाहीं विचरेन।

9¹मजदूर सब स कठोर चट्टानन क खनत हीं अउर उ
 पचे पहाड़न क ओकर जइ स खनिके गिरा देत हीं।

10¹काम करइवालन चट्टानन स सुरंग काटत हीं उ
 पचन्क आँखन हुआँ खजानन क लखि लेत हीं।

11¹काम करइवालन बाँध बनवा करत ही कि पानी ऊपर
 स होइके न बहइ। उ पचे छिपी भइ चिजियन क ऊपर
 प्रकास में बिआवत हीं।

12¹मुला कउनो मनई विवेक कहाँ पाइ सकत ह? अउर
 हम कहाँ जाइ सकित ह समुझ पावइ क?

13¹गियान कहाँ रहत ह लोग नाहीं जानत हीं, लोग जउन
 धरती पइ रहत हीं, ओमें इ नाहीं पाइ जात ह।

14¹सागरे क गहराइ बतावत ह, ‘मोह माँ गियान नाहीं।’
 अउर समुद्र कहत ह, ‘हिआँ मोहमाँ गियान नाहीं अहइ।’

15¹गियान क बहोत कीमती सोना भी मोल नाहीं लइ
 सकत ह, गियान क दाम चाँदी स नाहीं गना जाइ सकत ह।

16¹गियान ओपीर देस क सोना स या कीमती सुलैमानी
 पाथर या नीलमगियान स नाहीं बेसहा जाइ सकत ह।

17¹गियान सोना अउ स्फटिक स जियादा कीमती बाटइ,
 कउनो मनई बहोत कीमती सोना स जड़े भए रत्नन स गियान
 नाहीं बेसहि सकत ह।

18 गियान मूँगा अउ सूर्यकान्त मणि स जियाद कीमती बा। गियान क कउनो मनई सिद्ध सोने में जुरे कीमती रतन स नहीं बेसहा सकत ह।

19 जेतना उत्तिम गियान अहइ कूस देस क पद्मराग भी ओतना उत्तिम नहीं अहइ। गियान क तू चोख सोना स मोल नहीं लइ सकत्या।

20 तउ फुन हम कहाँ गियान क पावइ जाइ? हम कहाँ समुझ सीखइ जाइ?

21 गियान धरती क हर मनई स लुका भवा अहइ। हिअँ तलक कि ऊँच अकास क पंछी भी गियान क नहीं लखि पावत हीं।

22 मउत अउ विनास कहा करत हीं, 'हम तउ बस गियान क बातन सुनी ह।'

23 मुला बस परमेस्सर गियान तलक पहोंचइ क राहे क जानत ह। परमेस्सर जानत ह गियान कहाँ रहत ह।

24 परमेस्सर गियान क जानत ह काहेकि उ धरती क अखिरी छोर तलक लखा करत ह। परमेस्सर उ हर वस्तु क जउन अकास क खाले अहइ लखा करत ह।

25 जब परमेस्सर हवा क ओकर सकती दइ दिहस अउर इ निहचित किहस कि समुदरन क केतना बड़का बनावइ क अहइ।

26 अउर जब परमेस्सर निहचय किहस कि ओका कहाँ स बर्खा पठवइ क अहइ, अउर बउडरन क कहाँ तलक जात्रा करइ क अहइ।

27 तब परमेस्सर गियान क लखे रहा। उ ओका मापेस, ओका साबित किहसे अउर इका परखेस।

28 अउर लोगन स परमेस्सर कहे रहा कि 'यहोवा क भय माना अउर ओका आदर दया।' बुराइयन स मुँह मोड़ि लेब ही गियान अहइ, इहइ समझदारी अहइ।"

अय्यूब आपन बात जारी रखत ह

29 आपन बात क जारी रखत भए अय्यूब कहेस।
2 "मोर जिन्नगी वइसे ही होइ चाही रही जइसे गुजरे महीने में रही। जब परमेस्सर मोर खवारी करत रहा, अउर मोर धियान रखत रहा

3 मई अइसे उ समइ क इच्छा करत हउँ जब परमेस्सर क प्रकास मोरे मूँडे पइ चमचमात रहा। मोका प्रकास देखौवइ क उ समइ जब मई अँधियारा स होइके चलत रहेउँ।

4 अइसे ओन दिनन क इच्छा करत हउँ, जब मोर जिन्नगी सफल रही, अउर परमेस्सर मोरे निचके मीत रहा। उ सबइ अइसेन दिन रहेन जब परमेस्सर मोरे घरे क असीसे रहा।

5 अइसे समइ क मई इच्छा करत हउँ, जब सर्वसक्तीसाली परमेस्सर अबहुँ तलक मोरे संग में रहा अउर मोरे संग मोर गदेलन रहेन।

6 अइसा लगा करत रहा कि दूध-दही क नदियन बहा करत रहिन, अउर मोरे बरे चट्टानन जइतून क तेल क नदियन उड़ेरत रहिन।

7 इ सबइ ओ दिन रहेन जब मई नगर क दुआर अउर गलीयन क चौराहन पइ जात रहेउँ, अउर नगर नेता लोगन क संग बइठत रहेउँ।

8 हुवाँ सबइ लोग मोर सम्मान किहा करत रहेन। जवान मनसेधू जब मोका लखत रहेन तउ मोरी राह स हट जावा करत रहेन अउर बुढ़वा मनसेधू मोरे बरे सम्मान देखौवइ बरे उठ खड़ा होत रहेन।

9 जब लोगन क नेता लोग मोका लखि लेत रहेन, तउ बोलब बंद कइ देत रहेन।

10 हिअँ तलक कि बहोतइ महत्ववाले नेता भी आपन स्वर हल्का कइ लेत रहेन, जब मई ओनके नियरे जात रहेउँ। हीं! अइसा लागत रहा कि ओनकर जिभियन ओनकर तालु स चिपक गइ होइँ।

11 जउन कउनो भी मोका बोलत सुनेस, मोरे बारे में नीक बात कहेस, जउनो कउनो भी मोका लखे रहा, मोर बड़कई किहे रहा।

12 काहेकि जब कउनो दीन मदद बरे गोहँराएस, मई मदद किहेउँ। उ गदेलन क मई सहारा दिहेउँ जेकरे महतारी बाप नहीं अउर जेकर कउनो भी नहीं धियान रखइ क।

13 मोका मरत भए मनई क आसीस मिला, मई ओन रँड मेहररुअन क जउन जरुरत में रहिन, मई सहारा दिहेउँ अउर ओनका खुस किहेउँ।

14 मोर ओढ़ना पहिरब मोर खरी जिन्नगी रही, निस्पच्छ होब मोर चोगा अउर मोर पगड़ी सी रही।

15 मई अँधरन बरे अँखी बन गएउँ अउर मई ओनकर गोड़ बनेउँ जेनकर गोड़ नहीं रहेन।

16 दीन लोगन बरे मई बाप क तरह रहेउँ, मई पच्छ लेत रहेउँ अइसे अनजानन क जउन विपत्तियन में पड़ा रहेन।

17 मई दुस्ट लोगन क सकती नस्ट करत रहेउँ। निर्दोख लोगन क मई दुस्टन स अजाद करावत रहेउँ।

18 मई सोचत रहेउँ कि मई बहोत लम्बी जिन्नगी* जिअब अउर फुन आपन ही घरे में प्राण तजब।

19 मई एक तु अइसा बृच्छ बनब जेकर जड़न सदा जल में रहत होइँ अउर जेकर डारन सदा ओस स भीजी रहत होइँ।

20 मोर सान सदा ही नई बनी रही, मई सदा ही वइसा बलवान रहब जइसे, मोरे हाथे में एक नवा धनुस।

21 पहिले, लोग मोर बात सुनत रहत रहेन, अउर उ सबइ जब मोर सलाह मसवरा क इंतजार करत रहेन, तउ चुप रहा करत रहेन।

22 मोर चुकइ क पाछे, ओन लोगन क लगे जउन मोर बात सुनत रहेन, कछू भी बोलइ क नहीं होत रहा। मोर सब्द धीरे धीरे ओनकर काने में बर्खा क तरह पइ जात रहेन।

23 लोग जइसे बर्खा क बाट जोहत हीं वइसे ही उ पचे मोरे बोलइ क बाट जोहा करत रहेन। मोरे सब्दन क उ पचे पी जावा करत रहेन, जइसे मोर सब्द बसन्त में बरसा होइ।

24 जब मई दाया करइ क ओन पइ मुस्कात रहेउँ, तउ ओनका पहिले पहल ए पइ बिस्सास नहीं होत रहा। फुन मोर खुस मुँह दुखी जन क सुख देत रहा।

लम्बी जिन्नगी सम्भवतः ओतना ही लम्बी जिन्नगी जेतना कि एक टू अमर पंछी जिअत ह।

25मई जिम्मेदारी बिहेउँ अउर लोगन बरे पइसला किहेउँ, मई नेता बन गएँ। मई ओनकर सोना क दलन क बीच राजा जइसा जिन्गी जिएँ। मई अइसा मनई रहेउँ जउन लोगन क चइत देत रहा जउन बहोत ही दुःखी बाटइ।

30 अब, उमर मँ छोटा लोग मोर मसखरी करत हीं। ओन जवान मनसेधुअन क बाप बिल्कुल ही निकम्मा रहेन। ओन कूकुरन जउन मोर भेड़िन क रखवाण करत ह ओन लोगन स बेहतर अहई।

2ओन जवान मनसेधुअन क बाप मोका मदद देइ क कउनो सक्ती नाहीं राखत हीं, उ पचे बुढ़वा होइ चुका अहई अउ थका भवा अहई।

3उ सबइ मनई भूख स मरत अहई यह बरे उ पचे झुरान अउर उजाड़ धरती खावत ह।

4उ सबइ लोग रेगिस्तान मँ खारे पउधन क उखाड़त हीं अउर उ पचे झाड़ीदार बृच्छन क जड़न क खात हीं।

5उ पचन्क दूसर लोगन स भगाइ दइ गएन। उ पचे ओन लोगन पइ अइसे गोहरावत हीं जइसे लोग चोर पइ गोहरावत हीं।

6अइसे उ सबई बुढ़वा लोग झुरान भइ नदी क तलन मँ चट्टानन क सहारे अउ धरती क बिलन मँ रहइ क मजबूर अहई।

7उ पचे झाड़ियन क बीच गुराँत हीं। कँटेहरी बृच्छन क नीचे उ पचे आपुस मँ बटुर जात हीं।

8ओन पचन्क फसादी लोगन क दल अहइ, जेनकर नाउँ तलक नाहीं अहइ। ओनका आपन भुइँया तजि देइ क मजबूर कीन्ह गवा अहइ।

9अब अइसे ओन लोगन क पूत मोर हँसी उड़ावइ क मोरे बारे मँ गीत गावत हीं। मोर नाउँ ओनके बरे अपसब्द जइसा बन गवा अहइ।

10उ सबइ नउजवान मोहसे घिना करत हीं। उ पचे मोसे दूर खड़ा रहत हीं। हिआँ तलक कि उ पचे मोरे मुँहे पइ थूकत हीं।

11परमेस्सर मोरे धनुस स ओकर डोर छोर लिहस ह अउर मोका दुर्बल किहस ह। उ पचे मोह पइ कोहान होत भए मोरे खिलाफ होइ जात ह।

12उ सबइ जवान मोर दाहिनी कइँती स मोह पइ प्रहार करत हीं। उ पचे मोर गोड़न पइ हमला कइके मोका गिरावत ह अउर मोका चारिहुँ कइँती स घेर लेत ह।

13उ पचे नव जवान मोरी राह पइ निगरानी रखत हीं कि मई बचिके निकरिके पराइ न सकउँ। उ पचे मोका नस्ट करइ मँ सफल होइ जात हीं। ओनके खिलाफत मँ मोर मदद करइ क मोरे संग कउनो नाहीं अहइ।

14उ पचे मोह पइ अइसे वार करत हीं जइसे कि सहर क दिवार क दरार स होत ह। उ पचे टुटे हुए हिस्से स अन्दर आवत हीं।

15मोका भय जकड़ लेत ह। जइसे हवा चिजियन क उड़ाइ लइ जात ह, वइसेन ही उ पचे जवान मोर इज्जत धुवस्त करइ देत हीं। जइसे बादर अदृश्य होइ जात ह, वइसे ही मोर सुरच्छा अदृश्य होइ जात ह।

16जब मोर जिन्गी बीतइ क अहइ अउर मई हाली ही मर जाब। मोका संकट क दिन दहबोच लिहे अहई।

17मोर सबइ हाड़न राति क दुख देत हीं, पीरा मोका चबाव नाहीं छोड़त ह।

18मोरे कोट क गिरेबान क परमेस्सर बड़ी ताकत स धरत ह, उ मोरे लिबास क ताकत स पकड़ लेत ह।

19परमेस्सर मोका कीचं मँ बहाइ दिहस अउर मई माटी व राखी स बनत हउँ।

20हे परमेस्सर, मई सहारा पावइ क तोहका गोहरावत हउँ, मुला तू उत्तर नाहीं देत ह। मई खड़ा होत हउँ अउ पराथना करत हउँ, मुला तू मोह पइ धियान नाहीं देत्या।

21हे परमेस्सर, तू मोर बरे निर्दयी होइ गवा अहा, तू मोका नोस्कान पहोंचावइ क आपन सक्ती क प्रयोग करत अहा।

22हे परमेस्सर, तू मोका तेज आँधी स उड़ाइ देत ह। तू मोका तू फाने क बीच मँ डाल देत ह।

23मई जानत हउँ तू मोका मोर मउत कइँती लइ जात अहा जहाँ आखीर मँ हर कउनो क जाब अहइ।

24मुला इ निहचय ह कि तू कउनो मनई जउन मदद बरे गोहरावत ह, ओन स नाहीं मुड़त ह।

25हे परमेस्सर, तू तउ जानत ह कि मई ओनके खातिर रोएँ जउन संकट मँ पड़ा अहई। तू तउ इ जानत ह कि मोर मन गरीब लोगन बरे बहोत दुखी रहत रहा।

26मुला जब मई भला चाहत रहा, तउ बुरा होइ जात रहा। मई प्रकास हेरत रहेउँ अउर आँधियारा छाड़ जात रहा।

27मई भितरे स फट गवा हउँ अउर इ अइसा अहइ कि संकट कबहुँ नाहीं थम जात। अउर जियादा संकट आवइ क अहइ।

28मई सोक क ओढ़ना पहिनके माना बगइर सूरज की गर्मी स करिया होइ गना हूँ। मई सभा क बीच मँ खड़ा होत हउँ, अउर मदद क गोहरावत हउँ।

29मई जंगली कूकुरन क भइया अउर सुतुरमुर्ग क मीत होइ गवा हउँ।

30मोर चमड़ी करिया पड़ि गइ बाटइ। मोर तन बुखारे स तपत बाटइ।

31मोर वीणा करुण गीत गावइ क सधी बाटइ अउर मोर बाँसुरी स दुःख क रोवइ जइसे स्वर निकरत हीं।

31 “मई आपन आँखिन क संग एक समझौता किहेउ ह कि उ सबइ कउनो लड़िकी क वासना क निगाह स न लखहीं।

2सर्वसक्तीमान परमेस्सर लोगन क संग कइसा करत ह? उ कइसे आपन ऊँच सरगे क घरे से ओनकर करमन क प्रतिफल देत ह?

3परमेस्सर दुस्त लोगन बरे सकंठ अउ विनास पठवत ह, अउर जउन बुरा करम करत हीं ओनके बरे बर्बादी पठवत ह।

4मई जउन भी करत हउँ परमेस्सर जानत ह। अउर मोरे हर कदम क उ लखत ह।

5अउर मई झूठी जिन्गी जिया हउँ या झूठ बोलिके लोगन क मूर्ख बनाए हउँ,

6तउ उ मोका खरी तरजू स तौलेइ, तब परमेस्सर जान लेइ कि मई निरपराध हउँ।

7अगर मई खरा रास्ता स हटा होउँ, अगर मई आपन आप क बुरे लालसा में लइ गइ होइ या अगर मई आपन हाथ क पवित्तर नहीं राखत हईं,

8तउ मोर उपजाई भइ फसल दूसर लोग खाइ जाई अउर मोर फसलन क उजारिके लइ जाई।

9अगर मई मेहररुअन बरे कामुक रहा होउँ, या अगर मई आपन पड़ोसी क दुआरे क ओकरी पत्नी क संग व्यभिचार करइ क बरे ताकत रहा होउँ,

10तउ मोर पत्नी दूसर लोगन क भोजन बनावइ अउर ओकरे संग दूसर लोग सोवईं।

11काहेकि यौन पाप लज्जा स भरा होत ह? इ अइसा पाप अहइ जेका निहचय ही सजा पावइ चाही।

12व्यभिचार उ पाप क समान अहइ, जउन बारत अउ बर्बाद कइ डावत ह। मोरे लगे जउन कछू भी अहइ बिभिचार क पाप ओका बारि डाइ।

13-14“अगर मई आपन दास-दासियन क समन्वा उ समइ निस्पच्छ नहीं रहेउँ जब ओनका मोसे कउनो सिकाइत रही। तउ जब मोका परमेस्सर क समन्वा जाइ क होइ, तउ मई का करब? जब उ मोका मोरे करमन क सफाई माँगइ बोलाइ तउ मई परमेस्सर क का जवाब देब?

15परमेस्सर मोका अउर मोरे सेवकन क हमरी आपन-आपन महतारी क गर्भ में बनाएस ह।

16मई कबहुँ भी दीन जन क मदद क मना नहीं किहेउँ। मई रौंइ मेहररुअन क सहारे क बिना नहीं रहइ दिहेउँ।

17मई स्वार्थी नहीं रहेउँ। मई आपन भोजन क संग अनाथ बच्चन क भूखा नहीं रहइ दिहेउँ।

18मई अइसे गदेलन क जेनके बाप नहीं अहईं, मई बाप जइसा रहेउँ ह। मई जिन्नगी भइ रौंइ मेहररुअन क धियान रखेउँ ह

19जब मई कउनो क एह बरे कस्ट भोगत भए पाएउँ ह कि ओकरे लगे ओढ़ना नहीं अहइ, या मई कउनो दीन क बगैर कोट क पाएउँ।

20तउ मई सदा ओन लोगन क ओढ़ना देत रहेउँ, मई ओनका गरम राखइ क मई खुद आपन भेड़िन क ऊन बइपरेउँ, तउ उ पचे मोका समूचइ मने स असीसत रहेन।

21मई कउनो अनाथे क खिलाफ कबहुँ आपन हाथ नहीं उठाएस जब कबहुँ मई ओका सहर क फाटके पइ मदद माँगत भए निहारेउँ।

22अगर मइ अइसा किहेउँ तउ मोर काँधा आपन जगह स छूट कइ गिर जाइ अउर मोर बाजू आपन जोड़ स अलग होइ जाइ।

23मुला मई तउ ओनमाँ स कउनो बुरा करम नहीं किहेउँ। मई परमेस्सर क दण्ड स डेरात हउँ। मई ओकरी तेजस्विता स डेरात हउँ।

24मई कबहुँ आपन धन दौलत क भरोसा नहीं किहेउँ, अउर मई कबहुँ नहीं चोरखा सोने स कहेउँ कि ‘तू मोर आसा अहा।

25मई धने स सम्पन्न रहेउँ। मुला मई ओसे घमण्डी नहीं भाएउँ। मई खूबइ धन कमाएउँ। मुला उहइ नहीं जेहसे मई आनन्दित भाएउँ।

26मई कबहुँ नहीं चमकत सूरज क पूजा किहेउँ या मई सुन्नर चाँद क पूजा नहीं किहेउँ।

27मई कबहुँ भी आपन हाथ क चूम कइ सूरज अउर चाँद क पूजा करइ क मूरखता नहीं किहा रहा।

28अगर मई एनमाँ स कछू किहेउँ तउ उ मोर पाप होइ अउ मोका सजा मिलइ। अगर मई ओन बातन क पूजा किहे होतेउँ तउ सर्वसक्तीसाली परमेस्सर क अबिस्सासी होइ जातेउँ।

29“जब मोर दुस्मन बर्बाद भएन तउ मई खुस नहीं भाएउँ। जब मोरे दुस्मनन क दुख-मुसीबत डाली गवा, तउ मई ओकर बरे खूस नहीं भवा।

30मई आपन मुँह खोलिके आपन दुस्मनन क सरापत भए पाप नहीं किहेउँ अउ मई ओकरे मोत क इच्छा नहीं कहेस।

31मोरे घरे क सबहि लोग जानत ही कि मई सदा अजनबी लोगन क खइया क दिहेउँ।

32मई सदा अजनबी लोगन क घरे में बोलाएउँ, ताकि ओनका राति में गलियन में सोवइ क न पड़इ।

33दूसर लोग आपन पापे क छुपावइ क जतन करत हीं, मुला मई आपन दोख कबहुँ नहीं छुपाएउँ।

34मई कबहुँ नहीं डेराउँ कि लोग का कहत रहत हीं। मई कबहुँ चुप नहीं रहेउँ अउ मई आपन घर स बाहेर जाइ बरे कबहुँ नहीं डेरउँ।

35कास! कउनो होत जउन मोर सुनत। मोका आपन बात अपनी कइँती स समझावइ द्या। कास! सक्तीसाली परमेस्सर मोका अउर कास उ ओन बातन क लिखत जउन मई ओकरी निगाहे में गलत किहे रहेउँ।

36काहेकि फुरइ ही मई उ लिखावट आपन खुद क काँधे पइ धइ लेब अउर मई ओका मुकुट क तरह मूँडे पइ धइ लेब।

37“अगर परमेस्सर किहेस तउ जउन कछू मई किहेउँ ह, मई ओका परमेस्सर क समुझाउब। मई परमेस्सर क लगे आपन मूँडी उठाइके जाब, जइसे मई कउनो मुखिया होउँ।

38मई आपन भुइँया पइ कबहुँ बेगुनाह क खुन नहीं बहाया हउँ एँह बरे मोर मिट्टी या मोर धरती क खिलाफ कबहुँ आवाजा नहीं उठाएस।

39मई हमेसा मजदूरन क फसल काटइ बरे ओनकर मजूरी दिहेउँ। मई कबहुँ भी ओकर मालिक स जबरदस्ती अनाज नहीं लिहेउँ।

40हाँ! एनमाँ स अगर कउनो भी बुरा काम मई किहे होउँ, तउ गोहूँ क जगह पइ काँटा अउर जौ क बजाय खर-पतवार खेतन में उग जाई।”

अय्यूब क सब्द खतम भएन।

एलीहू क वचन

32 फुन अथर्व क तीनउँ मीत अथर्व क जवाब देइ क जतन करब तजि दिहेन। काहे कि उ अपने नजर मँ सच्चा रहेन। 2हुआँ एलीहू नाउँ क एक मनई भी रहा। एलीहू बारकेल क पूत रहा। बारकेल बुज क निवासी रहा। एलीहू राम क परिवारे स रहा। एलीहू क अथर्व पइ बहोत किरोध आवा काहेकि अथर्व अपने आप क सही ठहराएस बजाय परमेस्सर क सही ठहरइ क। 3एलीहू अथर्व क तीनउँ मीतन स भी कोहान रहा काहेकि उ पचे तीनउँ ही अथर्व क सवालन क जुक्ति संगत जवाब नाहीं दइ पाए रहेन अउर इ साबित नाहीं कइ सकन कि अथर्व कसूरवार अहइ। 4हुआँ जउन लोग रहेन ओनमाँ एलीहू सबसे लहुरा रहा। एह बरे उ तब तलक बाट जोहत रहा जब तलक हर कउनो आपन आपन बात पूरी नाहीं कइ चुका। 5एलीहू जब इ लखेस कि अथर्व क तीनहुँ मीतन क लगे कहइ क अउर कछू नाहीं अहइ तउ ओका बहोत किरोध आवा। 6तउ बुज क निवासी बारकेल क पूत एलीहू आपन बात कहब सुरु किहस। उ बोला:

“मई लहुरा अहउँ अउर तू लोग मोहसे जेठ अहा, मई एह बरे तोहका उ बतावइ मँ डेरत रहेउँ जउन मई सोचत रहेउँ।

7मई मन मँ सोचेउँ, ‘बड़के क पहले बोलइ चाही, अउर ओका बुद्धि सिखाइ चाही।’

8मुला मनई मँ परमेस्सर क आतिमा बुद्धि देत ह अउर सर्वसक्तीसाली परमेस्सर क जरिये दिया भवा साँस मनई क गियान देत ह।

9उमर मँ जेठ मनई ही नाहीं गियानी होत हीं। का बस बड़ी उम्र क लोग ही इ जानत हीं कि उचित का अहइ?

10एह बरे मई जउन कछू जानत हउँ तोहका कहत हउँ। तू पचे मोर बात सुना मई तू पचन्क बताउब कि मई का सोचत हउँ।

11जब तलक तू लोग बोलत रह्या, मई बाट जोहत रहा। मई तोहार बुद्धि सुनइ चाही रहा। मई खामूस रह्या जब तू पचे बोलइ बरे सोच बिचार किहस।

12मई तोहरे मर्म स भरे सब्दन क अथर्व क उत्तर देइ खातिर धियान स सुनत रहेउँ। मुला तीनउँ ही इ सिद्ध नाहीं कइ पाया कि अथर्व बुरा अहइ। तोहमाँ स कउनो भी अथर्व क तर्कन क जवाब नाहीं दइ पावा।

13तू लोगन क इहइ नाहीं कहइ चाही कि तू पचे गियान क पाइ लिहा ह। लोग नाहीं, परमेस्सर निहचय ही अथर्व क तर्कन क जवाब देइ।

14मुला अथर्व मोरे खिलाफत मँ नाहीं बोलत रहा, एह बरे मई ओन तर्कन क प्रयोग नाहीं करब जेकर प्रयोग तू पचे तीनहुँ किहा ह।

15अथर्व, तोहरे तीनहुँ मीत असमंजस मँ पड़ा अहइँ, ओनके लगे कछू भी अउर कहइ क नाहीं अहइ, ओनके लगे जवाब दइ बरे अउर कछू नाहीं अहइ।

16इ सबइ तीनहुँ लोग हिआँ चुप खड़ा अहइँ अउर ओनके लगे जवाब नाहीं अहइ। तउ का अबहिं भी मोका प्रतीच्छा करइ चाही?

17नाहीं! मई भी आपन जवाब देब। मई भी बताउब तू पचन्क कि मई का सोचत हउँ।

18काहेकि मोरे लगे कहइ क बहोत अहइ। मोरे भितरे जउन आतिमा अहइ, उ मोका बोलइ क मजबूर करत ह।

19मई आपन भितरे अइसी नई दाखरस सा हउँ, जउन हाली ही बाहेर उफनइ क अहइ। मई उ नई दाखरस मसक जइसा हउँ जउन हाली ही फट जाइ क अहइ।

20तउ निहचय ही मोका बोलइ चाही, तबहिं मोका नीक लागी। आपन मुँह मोका खोलइ चाही अउर मोका अथर्व क सिकाइतन क जवाब देइ चाही।

21इ बहस मँ मई कउनो क पच्छ नाहीं लेबइँ अउ अथर्व क वइसे ही पच्छ लेबउँ जइसे दूसर क होइ चाही। मई कउनो क खुसामद न करब।

22मई नाहीं जानत हउँ कि कइसे कउनो मनई क खुसामद कीन्ह जात ह। अगर मई कउनो क खुसामद करइ जानत तउ हाली ही परमेस्सर ओका सजा देत।

33 “मुला अथर्व अब, मोर संदेस सुना। ओन बातन पइ धियान द्या जेनका मई कहत हउँ।

2मई आपन बात कहइ क तइयार हउँ। मई आपन सब्द चुनत हउँ।

3मोर मन सच्चा अहइ तउ मई सच सब्द बोलब। ओन बातन क बारे मँ जेनका मई जानत हउँ मई सच कहब।

4परमेस्सर क आतिमा मोका बनाएस ह, मोका सर्वसक्तीसाली परमेस्सर स जिन्नगी मिलत ह।

5अथर्व, सुना अउ मोका जवाब द्या अगर तू सोचत ह कि तू दइ सकत ह। आपन जवाबन क तइयार रखा ताकि तू मोहसे तर्क कइ सक्या।

6परमेस्सर क समन्वा हम दुइनउँ एक जइसे अहइँ, अउर हम दुइनउँ क ही उ माटी स बनाएस ह।

7अथर्व, तू मोहसे जिन डेरअ। मई तोहरे संग कठोर न होब।

8मुला अथर्व, मई सुनेउँ ह कि तू जउन कहा करत ह।

9तू इ कहे रह्या, ‘मई अथर्व, दोखी नाहीं हउँ, मई पाप नाहीं किहेउँ, या मई कछू भी अनुचित नाहीं करत हउँ।’

10अगर मई कछू भी अनुचित नाहीं किहेउँ, तउ भी परमेस्सर कछू खोट मोहमाँ पाएस ह। परमेस्सर सोचत ह कि मई अथर्व, ओकर दुस्मन हउँ।

11एह बरे परमेस्सर मोरे गोड़े मँ बेड़ी डावत ह, मई जउन कछू भी करत हउँ, उ लखत रहत ह।’

12मुला अथर्व, मई तोहका निहचय क संग बतावत हउँ कि तू इ बारे मँ गैर मुनासिब अहा। काहेकि परमेस्सर कउनो भी मनई स जियादा जानत ह।

13तू काहे सिकाइत करत अहा कि परमेस्सर तोहरे इलजाम जवाब नाहीं देत ह?

14मुला परमेस्सर निहचय ही हर उ बात क जेका उ करत ह स्पस्ट कइ देत ह। परमेस्सर अलग अलग रीति स बोलत ह मुला लोग ओका समुझ नाहीं पउतेन।

15-16होइ सकत ह कि परमेस्सर सपन मँ लोगन क काने मँ बोलत होइ, या कउनो दिव्यदर्शन मँ राति क जब उ

पचे आपन बिसतरा पड़ गहिर निदिया में होई। जब परमेस्सर क चितउनियन सुनत हीं तउ बहोतइ डर जात हीं।

17परमेस्सर मनइयन क बुरी बात करइ स रोकइ क होसियार करत ह, अउ ओनका अहंकारी बनवइ स रोकइ क।

18परमेस्सर मनइयन क मउत क देस में जाइ स बचावइ खातिर होसियार करत ह। परमेस्सर मनई क नास स बचावइ बरे अइसा करत ह।

19कउनो मनई परमेस्सर क वाणी तब सुन सकत ह जब उ बिस्तरे पड़ ओलरा होइ अउर परमेस्सर क सजा स दुःख भोगत होइ। उ मनई एँतनी गहिर पीरा में होता ह, कि ओकर हाइन दुःखत हीं।

20फुन अइसा मनई कछू खाइ नहीं सकत, उ मनई क एँतनी जियादा पीरा होत ह कि ओका सबन ते बढ़िया खइया क नहीं सोहात।

21ओकरे देहे क छय तब तलक होत जात ह, जब तलक उ कंकाल मात्र नहीं होइ जात, अउर ओकर सबइ हाइन नहीं देखींइ लग जातिन।

22अइसा मनई मउत क देस क निअरे होत ह, अउर ओकर जिन्गी मउत क निअरे होत ह।

23मुला होइ सकत ह कि कउनो सरगदूत, हजारन सरगदूत में स एक होइ जउन ओकरे उत्तिम चरित्तर क गवाही देइ।

24उ सरगदूत उ मनई पड़ दयालु होइ, उ दूत परमेस्सर स कही: 'महरबानी कइ क इ मनई क मउत क देस स बचा। एकर दाम चुकावइ क एक रस्ता मोका मिली गवा अहइ।'

25फिन मनई क देह जवान अउ खूब मजबूत होइ जाइ। उ मनई वइसा ही होइ जाइ जइसा उ तब रहा, जब उ जवान रहा।

26उ मनई परमेस्सर क स्तुति करी अउर परमेस्सर ओकरी स्तुति क जवाब देइ। फुन उ परमेस्सर क व्यक्तित्व में खुसी खुसी आइ जाब। अउर उ बहोत खुस होइ काहेकि परमेस्सर ओका ओकर ईमानदारी बरे बदला देहीं।

27फिन उ मनई मनइयन क समन्वा स्वीकार करी। उ कही: 'मई पाप किहे रहेउँ, भले क बुरा मई किहे रहेउँ, मुला मोका एहसे का मिला!

28परमेस्सर मउत क देस में गिरइ स मोर आतिमा क बचाएस। मई अउर जियादा जिअब अउर फुन स जिन्गी क रस लेब।'

29-30परमेस्सर मनई क संग ओका मउत क देस में दाखिल होवइ स रोक कइ अइसा बार-बार करत ह। अइसा मनई फिन जिन्गी क रस लेत ह।

31अय्यूब, धियान द्या अउर मोर बात सुना। तू चुप रहा अउर मोका कहइ द्या।

32अगर तोहार लगे कहइ बरे कछू अहइ तउ ओका कहा काहेकि मई तोहका निर्दोख लखइ चाहत हउँ।

33अय्यूब, अगर तोहका कछू नहीं कहइ क अहइ तउ तू मोर बात सुना। चुप रहा, मई तोहका बुद्धिमान बनवइ सिखाउबउँ।"

34 फिन एलीहू बात क जारी रखत भए कहेस:

2"अरे ओ गियानी मनइयो। तू पचे धियान स सुना जउन बातन मई कहत हउँ। अरे ओ चतुर लोगो, मोह पड़ धियान द्या।

3कान ओन सबन्क परखत ह जेनका उ सुनत ह, जइसेन जीभ जउने खइया क छुअति ह, ओकर सुआद पता करत ह।

4तउ आवा इ परिस्थिति क परखा अउर खुद फइसला करा कि उचित का बाटइ। हम संग संग सीखब कि का खरा बाटइ।

5अय्यूब कहेस: 'मई निर्दोख हउँ; मुला परमेस्सर मोरे बरे निस्पच्छ नहीं अहइ।

6मई निरीह अहउँ मुला लोग सोचत हीं कि मई बुरा अहउँ। उ पचे सोचत हीं कि मई एक झूठा हउँ अउर चाहे मई निर्दोख भी होउँ फुन भी मोर घाव नहीं भरि सकत।'

7अय्यूब क नाई कउनो भी मनई नहीं अहइ जेकर मुँह परमेस्सर क निन्दा स भरा रहत ह। अय्यूब बरे परमेस्सर क बेज्जती करइ में आसानी स पानी क पीवइ जइसा अहइ।

8अय्यूब बुरे लोगन क साथी अहइ अउर अय्यूब क बुरे लोगन क संगत भावत ह।

9काहेकि अय्यूब कहत ह 'अगर कउनो मनई परमेस्सर क हुकुम मानइ क जतन करत ह तउ एहसे उ मनई क कछू भी भला न होइ।

10"अरे ओ लोगो जउन समुझ सकत हवा, तउ मोर बात सुना, परमेस्सर कबहुँ भी बुरा नहीं करत ह। सर्वसक्तीमान परमेस्सर कबहुँ भी बुरा नहीं करी।

11परमेस्सर मनई क ओकर कीन्ह करमन क फल देइ। उ मनइयन क जउन मिलइ चाही, देइ।

12उ फुरइ अहइ परमेस्सर कबहुँ बुरा कारज नहीं करत ह। सर्वसक्तीसाली परमेस्सर सदा निस्पच्छ रही।

13कउनो इनसान ओका धरती क प्रभारी नहीं बनाएस। कउनो भी मनई ओका इ समूचइ जगत क जिम्मेदारी नहीं दिहस।

14अगर परमेस्सर ठान लेत तउ उ लोगन स जिन्गी क साँस लइ लेत ह।

15तउ धरती क सबहिं मनई मर जातेन, फिन सबहिं लोग माटी बन जातेन।

16"अगर तू पचे विवेकी अहा तउ तू पचे ओका सुनब्या जेका मई कहत हउँ।

17अइसा कउनो मनई जउन निआउ स घिना राखत ह सासक नहीं बन सकत ह। अय्यूब, का तू सोचत अहा कि तू परमेस्सर क दोखी साबित कइ सकत अहइ?

18सिरिफ परमेस्सर अइसा अहइ जउन राजा लोगन स कहत रहत ह कि 'तू पचे बेकार अहइ।' परमेस्सर नेता लोगन स कहत रहत ह कि 'तू पचे दुस्ट अहा।'

19परमेस्सर प्रमुखन स दूसर मनइयन क अपेच्छा अधिक पिरेम नहीं करत, अउर परमेस्सर धन्नासेठन क अपेच्छा गरीबन स जियादा पिरेम नहीं करत ह। काहेकि सबहिं क परमेस्सर रचेस ह।

20 होइ सकत ह रात में अचानक कउनो मनई मरि जाइ। परमेस्सर बहोत जल्दी ही लोगन क रोगी करत ह अउर उ पचे प्राण तउ देत हीं। परमेस्सर बगइर कउनो जतन क सक्तीसाली लोगन क उठाइ लइ जात ह।

21 मनई जउन करत ह परमेस्सर ओका देखत ह। मनई जउन भी चरण उठावत ह परमेस्सर ओका जानत ह।

22 कउनो जगहिया अइसी अँधियारा नाहीं अहइ, चाहे उ जगह कइसा भी अँधियारा होइ, जेह में कि कउनो भी दुस्ट मनई अपने क परमेस्सर स छुपाइ पावइस।

23 कउनो मनई बरे इ उचित नाहीं कि उ परमेस्सर स निआउ क अदालत में मिलइ क समइ निहचित करइ।

24 परमेस्सर क प्रस्नन क पूछइ क जरुरत नाहीं, मुला परमेस्सर बरिआरन क नस्ट करी अउर ओनकर जगह पइ कउनो अउर क बइठाई।

25 तउ परमेस्सर जानत ह कि लोग का कर हीं। एह बरे परमेस्सर राति में दुस्टन क हरई, अउर ओनका नस्ट कइ देइ।

26 परमेस्सर बुरे लोगन क ओनके बुरे करमन क कारण नस्ट कइ देइ अउर बुरे मनई क सजा क उ सब लखइ देइ।

27 काहेकि बुरे लोग परमेस्सर क आग्या मानइ क तजि दिहेन अउर उ पचे बुरे लोग परवाह नाहीं करत हीं ओन कामन क करइ क जेनका परमेस्सर चाहत ह।

28 ओन बुरे लोग गरीबन क दुःख दिहेन अउर ओनका मजबूर किहेन परमेस्सर क मदद बरे गोहरावइ क। गरीब मदद बरे गोहरावत ह, तउ परमेस्सर ओकर सुनत ह।

29 जब परमेस्सर खामोस रही क फइसला करत ह तउ कउनो मनई परमेस्सर क दोखी नाहीं ठहराइ सकत ह। अगर परमेस्सर आपना मुख छिपा लेत ह तउ कउनो भी रास्ट्र या कउनो मनई ओका नाहीं पाइ सकत ह।

30 तउ फुन एक तु अइसा मनई अहइ जउन परमेस्सर क खिलाफ अहइ अउर लोगन पइ जुलम करत ह। तउ परमेस्सर ओका राजा बनइ नाहीं दइ सकत ह।

31 होइ सकत ह कि कउनो परमेस्सर स कहइ, 'मई अपराधी हउँ अउर फुन मई पाप नाहीं करब।

32 हे परमेस्सर, तू मोका उ सबइ बातन सिखावा जउन मई नाहीं जानत हउँ। अगर मई कछू बुरा किहेउँ तउ फुन, मई ओका नाहीं करबउँ।'

33 मुला अथर्व, जब तू बदलइ क मना करत अहा, तउ का परमेस्सर तोहका वइसा प्रतिफल देइ, जइसा तू चाहत अहा? इ तोहार फइसला अहइ इ मोर नाहीं अहइ। तू ही बतावा कि तू का सोचत अहा?

34 कउनो भी मनई जेहमाँ विवेक अहइ अउर जउन समझत ह उ मोरे संग सहमत होइ। कउनो भी विवेकवाला मनई जउन मोर सुनत, उ कही,

35 'अथर्व, अबोध मनई क जइसी बातन करत अहा, जउन बातन अथर्व करत ह ओनमाँ कउनो सच्चाई नाहीं।'

36 मोर इ इच्छा अहइ कि अथर्व क परखइ क अउर भी जियादा कस्ट दीन्ह जाई। काहेकि अथर्व हमका अइसा जवाब देत ह, जइसा कउनो दुस्ट मनई जवाब देत होइ।

37 अथर्व पाप पइ पाप किए जात ह अउर ओह पइ उ बगावत किहेस। तोहरे ही समन्वा उ परमेस्सर क खिलाफ बहोत सारे इलाजाम लगावत रहत ह।"

35 एलीहू कहत चला गवा। उ बोल।
2 "अथर्व, इ तोहरे बरे कहब उचित नाहीं कि "मई अथर्व, परमेस्सर क खिलाफ निआउ पइ हउँ।"

3 अथर्व, तू परमेस्सर स पूछत अहा, 'मनई परमेस्सर क खुस कइके का पाई? अगर मई पाप न करउँ तउ मोका का फायदा होइ?'

4 अथर्व, मई तोहका अउ तोहरे मीतन क जउन हिआँ तोहरे संग अहइ जवाब देइ चाहत हउँ।

5 अथर्व! ऊपर लख अकासे में निगाह उठाइके कि बादर तोहसे जियादा ऊँचा अहइँ।

6 अथर्व, अगर तू पाप करा तउ परमेस्सर का कछू नाहीं बिगड़त, अउर अगर तोहार पाप बहोत होइ जाई तउ ओहसे परमेस्सर क कछू नाहीं बिगड़त।

7 अथर्व, अगर तू भला अहा तउ एहसे परमेस्सर क भला नाहीं होत, तोहसे परमेस्सर क कछू नाहीं मिलत।

8 अथर्व, तोहार पाप खुद तोहरे जइसे मनई क नोस्कान पहुँचावत ही, तोहार नीक करम बस तोहरे जइसे मनई क ही भला करत हीं।

9 अगर बुरे मनइयन क संग अनिआउ होत ह अउर बुरा बेउहार कीन्ह जात ह, तउ उ पचे मदद क पुकारत हीं, उ पचे बड़के बड़के बरिआर क मदद पावइ क दोहाइ देत हीं।

10 मुला बुरे मनइयन परमेस्सर स मदद नाहीं माँगतेन। उ पचे नाहीं कहत हीं, 'परमेस्सर जउन हमका रचेस ह उ कहीं बा? परमेस्सर हम लोगन क रात में गावइ बरे गीत देत ह।

11 उ बुरे मनइयन इ नाहीं कहा करतेन कि, 'परमेस्सर जउन गोरु अउ चिरइयन स जियादा बुद्धिमान मनई क बनाएस ह उ कहीं बा?'

12 अगर बुरे लोग परमेस्सर क मदद पावइ क दुहाइ देत हीं तउ परमेस्सर ओनका जवाब नाहीं देत ह। काहेकि उ पचे बहोत घमंडी अउर बुरा होत हीं।

13 इ सच अहइ कि परमेस्सर ओनकर बेकार क दुहाई क नाहीं सुनी। सर्वसवतीमान परमेस्सर ओनेँ पइ धियान नाहीं देत।

14 अथर्व, इहइ तरह जब तू परमेस्सर क समन्वा आपन मामला पइ बहस कइ बरे इन्तजार करत ह, अउर अगर तू सिकायत करत ह कि उ तोहरे समन्वा प्रकट नाहीं होएह, तउ परमेस्सर तोहका जवाब नाहीं देब्या।

15 अथर्व, तू सोचत अहा कि परमेस्सर दुस्टन क सजा नाहीं देत ह अउर परमेस्सर पाप पइ धियान नाहीं देत ह।

16 एह बरे अथर्व आपन बेकार क बातन करत रहत ह। अथर्व बहोत बोलतह मुला उ नाहीं जानत कि उ का कहत रहत ह।"

36 एलीहू बात जारी राखत भए कहेस।
2 "अथर्व, मोरे संग तनिक देर अउर धीरा धरा। मई तोहका देखौँउब कि परमेस्सर क पच्छ में अबहिँ कहइ क अउर अहइ।"

3मई आपन गियान क सब स बाँटब। मोका परमेस्सर रचेस ह। मई जउन कछू भी जानत हउँ मई ओकर प्रयोग तोहका इ देखौवइ बरे करब कि परमेस्सर निस्पच्छ अहइ।

4अय्यूब, मई तोहका फुरइ कहत हउँ कि मई झूट नाहीं कहत हउँ। मई जानत कि मई का बात करत हउँ।

5परमेस्सर महान अहइ मुला उ आम लोगन क तुच्छ नाहीं समुझत ह। परमेस्सर बहोत सामर्थी बाटइ अउ विवेक स पूर्ण बाटइ।

6परमेस्सर दुट्ठ लोगन क जिअइ नाहीं देइ अउर परमेस्सर हमेसा गरीब लोगन क संग खरा बेउहार करत ह।

7उ सबइ लोग जउन मुनासिब बेउहार करत हीं, परमेस्सर ओनकर धियान राखत ह। उ राजा लोगन क संग ओनका सिंहासन देत ह अउर उ पचे सदा आदर पावत हीं।

8मुला अगर लोग सजा पावत होई अउर अउर बेड़ियन मँ जकरि गवा होई। अगर उ पचे पीरा भोगत रहत होई अउर संकटे मँ होई।

9तउ परमेस्सर ओनका बताई कि उ पचे कउन सा बुग करम किहेन ह। परमेस्सर ओनका बताई कि उ पचे पाप किहेन ह अउर उ पचे अहंकारी रहेन।

10परमेस्सर ओनका ओकर चिताउनी सुनइ क मजबूर करी। उ ओनका पाप करइ स रोकइ खातिर आदेस देइ।

11जदि लोग परमेस्सर क सुनिहीं अउर ओकर अनुसरण करिहीं तउ परमेस्सर ओनका खुसहाल दिन आनन्दित बरिस देब्या।

12मुला अगर उ पचे परमेस्सर क आग्या क नकारिहीं तउ उ पचे बिना जाने ही मउत क दुनिया मँ चला जइहीं।

13अइसे लोग जेनका परमेस्सर क परवाह नाहीं अहइ उ पचे सदा कडुवाहट स भरा रहत हीं। हिओँ तलक कि जब परमेस्सर ओनका सजा देत ह, उ पचे परमेस्सर स सहाय पावइ क विनती नाहीं करतेन।

14अइसे लोग जवान होत ही मरि जइहीं। उ पचे भ्रस्ट लोगन क संग सर्प स मरिहीं।

15मुला परमेस्सर दुखित लोगन क बचाव। परमेस्सर लोगन क जगावइ बरे विपत्ति पठवत ह ताकि लोग ओकर सुनईं।

16सचमुच मँ परमेस्सर तोहार दुख-मुसीबत मँ तोहार मदद करइ चाहत ह। उ तोहार बोझन क दूर करइ चाहत ह जउन तोहका कुचरत ह। उ तोहार मेजे पइ भरपूर खइया रखइ चाहत ह।

17किन्तु तू दोख, निर्णय अउर निआव क बातन स भरा भवा अहा!

18अय्यूब, तू आपन किरोध क परमेस्सर बरे संका क कारण जिन बना द्या। मुक्ति क बडा मूल्य तोहका राह स दूर भटकावइ क कारण जिन बना द्या।

19तू इ जान ल्या कि न तउ अब तोहार समूचा धन अउर न ही तोहार सक्ती तोहार मदद कइ सकत ह।

20तू राति क अवाई क इच्छा जिन करा। जब लोग आपन ठउरन स गाइब हो जात ह।

21अय्यूब, बुरा करम करइ स तू होसियार रहा। तोह पइ मुसीबतन पठइ गइ अहई ताकि तू पापे क ग्रहण न करा।

22लखा, परमेस्सर क सक्ती ओका महान बनावत ह। परमेस्सर सबहिं स महानतम सिच्छक अहइ।

23कउनो भी मनई परमेस्सर स नाहीं कह सकत ह कि का करब। कउनो भी परमेस्सर स नाहीं कहि सकत, 'परमेस्सर तू बुरा किहा ह।'

24परमेस्सर क कर्मन क बड़कइ करब तू जिन बिसरा। लोग गीत गाइके परमेस्सर क सबइ काम क बड़कइ किहेन ह।

25परमेस्सर क करम क हर कउनो मनई लखि सकत ह। दूर देसन क लोग ओन कर्मन क लखि सकत हीं।

26इ फुरइ अहइ कि परमेस्सर महान अहइ। ओकरी महिमा क हम नाहीं समुझ सकित ह। परमेस्सर क उमर क बरिसन क गनती क कउनो गन नाहीं सकत।

27परमेस्सर पानी क धरती स ऊपर उठावत ह अउर ओका बर्खा अउ कुहरा क रूप मँ बदल देत ह।

28परमेस्सर बादरन स लोगन पइ भरपूर पानी बरसावत ह।

29का कउनो मनइ इ ब्यान कइ सकत ह कि परमेस्सर कइसे बादरन क फैलावत ह, या ओकर घर, आकास मँ बिजुरि क गरज क समझ सकत ह?

30लखा, परमेस्सर कइसे आपन बिजुरी क अकासे मँ चारिहूँ कइँती बिखेरत ह अउर कइसे समुझदर क गहिरे हींसा क ढँपि लेत ह।

31परमेस्सर रास्टून क नियंत्रण मँ रखइ अउर ओनका भरपूर भोजन देइ बरे एन बादरन क उपयोग करत ह।

32परमेस्सर आपन हाथे स बिजुरी क पकरि लेत ह अउर जहाँ, उ चाहत ह, हुओँ बिजुरी क गिरइ क हुकुम देत ह।

33गर्जन लोगन क तूफाने क अवाई क चिताउनी देत ह। इ गर्जन दिखावत ह कि इ दुस्टता क खिलाफ किरोध मँ अहइ।

37 "हे अय्यूब, जब एँन बातन क बारे मँ मई सोचत हउँ, मोर हिरदइ बड़े जोर स धक धक करत ह।

2हर कउनो सुनइ, परमेस्सर क वाणी बादर क गर्जन जइसी सुनाई देत ह। अनका गरजत भी ध्वनि क जउन परमेस्सर क मुँह स आवति अहइ।

3परमेस्सर आपन बिजुरी क सारे अकासे स होइके चमकइ क पठवत ह। उ सारी धरती क ऊपर चमका करत ह।

4बिजुरी क कौंधइ क पाछे परमेस्सर क गर्जन भरी वाणी क सुना जाइ सकत ह। परमेस्सर आपन अद्भुत वाणी क संग गरजत ह। जब परमेस्सर क वाणी गरजत ह तउ बिजुरी कौंधत ह तब।

5परमेस्सर क गरजत भइ वाणी अद्भुत अहइ। उ अइसे बड़े करम करत ह, जेनका हम समुझ नाहीं पावत अही।

6परमेस्सर बर्फ क हुकुम देत ह, 'तू धरती पइ गिरा' अउर परमेस्सर बर्खा स कहत ह 'तू धरती पइ जोर स बरसा।'

7परमेस्सर अइसा एह बरे कहत ह कि सबहिं मनई जेनका उ बनाएस ह जान लेइ कि उ का कइ सकत ह। उ ओकर प्रमाण अहइ।

8पसु आपन खोहन में पराइ जात हीं, अउर हुआँ ठहरा रहत हीं।

9ओनका कमरन स आँधी आवत हीं, अउ हवा सर्दि मोसम लियावत ह।

10परमेस्सर क साँस बर्फ बनवत ह, अउर समुद्दरन क जमाइ देत ह।

11परमेस्सर बादरन क जल स भरा करत ह, अउ बिजुरी क बादर क जरिये बिखेर देत ह।

12परमेस्सर बादरन क चारिहूँ कइँती मोड़ देत ह ताकि उ पचे उहइ कइ सकइ जेका उ ओनका करइ क हुकुम दिहेस ह उ पचे पुरी धरती पइ छाइ जात ह।

13परमेस्सर लोगन क सजा देइ बरे कबहुँ बाढ़ लिआवत ह। कबहुँ आपन सहानुभूती देखावइ बरे बादरन क पठवत ह अउर धरती पइ पानी बरसावत ह।

14अय्यूब, तू छिन बरे रुका अउ सुना। रुक जा अउ सोचा ओन अद्भुत कारजन क बारे में जेनका परमेस्सर किया करत ह।

15अय्यूब, का तू जानत अहा कि परमेस्सर बादरन पइ कइसे काबू राखत ह? का तू जानत ह कि परमेस्सर आपन बिजुरी क काहे चमकावत ह?

16का तू जानत ह कि आकास में बादर कइसे लटका रहत हीं। इ सबइ बादरन एक तु उदाहरण अहइँ। परमेस्सर क गियान संपूर्ण अहइ अउर इ सबइ बादर परमेस्सर क अद्भुत कारज अहइँ।

17मुला अय्यूब, तू इ सबइ बातन क नाहीं जानत ह। तू बस एँतना जानत अहा कि तोहका पसीना आवत ह अउर तोहार ओढ़ना तोहसे चिपका रहत हीं जब सब कछू आराम करत रहत होत ह अउर दक्खिन स गरम हवा बहत ह।

18अय्यूब, का तू परमेस्सर क मदद आकस मण्डल क तानइ में अउर ओका झलकत भए दर्पण क नाई चमकावइ में कइ सकत अहा?

19अय्यूब, हमका बतावा कि हम परमेस्सर स का कही? हम ओसे कछू भी कहइ क सोच नाहीं पाइत काहेकि हम पर्याप्त कछू भी नाहीं जानित।

20का परमेस्सर क बतावा जाइ कि मई ओकरे खिलाफ बोलइ चाहत हउँ। इ वइसे ही होइ जइसे आपन विनास माँगव।

21लखा, कउनो भी मनई चमकत भए सूरज क नाहीं लख सकत ह। जब हवा बादरन क उड़ाइ देत ह ओकरे पाछे उ बहोतइ उज्जवर अउ चमचमात भवा होत ह।

22अउ परमेस्सर भी ओकरे समान अहइ। परमेस्सर क सुनहरी महिमा चमकत ह। परमेस्सर अद्भुत महिमा क संग उत्तर कइँती स आवत ह।

23सर्वसक्तीमान परमेस्सर सचमुच महान अहइ, हम परमेस्सर क नाहीं जान सकित। परमेस्सर सदा ही लोगन क संग निआउ, अउ निस्पच्छ होइके बेउहार करत ह। उ कउनो लोग क संग ना इन्साफी क संग पीड़ा नाहीं देत ह। 24एह बरे लोग परमेस्सर क आदर करत हीं, मुला परमेस्सर ओन अभिमानी लोगन क आदर नाहीं देत ह जउन खुद क बुद्धिमान समुझत हीं।”

परमेस्सर अय्यूब स बोलत ह

38 फिन यहोवा बौडर में स अय्यूब क जवाब दिहस। परमेस्सर कहेस।

2“इ कउन मनई अहइ जउन मूर्खता स भरी भइ बातन करत अहइ?”

3अय्यूब, तू मनई क तरह सुदृढ़ बना। जउन सवात मई पूछउँ ओकर जवाब देइ क तइयार होइ जा।

4अय्यूब, बतावा तू कहाँ रहया, जब मई भुइँया क रचना किहे रहेउँ? अगर तू एँतना समुझदार अहा तउ मोका जवाब दया।

5अय्यूब, अगर तू एँतना हाज़िर जवाब अहा तउ मोका बता कि इ संसारे क विस्तार कउन तय किहेस? कउन इ संसार क नापइ वाला सूत स नापेस?

6इ पृथ्वी क नीव काहे पइ धरी गइ अहइ? कउन पृथ्वी क नीव क रुप में सवन त जियादा महत्व क पाथर क धरेस ह?

7जब परमेस्सर अइसा करत रहेन तउ भोर क तारन एक संग खुस होइके गाना गाएन। अउर सरगदूतन खुस होइके चिल्ला उठेन।

8अय्यूब, जब सागर धरती क गरम स फूट बहत निकर, तउ कउन ओका रोकइ बरे दुआर क बँद किहे रहा।

9उ समइ मई बादरन स समुद्दर क ढाँपि दिहेउँ अउ अँधियारा में सागर क लपेट दिहे रहेउँ (जइसे गदेली क चादर में लपेटा जात ह।)

10“सागर क चउहद्दी मई निहचित किहे रहेउँ अउर ओहमाँ ताला डाइके दुआरन क पाछे रख दिहे रहेउँ।

11मई समुद्दरे स कहेउँ, ‘तू हिआँ तलक आइ सकत ह मुला अउर जियादा आगो नाहीं। तोहार घमण्डी लहरन हिआँ पइ रुकि जइहीं।’

12अय्यूब, का तू कबहुँ आपन जिन्नगी में भोर क हुकुम दिहा ह निकरि आवइ अउर दिन क सुरु करइ क?

13अय्यूब, का तू कबहुँ भिन्सारे क प्रकास क धरती पइ छाइ जाइ क कहया ह अउर का कबहुँ ओहसे दुस्टन क लुकाइ क जगाहिया क तजि देइ क मजबूर करइ क कहया ह?

14जब भिन्सारे क प्रकास धरती पइ पड़त ह तउ धरती क रूप व आकृति अइसा प्रगट होत ह जइसे नरम मिट्टी क मुहर स दबाइ स होत ह। एकर रूप रेखा ओढ़नन क सलवटन क नाई उभरत ह।

15दुदूठ लोगन स प्रकास लइ लीन्हा गवा ह। नीक अउर ओन बाजूअन क जउन कि उ पचे बुरा करम करइ बरे उठाएस तोड़ दीन्हा ग रहेन।

16अय्यूब, बतावा का तू कबहुँ सागर क गहिर तहे में गवा अहा जहाँ स सुरु होत ह? का तू कबहुँ सागर क स्त्रितों पइ चला अहा?

17अय्यूब, का तू कबहुँ उ फाटकन क लख्या ह, जउन मउते क लोक क लइ जात हीं? का तू कबहुँ ओन फाटकन क लख्या जउन मउत क अँधियर जगह क लइ जात हीं?

18अय्यूब, तू जानत अहा कि इ धरती केतनी बड़ी अहइ? तू मोका बतावा अउर तू इ सब कछू जानत अहा।

19अय्यूब, प्रकास कहीं स आवत अहइ? अउर अँधियारा कहा स आवत ह?

20अय्यूब, का तू प्रकास अउ अँधियारा क अइसी जगह लइ जाइ सकत ह जहाँ स उ सबइ आए होई? जहाँ उ सबइ रहत हीं हुअँ पइ जाइ क मारग का तू जानत अहा?

21अय्यूब, मोका निहचय अहइ कि तोहका सारी बातन मालूम अहई काहेकि तू बहोत ही बूढ़ा अहा। जब वस्तुअन क रचना भइ रही तब तू हुअँ रहया।

22अय्यूब, का तू कबहुँ ओन भण्डार क कोठरियन में गना अहा जहाँ मई बरफ अउ ओलन क धरा करत हउँ?

23मई बरफ अउ ओलन क विपत्ति क समइ में अउ जुद्ध अउर लड़ाई क समइ में उपयोग करइ बरे बचाए रखत हउँ।

24अय्यूब, का तू कबहुँ अइसी जगह गवा अहा, जहाँ स सूरज उगत ह अउ जहाँ स पुरवइया सारी धरती पइ छाइ जाइ बरे आवत ह?

25अय्यूब, भारी बर्खा बरे अकास में कउन नहर खोदेस ह, अउर कउन गरजनवाले बिजली क रस्ता बनाएस ह?

26अय्यूब, कउन हुअँ भी पानी बरसाएस, जहाँ कउनो भी नाही रहत ह?

27उ बर्खा उ खानी भुइँया क खूब देर क पानी देत ह अउ घास जामब सुरु होइ जात ह।

28अय्यूब, का बर्खा क कउनो बाप अहइ? ओस क बँदन क कउन बनावत अहइ?

29अय्यूब, बरफ क महतारी कउन अहइ? आकास क पाला क कउन पइदा करत ह?

30पानी जमिके चट्टान जइसा कठोर बन जात ह, अउर सागर क ऊपर क सतह जम जावा करत ह।

31अय्यूब, सप्तर्षि तारन क का तू बाँध सकत ह? का तू मिरगसरा का बन्धन खोल सकत ह?

32अय्यूब, का तू तारा समूहन (कहकसौँ) क ठीक वेला पइ निकार सकत ह? का तू भालू क ओकरे बच्चन क संग अगुअइ कइ सकत ह?

33का तू ओन नेमन क जानत ह, जउन नभ पइ सासन करत हीं? का तू ओन नेमन क धरती पइ लागू कइ सकत ह?

34अय्यूब, का तू गोहराइके बादरन क आदेस दइ सकत ह, कि उ पचे भारी बर्खा क साथ घेरि लेईं।

35अय्यूब बतावा, का तू बिजुली क जहाँ चाहत्या पठइ सकत अहा? अउर का तोहरे निअरे आइके बिजुरी कही अय्यूब, 'हम हिअँ अही बतावा तू का चाहत ह?'

36मनई क मन में विवेक क कउन रखत ह? लोगन क चिजियन क समझइ बरे छमता कउन देत ह?

37अय्यूब, कउन आपन बुद्धि स बादरन क गनेस ह? कउन आकास क पानी क चाम थैले क उंडेल सकत ह?

38बर्खा धूरि क कीचंड बनाइ देत ह अउर माटी क लौँद आपुस में चिपक जात हीं।

39अय्यूब, का तू सिंह क आहार पाइ सकत ह? का तू मुखान सेसी क बच्चन क पेट भरि सकत ह?

40उ सबइ सेर आपन खोहन में पड़ा रहत हीं अउर सिकार बरे झाड़ी में दुबक क घात लगनवइ बरे बइठा रहत हीं।

41अय्यूब, कउआ क कबेला चारा पाए बगइर एहर ओहर भटकत भए परमेस्सर क दुहाइ देत हीं। कउन ओनका चारा देत ह?

39 "अय्यूब, का तू जानत अहा कि कब पहाड़ी बोकरियन बियात हीं? का तू कबहुँ लख्या जब हिरणी बियात ह?

2अय्यूब, का तू जानत ह पहाड़ी बोकरियन अउ महतारी हरिणियन केतनी महीने आपन बच्चन क गर्भ में राखत हीं? का तोहका पता अहइ कि ओनकर बियाइ क उचित समइ का अहइ?

3का तू जानत ह क उ पचे बच्चा क जनम दइ बरे कब झुकत ह। का तू जानत ह कि उ पचे आपन बच्चन क कब जनम देत ह।

4पहाड़ी बोकरियन अउर हरिणी महतारी क बच्चन खेतन में हट्टा कट्टा होइ जात हीं। फुन उ पचे आपन महतारी क तजि देत हीं, अउर फुन लउटिके वापस नाही अउतेन।

5अय्यूब, जंगली गदहन क कउन अजाद छोड़ देत ह? कउन ओनकर रस्सन क खोलेस अउर ओनका बन्धन स अजाद किहस?

6इ मई परमेस्सर हउँ जउन बनेर गदहा क घर क रुप में रेगिस्तान दिहेउँ। मई ओनका रहइ बरे उजाड़ धरती दिहेउँ।

7बनेर गदहा सोर स भरा भवा सहसन क लगे नाही जात ह अउर कउनो भी मनई ओका काम करवावइ बरे नाही साधत ह।

8बनेर गदहन पहाड़न में घूमत हीं अउर उ पचे हुअँइ घास चरत रहत हीं। उ पचे हुअँइ पर हरिअर घास चरइ क हेरत रहत हीं।

9अय्यूब, बतावा, का कउनो जंगली सौँइ तोहरी सेवा बरे राजी होइ? का उ तोहरे चरही में राति क रुकी?

10अय्यूब, का तू जंगली बर्धा पइ जुआ रख कइ आपन खेत जोतँवाइ सकत ह? का घाटी क तोहरे वास्ते जोतँइ बरे उ पचन पइ जुआ रखइ जाब्या?

11जंगली सौँइ बहोत मजबूत होत ह। मुला का तू आपन काम करइ बरे ओन पइ भरोसा कइ सकत ह?

12का तू ओह पइ भरोसा कइ सकत ह कि उ तोहार अनाज बटोरइ अउर ओका दौँवइ मँइइ* क खरिहाने में लिआवइ।

13सुतुरमुर्गा जब खुस होत ह उ आपन पंख फड़फड़ावत ह। मुला ओकर पंख सारस क पंख जइसे नाही होतेन।

14मादा सुतुरमुर्गा धरती पइ अण्डा देत ह। सबइ अण्डा रेत में गरम होइ जात ह।

दौँवइ मँइइ खेले क काठे क पाछे झुरान दाना ओर पउथा क खरिहाने में लिआवइ क बाद दाना क धिलका स अलग कीन्ह जात ह। पिटना सा या बर्धा क वैर्था क मँइइ अउ दौँवइ कीन्ह जात ह।

15मुला सुतुरमुर्ग बिसरि जात ह कि कउनो ओकरे अण्डन पइ चलिके कुचर सकत ह, या कउनो बनेर पसु ओनका तोड़ सकत ह।

16मादा सुतुरमुर्ग आपन नान्ह बच्चन पइ कठोर होइ जात ह जइसे उ पचे ओकर बच्चन नाहीं अहई। अगर ओकर बच्चन मरि भी जाई तउ भी ओका चिन्ता नाहीं होत ह, अउर ओकर सब काम अकारथ होत ह।

17परमेस्सर सुतुरमुर्ग क विवेक नाहिं दिहस, अउर उ ओका कउनो समझवारी नाहीं दिहस ह।

18मुला जब सुतुरमुर्ग दउड़इ क उठत ह तब उ घोड़न अउ ओकरे सवार पइ हँसत ह।

19अभ्युब, बतावा का तू घोड़न क बल दिहा अउर का तू ही ओकर गटई पइ फहराती अयाल जमाया ह?

20अभ्युब, बतावा जइसे टिड्डी कूद जात ह का तू वइसे घोड़ा क कुदाया ह? घोड़ा ऊँची अवाजे में हिनहिनात ह अउर लोग डेराइ जात हीं।

21घोड़ा घुस अहइ कि उ बहोत बलवान बाटइ अउर आपन खुरे स धरती क खनत रहत ह। जुद्ध में जात भवा घोड़ा तेज दौड़ जात ह।

22घोड़ा डरे क हँसी उड़ावत ह काहेकि उ कबहुँ नाहीं डेरत। घोड़ा कबहुँ भी जुद्ध स मुँह नाहीं मोड़त ह।

23घोड़ा क बगल में तरकस थिरकत रहत हीं। घोड़सवारन क भालन अउ हथियार धूपे में चमचमात रहत हीं।

24घोड़ा बहोत उत्तेजित अहइ, मैदान पइ उ तेज चाल स दउड़त ह। घोड़ा जब बिगुल क आवाज सुनत ह तब उ सान्त खड़ा नाहीं रहि सकत।

25बिगुल क ध्वनी पइ घोड़ा हिन हिनावत ह। उ बहोत ही दूर स जुद्ध क सूँघ लेत ह। उ सेना क सनापती क आदेस अउर जुद्धा क हाहाकार अउ जयजकार क सुन लेत ह।

26अभ्युब, का तू बाज क सिखाया आपन पखनन क फइलाउब अउर दक्खिन कइँती उड़ि जाब।

27अभ्युब, का तू उकाब क उड़इ क अउर ऊँच पहाड़न में आपन झोंझ बनावइ क आग्या देत ह?

28उकाब चट्टाने पइ रहा करत ह। ओकर किला चट्टान होत ह।

29उकाब किला स आपन सिकार पइ निगाह राखत ह। उ बहोत दूर स आपन सिकार क लिख लेत ह।

30गिद्ध क बच्चन लहू चाटा करत हीं। जहाँ भी लहासन पड़ा होत हीं हुवाँ गिद्ध बटुर जात हीं।”

40 यहोवा अभ्युब स कहत ह:

2“अभ्युब तू सर्वसक्तीमान परमेस्सर स तर्क किहा। तू मोर निन्दा किहस। अब तोहका जवाब दइ चाही।”

3एह पइ अभ्युब जवाब देत भए परमेस्सर स कहेस:

4“मई तउ कछू कहइ बरे बहोत ही तुच्छ हउँ। मई तोहसे का कहि सकत हउँ? मई आपन हाथ आपन मुँहे पइ रख लेब।

5मई एक दाई कहेउँ मुला अब मई जवाब नाहीं देबउँ। फुन मई दुबारा कहेउँ मुला अब अउर कछू नाहीं बोलब।”

6एकरे पाछे यहोवा आँधी में बोलत भए अभ्युब स कहेस।

7अभ्युब, तू मनई क तरह तइयार होइ ज। मई तोहसे कछू सवाल पूँछब अउर तू ओन सवालन क जवाब मोका देब्या।

8अभ्युब का तू सोचत अहा कि मई निआउ स पूरा नाहीं हउँ। का तू मोका बुरा काम करइ क दोखी मानत अहा ताकि तू इ देखौँइ सका कि तू उचित अहा?

9अभ्युब, बतावा का मोर सस्त्र एँतना सक्तीसाली अहई जेतना कि मोर (परमेस्सर) सस्त्र अहई!/? का तू आपन वाणी क ओतना ऊँच गरजिके बोल सकत ह जेतना मोर वाणी अहइ!/?

10अगर तू वइसा कइ सकत ह तउ तू खुद क आदर अउर महिमा द्या अउ ओढ़ना क तरह वफादारी क सान क ओढ़ ल्या।

11अभ्युब, अगर तू मोरे समान अहा, तउ अभिमानी लोगन स घिना करा। अभ्युब, तू ओन अहंकारी लोगन पइ आपन किरोध बरसावा अउ तू ओनका विनम्र बनाइ द्या।

12हाँ, अभ्युब, ओन अहंकारी लोगन क लखा अउर तू ओनका विनम्र बनाइ द्या। ओन दुस्टन क तू कुचर द्या जहाँ भी उ पचे खड़ा होई।

13तू सबहिं घमण्डियन क माटी में गाड़ द्या अउर ओनकइ देहन पइ कफन लपेटिके तू कब्रन में धइ द्या।

14अभ्युब, अगर तू एँन सबइ बातन क कइ सकत ह तउ मई तहार परसंसा लरब काहेकि तू खुद क बचाइ सकत ह।

15अभ्युब, लखा मई उ बहमोथ (जलगजे)* क पैदा किहउँ। अउर उ मई ही ह जउन तोहका बनाएउँ ह। उ बहमोथ उहइ तरह घास खात ह, जइसे गइया घास खात ह।

16बहमोथ क बदन में बहोत ताकत होत ह। ओकरे पेटे क माँसपेसियन बहोत ताकतवर होत हीं।

17बहमोथ क पूँछ मजबूत अइसी होत ह जइसे देवदार क बृच्छ खड़ा रहत ह। ओकरे गोड़े क माँसपेसियन बहोत मजबूत होत हीं।

18बहमोथ क हाड़न काँसा क तरह मजबूत होत हीं, अउर गोड़ ओकरे लोहे क ढूँडन जइसे।

19बहमोथ महानतम पसु अहइ जेका मई बनाएउँ ह। हिआँ तलक कि ओकर सिरजनहार भी ओका लगे तरवार लइ क जात ह।

20बहमोथ ओन घासे क खात ह जउन पहाड़े पइ उपजत ह जहाँ बनेर पसु खेलत हीं।

21बहमोथ कमल क पउधन क नीचे सोवत रहत ह अउ कीचंड में सरकण्डन क आड़ में छुपा रहत ह।

22कमल क पउधन बहमोथ क आपन छाया में छिपावत हीं। उ बेंत क पेड़न क खाले रहत ह, जउन नदी क निचके उगत हीं।

बहमोथ (जलगजे) इ स्पसट नाहीं अहइ कि इ कउन तरह क जानेबर अहइ। होइ सकत ह कि इ दरियाइ घोड़ा अहइ या हाथी।

23 अगर नदी में बाढ़ आइ जाइ तउ भी जलगज परत नार्ही ह। अगइ यरदन नदी भी ओकरे मुँह पइ थपड़ियावइ तउ भी उ डेरत नार्ही ह।

24 बहमोथ क कउनो भी हुक लगाइ क नार्ही पकड़ सकत ह। कउनो भी ओका जाली में नार्ही फँसाइ सकत।

अय्यूब क यहोवा बरे जवाब

41 “अय्यूब, बतावा, का तू लिब्यातान क कउनो मछरी क काँटा स धइ सकत ह? का तू एकर जिभ क रस्सी स बंध सकत ह?

2 अय्यूब, का तू लिब्यातान क नाक में नकेल डाइ सकत ह? या ओकरे जबड़न में काँटा फँसाइ सकत ह?

3 अय्यूब, का तू लिब्यातान क अजाद होइके बरे तोहसे बिनती करी? का उ तोहसे मीठी मीठी बातन करी?

4 अय्यूब, का लिब्यातान तोहसे सन्धि करी अउर सदा तोहरी सेवा क तोहका वचन देइ?

5 अय्यूब, का तू लिब्यातान क वइसे ही खेलब्या जइसे तू कउनो चिड़िया स खेलत ह? का तू ओका रस्सा स बँधब्या जेहसे तोहार दासियन ओहसे खेल सकइँ।

6 अय्यूब, का तू मछुआरा लिब्यातान क तोहसे बेसहइ क कोसिस करिहीं? का उ पचे ओका कटिहीं अउर ओनका बइपारियन क हाथे बेचि सकिहीं?

7 अय्यूब, का तू लिब्यातान क खाल में अउर माथे पइ भाला फेंक हमला कइ सकत ह?

8 अय्यूब, लिब्यातान पइ अगर तू हाथ डवा तउ जउन भयंकर जुद्ध होइ, तू कबहुँ भी बिसारि नार्ही पउब्या अउर फुन तू ओहसे कबहुँ जुद्ध न करब्या।

9 अउर अगर तू सोचत ह कि तू लिब्यातान क पकड़ सकत ह, तउ इ बात क तू भूल जा। काहेकि ओका पकड़इ बरे कउनो आसा नार्ही अहइ। तू तो बस ओका लखइ भर स ही डेराइ जाब्या।

10 कउनो भी एतना वीर नार्ही अहइ, जउन लिब्यातान क जगाइके भइकावइ। तउ फुन अय्यूब बतावा, मोरे विरोध में कउन टिक सकत ह?

11 कउनो भी मनई जउन कि मोहे स मुकाबला करब उ सुउच्छित नार्ही रब्या। सारे अकासे क खाले जउन कछू भी अहइ, उ सब कछू मोर ही अहइ।

12 अय्यूब, मई तोहका लिब्यातान क सकती क बारे में बताउब। मई ओकर सकती अउर ओकरे रुप क सोभा क बारे में बताउब।

13 कउनो भी मनई ओकर बाहरी आवरण(खाल) क भेद नार्ही सकत। ओकर खाल दोहरी कवच क नाई अहइ।

14 लिब्यातान क कउनो भी मनई मुँह खोलइ बरे मजबूर नार्ही कइ सकत ह। ओकरे जबड़े क दाँत सबहि क भयभीत करत हीं।

15 लिब्यातान क पिठिया पइ ढालन क कतार होत हीं, जउन आपुस में स जुड़ी होत हीं।

16 इ सबइ ढालन आपुस में एँतनी सटी होत हीं कि हवा तलक ओहमें प्रवेस नार्ही कइ पावत ह।

17 इ सबइ ढालन एक दूसर स जुड़ी होत हीं। उ सबइ मजबूती स एक दुसरे स जुड़ी भई अहइ कि कउनो भी ओनका उखाड़िके अलग नार्ही कइ सकत।

18 लिब्यातान जब छींकत ह तउ अइसा लागत ह जइसे बिजली सी कौंध गइ होइ। आँखी ओकर अइसी चमकत हीं जइसे कउनो तेज प्रकास होइ।

19 ओकरे मुँहना स बरत भइ मसाल निकरत हीं, अउर ओहसे आगी क चिनगारियन बिखत हीं।

20 लिब्यातान क नथुनन स धुआँ अइसा निकरत ह, जइसे उबलत भइ हँड़ी स भाप निकलत होइ।

21 लिब्यातान क फूँक स कोयला सुलग उठत हीं अउर ओकरे मुँह स लपक निकरत हीं।

22 लिब्यातान क गटई बड़ी जबरदस्त अहइ, अउर लोग ओसे उरिंके दूर पराइ जात हीं।

23 ओकरे खाल में कहीं भी कोमल जगह नार्ही अहइ। उ लोहा क तरह कठोर अहइ।

24 लिब्यातान क हिरदइ चट्टान क तरह होत ह। ओकर हिरदइ चक्की क नीचे क पाट क तरह सख्त अहइ।

25 लिब्यातान स सरगदूत भी डर जात हीं। लिब्यातान जब फूँछ फटकारत ह, तउ ओन सबइ भाग जात हीं।

26 लिब्यातार पइ जइसे ही भालन, तीर अउ तरवार पड़त हीं उ सबइ उछरिंके दूर होइ जात हीं।

27 लोहा क मोटी छड़न क उ तिनका जइसा अउर काँसा क सड़ी लकड़ी क तरह तोड़ देत ह।

28 बाण लिब्यातान क नार्ही भगाइ पावत हीं। ओह पइ पाथर फेंकना, एक सुखा तिन्का फेंकन क नाई अहइ।

29 लिब्यातान पइ जब मुगदर पड़त ह तउ ओका अइसा लागत ह माना उ कउनो बिनका होइ। जब लोग ओह पइ भालन फेंकत हीं, तब उ हँसा करत ह।

30 विब्यातान क पेट क नीचे सिरा टूटा भए मट्टी क बासन क नाई तेज अहइ। जब उ चलत ह तउ कीचड़ में अइसा निसान छोड़त ह माना कि खेतन में हेगा लगावा गवा होइ।

31 लिब्यातान पानी क अइसे मथत ह, माना कउनो हाइन उबलत होई। उ अइसे बुलबुले बनावत ह माना बासन में खउलत भवा तेल होइ।

32 लिब्यातान जब सागर में तैरत ह तउ आपन पीछे उ सफेद झागन जइसी राह छोड़त ह, जइसे कउनो उज्जर बारे क सफेद बिसाल फूँछ होइ।

33 लिब्यातान सा कउनो अउर जन्तु धरती पइ नार्ही अहइ। उ अइसा पसु अहइ जेका निडर बनाव गवा।

34 उ हर एक घमण्डी जानेबर क ऊपर नजर रखत ह। सबहि जंगली पसुअन क उ राजा अहइ।”

अय्यूब क यहोवा क जवाब

42 एँह पइ अय्यूब यहोवा क जवाब देत भए कहेस।
2 “यहोवा, मई जानत हउँ कि तू सब कछू कइ सकत अहा। तू सबइ योजना बनाइ सकत अहा अउर तोहर सबइ योजना क कउनो भी नार्ही बदल सकत अउर न ही ओका रोका जाइ सकत ह।

3यहोवा, तू इ सवाल पूछ्या कि 'इ अबोध मनई कउन अहइ? जउन इ सबइ मूर्खता स भरी बातन कहत अहइ?' यहोवा, मई ओन चीजन क बारे में बातन किहेउँ जेनका मई समझत नाही रहेउँ। यहोवा, मई ओन चीजन क बारे में बातन किहेउँ जउन मोरे समुझ पावइ बरे बहोत अचरज भरी रहिन।

4यहोवा, तू मोसे कह्या, 'हे अय्यूब सुना अउर मई बोलब। मई तोहसे सवाल पूँछब अउर तू मोका जवाब देब्या।'

5यहोवा, बीते भए काल में मई तोहरे बारे में सुने रहेउँ मुला खुद आपन आँखिन स मई तोहका देखि लिहेउँ ह।

6एह बरे अब मई खुद आपन बरे लज्जात हउँ। मई आपन जिन्नगी क राह बदलइ क इच्छा दिखावइ बरे धूर अउर राखी में बैठा करत हउँ।"

यहोवा क अय्यूब क संपत्ति क लउयउब

7यहोवा जब अय्यूब स आपन बात कइ चुका तउ यहोवा तेमान क निवासी एलीपज स कहेस: "मई तोहसे अउर तोहरे दुइनउ दोस्तन स कोहान हउँ काहेकि तू मोरे बारे में उचित बातन नाही कहे रह्या। मुला अय्यूब मोरे बारे में उचित बात कहे रहा। अय्यूब मोर दास अहइ।

8एह बरे अब एलीपज तू सात बर्धा अउर सात ठु भेड़िन लइके मोर दास अय्यूब क लगे जा अउर आपन बरे होमबलि क रुप में ओनकर भेंट चढ़ावा। मोर सेवक अय्यूब तोहरे बरे पराथना करी। तब निहचइ ही मई ओकरी पराथना क जवाब देबउँ। फुन मई तोहका वइसी सजा नाही देब जइसे सजा दीन्ह जाइ चाही रही काहेकि तू बहोतई मूरख रह्या। मोरे बारे में उचित बातन नाही किह्या जबकि मोरे सेवक अय्यूब मोरे बारे में उचित बातन कहे रहा।"

9तउ तेमान क निवासी एलीपज, सूह क निवासी बिल्दद

अउर नामात क निवासी सोपर यहोवा क आग्या क मानेस। एँह पइ यहोवा अय्यूब क पराथना सुन लिहस।

10इ तरह जब अय्यूब आपन मीतन बरे पराथना कइ चुका तउ यहोवा अय्यूब क फुन स कामयाब किहेस। परमेस्सर जेतना ओकरे लगे पहिले रहा, ओहसे भी दुगुना ओका दइ दिहस।

11अय्यूब क सबहिं भाई अउ बहिनियन अय्यूब क घर वापस आइ गएन अउर हर कउनो जउन अय्यूब क पहिले जानत रहा, ओकरे घरे आवा। अय्यूब क संग उ सबइ एक बड़की दावत में खाना खाएन। काहेकि यहोवा अय्यूब क बहोत कस्ट दिहे रहा, एह बरे उ पचे अय्यूब क दिलासा दिहन। ओन में स हर कउनो अय्यूब क सोने क सिक्का अउर सोना क कान क बाली भेंट में दिहस।

12यहोवा अय्यूब क जिन्नगी क पहिले हींसा स भी जियादा ओकरी जिन्नगी क पिछला हींसा क आपन आसीर्वाद दिहस। अय्यूब क लगे चौदह हजार भेड़, छः हजार ऊँट, दो हजार बैल जउर एक हजार गदहिन होइ गइन। 13अय्यूब क सात पूत अउ तीन बितियन भी होइ गइन। 14अय्यूब आपन सब स बड़की बितिया क नाउँ राखेस यामीना। दुसरकी बितिया क नाउँ धेरस कसीआ। अउर तीसरी क नाउँ राखेस केरेन्हप्पूक। 15सारे प्रदेस में अय्यूब क बितियन सब स सुन्नर मेहररुअन रहिन। अय्यूब आपन पूतन क साथ आपन दौलत क एक हींसा आपन बितियन क भी वसीयत में दिहस। 16एकरे पाछे अय्यूब एक सौ चालीस साल तलक अउर जिअत रहा। उ आपन बच्चन, आपन पोतन, आपन परपोतन अउर परपोतन क भी संतानन यानी चार पीढ़ियन क लखइ बरे जिअत रहा। 17जब अय्यूब क मउत भइ, उ समइ उ बहोत बुढ़ान रहा। ओका बहोत नीक अउर लम्बी जिन्नगी प्राप्त भइ रही।